महाभारत



रचयिता

द्वारका प्रसाद

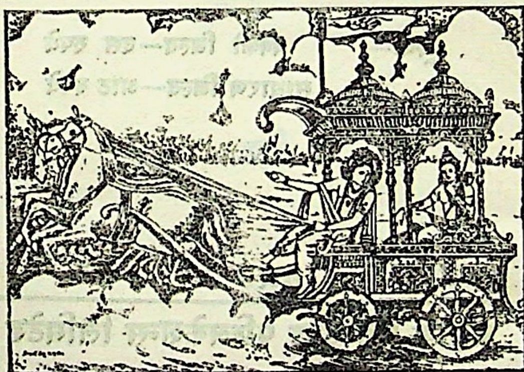
एम० ए०, बी० एल, अधिवक्ता,

अवलोकनार्थ एवं समीक्षार्थ प्रेषित —

रामेश्वर [illegible].

10/5/79.

महाभारत



रचयिता

द्वारका प्रसाद

एम० ए , बी० एल, अधिवक्ता,

मानव प्रकाशन मंदिर
लोहिया नगर, पटना-२०



श्रीमती सुन्दरी देवी

(रचनाकार की माँ)

विषय-सूची



महाभारत: एक सरसरी नजर में

श्री द्वारका प्रसाद की लिखी पुस्तक 'महाभारत' देखी बड़ा हर्ष और विस्मय हुआ। हर्ष इसलिए कि यह मेरे एक शिष्य मित्र की कृति है और अपने गोत्र की कृति देखकर वैसे ही सुख होता है— 'ज्यों बड़रो अँखियाँ निरखि, अँखियन को सुख होत।' और विस्मय इसलिए कि काव्य-रचना द्वारकाजी का पेशा नहीं है बल्कि कहा जा सकता है कि उनका पेशा सामान्यतः काव्य-रचना के प्रतिकूल पड़ता है। हां, अपवाद की बात और है। इस पेशे में रहकर भी कई लोगों की बड़ी महत्वपूर्ण देन काव्य जगत् को रही है।

जैसे इनके छात्र जीवन को वैसे ही इनके अधिवक्ता जीवन को भी फलते फुलते और परवान चढ़ते बहुत निकट से देखने का अवसर मुझे मिला है। मुवक्किलों की फाइलों में उलझे रहने के बावजूद जब बीच-बीच में टेबुल पर ही भड़कनाल पर इनकी ऊँगलियाँ थिरकने लगती थीं और लोकगीत की कोई कड़ी जुबान पर घुनने लगती थी—तभी मुझे लगता था कि एक-न-एक दिन इस पथरीली भूमि की छाती फाड़कर कोई रस का सोता अवश्य फूट निकलेगा यह 'महाभारत' वही सोता है।

महाभारत कितनों के लिए कितना-कितना प्रेरणाप्रद रहा है—बतलाने की आवश्यकता नहीं है। श्री कृष्ण की गीता से लेकर दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' तक इसकी कथा ने पाठकों की भावभूमि को विभिन्न प्रकार से सींचा है। उसके पात्रों ने द्वारकाजी के मनोभाव को जिस सरल और सहज अन्दाज से छुआ है—वह इसके छन्दों में बड़े सहज ढंग से उतर आया है। भाव-प्रवणता में छन्दोभंग की किरकिरी विशेषकर इसलिए नहीं खलती कि इसकी गेयता की माधुरी सारे रूखड़ेपन पर मोहक लेप चढ़ाये रहती है। कुल मिलाकर यह काव्य और पुरान प्रेमियों को समभाव से रुचिकर लगेगी—ऐसा विश्वास है। लेखक की इस प्रथम कृति की मैं हार्दिक सराहना करता हूँ।

रीडर, हिन्दी विभाग — राम बुझावन सिंह

बी॰ एन॰ कॉलिज, पटना-४ — २६ नवम्बर, १९७८.

दो शब्द

महाभारत, जो मूलतः हमारा 'जय-काव्य' है, भारतीय संस्कृति के आधारिक विभावनों का कथात्मक पल्लवन है, यह हमारी संस्कृति का पर्याय ग्रन्थ है—तभी तो यह कहा जाता रहा है कि जो महाभारत में नहीं है, वह भारत में नहीं है—'यन्न भारते तन्न भारते'

ऐसे विशाल और सारभूत ग्रन्थ के मुख्य कथ्य को पुनः काव्य-निबद्ध कर प्रस्तुत करने की चेष्टा एक विधिज्ञ कवि ने की है। कथोत्थ काव्य की रचना इस मानी में आसान होती है कि कथा का सहारा लेकर कवि का काम व्युत्पत्ति और अभ्यास से ही चल जाता है। किंतु, इस प्रकार की कथोत्थ का पुरावृत्त पर आश्रित काव्य की रचना इस मानी में बहुत कठिन होती है कि इसमें नये कवि से अपने प्राक् पुरुष कवियों की तुलना में आगे बढ़ने की अर्थात् 'इतः पूर्व' को मात देने की अपेक्षा की जाती है, जो असाधारण प्रतिभा के धनी कवि द्वारा ही संभव है।

लगता है महाभारत की कथा को संक्षेप में कहना कवि का अभीष्ट है। किंतु, पुनर्कथन में कवि की आस्तिकता, सोद्देश्यता और सदाशयता की जो प्रसंगानुकूल दीप्ति हमें मिलती है, वह कवि के अन्तर्मुख चिंतक और मनुष्य के शुभांशों में आस्थावान होने का द्योतक है। 'आवाहन' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी गई ये पंक्तियाँ कवि की आस्तिकता और आत्म-प्रपत्ति को उजागर करती हैं—

"वैशम्पायन हैं न गणपति आज लेखक हैं,
जन्मेजय कहीं मिलते न नारद दीख पड़ते हैं।
प्रभु बस एक अनुकम्पा तुम्हारी दीख पड़नी है,
मिली जो कृपा पतितों को उसी की आस हम रखते।"

यही आस्तिकता, सम्भवतः, कवि के आशावाद की आधारशिला है। यह जानी और मानी हुई बात है कि आस्तिकता उस आशा की जननी है, जिसकी कोख से विश्वास पैदा होता है। पलायन-विमुख कवि इसी

विश्वास को धरती की ओर उन्मुख किये रहना चाहता है। कवि की पलायन–विमुखता वहाँ पूरी तरह मुखर हो उठी है, जहाँ उसने तटस्थता और विरति के विपरीत तन्मय आसक्ति या लवलीन लिप्ति की लिप्सा के साथ नाविक को इस तरह सम्बोधित किया है—

'किनारे पर खड़े रहने की आदत छोड़ दे नाविक
लहर के साथ दो दिन तो लहर बन हौसला भर ले,'

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने काव्य-रचना को निष्प्रयोजन कला-विलास के रूप में स्वीकार नहीं किया है। सोद्देश्यता की ओर उसका रुझान स्पष्ट है तभी करुणा और कल्याण की भावना से इस प्रकार प्रेरित हो सका है—

"यदि इन पंक्तियों में कोई भूली राह पा जाए,
विमुख निज-धर्म से सौभाग्यवश सन्मार्ग पा जाए।
किसी असहाय टूटे दिल को साहस मिले औषध,
समझता हूँ निरर्थक कुछ नहीं सब काम आ जाय।"

यह भी लक्ष्य करने योग्य है कि प्रस्तुत प्रबन्ध-काव्य में 'चिर कुमार' कवि की सौंदर्य-दृष्टि अनेकत्र रसमय होकर छलक पड़ी है।

कलात्मकता के मूल्यांकन की दृष्टि से यह प्रबन्ध-काव्य मन्थर छन्द गति का कौशल श्लथ काव्य ही माना जायगा। इसकी विशिष्टिता तो कथ्य-कथन और कवि के श्रम सातत्य में निहित है।

आशा है, पाठक–समुदाय का स्नेह एक आचारवान कवि की प्रथम काव्य-कृति को मिलेगा।

डा० कुमार विमल
९६, एम० आई० जी० एच०,
लोहियानगर, पटना–२०

हस्ताक्षर
कुमार विमल
७–१२–७८

'महाभारत' की प्रतिबद्धता

आत्मानुभूति साहित्य का मुख्य तत्व है। काव्य की विषदता के लिए उसका विषय भी तदनुकूल हो—यह आवश्यक नहीं। जीवन जगत् के लघुतम पदार्थों एवं क्षणों को भी आत्मानुभूति की गहरी संवेदनशीलता साहित्य के विषद् विषय का रूप दे देती है। महाभारत की कथा हम सभी जानते हैं, लेकिन कोई कवि हृदय ही अपनी संवेदनशीलता एवं आत्मानुभूति के संस्पर्श से इसकी कथाओं को माधुर्यपूर्ण लय में सम्प्रेषित कर सकता है—जो महाभारत की पंक्तियों में हमें मिली है।

यह ठीक है कि काव्योद्देश्य सत्य और शिव से सम्पृक्त अनुभूतिजन्य सहज आनन्दोपलब्धि होना है—लेकिन शाश्वत मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय चेतना एवं नैतिक सामाजिक मानदण्डों से मुख नहीं मोड़ा जा सकता। 'महाभारत में सन्निहित कवि-हृदय की अनुभूतियाँ मानवमात्र को ऊँचा उठाती हैं—जो पाशव-प्रवृत्तियों से मुक्त कर उसे देवत्व की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुई हैं।

इसका काव्य-सौंदर्य मानवीय मूल्यों, आत्मानुभूति की संश्लिष्ट भाव छवियों, मानस-सगठनों एवं अभिव्यक्ति के नूतन आयामों में देखा जा सकता है। कवि का भी संकेत है—

'कलयुग का आगमन हो रहा, अब अतीत के नियम सभी,
नये-नये सन्दर्भों में गूँथे जायेंगे कभी-कभी।'

कवि की विगत पाँच से भी अधिक वर्षों की साधना एवं उनके चिंतन-मनन के रूप में उनकी यह प्रथम काव्य-कृति सचमुच अभिनन्दनीय है।

आशा है—सहृदय पाठक इसे अपनायेंगे।

कामेश्वर मानव
ए-९१, पीपुल्स कोऑपरेटिव कालोनी,
लोहियानगर, पटना-२०

हस्ताक्षर
कामेश्वर मानव
६-१२-७८

अपनी बात

विशाल सृष्टि...गतिशील घटना चक्र...विस्मृति-सरिता...निमज्जित अतीत...काल-क्रम प्रभावित ऐतिहासिक सत्य, जिसके मौलिक स्वरूप को कृत्रिमता एवं भ्रम का आवरण आच्छादित करता रहा है। युगों का चित्र सजीव रह ही कैसे सकता है ?

किन्तु, कुछ अपवाद भी हैं, सौभाग्यवश अपवाद अमूल्य निधियों के सम्बन्ध में हैं। इस भूभाग पर त्रेता एवं द्वापर युग की प्रमुख ऐतिहासिक कथा के जो स्वरूप तत्कालीन मनीषियों—क्रमशः बाल्मीकि एवं व्यास द्वारा प्रस्तुत किये गये वे व्यावहारिक दृष्टिकोण से भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं उनके सम्बन्ध में कुछ पढ़े-सुने को लिखें। फिर, उधार आधार प्रस्तुत रखना क्यों? ईश्वरेच्छा छोड़ कोई अन्य कारण मुझे नहीं दीखता।

फिर, 'स्वान्तः सुखाय' के क्रम में अभिव्यक्तियों का झुरमुट फैलता गया, एक भावलोक-सा छा गया। इस बीसवीं शताब्दी में भी कहीं शकुनी दाँव का पासा फेंकता दीखता है, तो कहीं धार्मिक मानदण्डों से परिचित धृतराष्ट्र पुत्रमोह में कुमार्गावलम्बी हो रहा है। गांडीव की टंकार इस वैज्ञानिक युग में निस्तब्धता का दामन न जाने कब फाड़ चुकी है। सब मिलाकर ऐसा द्योतित होता है मानो मानव की मौलिक मनःचेतना समस्या की डोर थामे जहाँ की तहाँ खड़ी हो। निर्माण हुआ, विध्वंस हुआ, आह्लाद आया, विषाद पनपा, नीली छत्री के नीचे मादक बसन्त बीता, सुसज्जित शयन-कक्ष में क्रन्दन-चित्कार का संगीत गूँजा। सबके बीच जीकर भी मनुष्य अपनी स्वाभाविकता को संभाले रहा।

स्पर्श-गंध की लपट, ऐश्वर्य-लालसा, प्रशंसा की भूख, दम्भ का नर्तन, प्रलोभन की नग्नता, कुत्सित जीवन की उमस से आच्छादित रहकर भी मानवता अपनी सेवा-भावना, निष्कलुषता, सज्जनता, निःस्पृहता, उत्कृष्टता, सात्विकता आदि अनेकानेक गुणों का परित्याग न कर सकी। नन्दन के सूखे काठ में पराग-माधुर्य हो जैसे, बस, वैसे ही मानव समधारी अलक्षित अथवा परिलक्षित मानव-मूल्यों के लिए जीना है, यह एक शाश्वत

उपदेश है। महाभारत कथा में जीवन का सर्वांगीण स्वरूप समुज्ज्वल झलकता है—ऐसा बहुतों को लगा होगा। तो, आयें इस रूप में भी इस कथा की झलक लें, जिस रूप में प्रस्तुत करने का दुस्साहस मैंने किया।

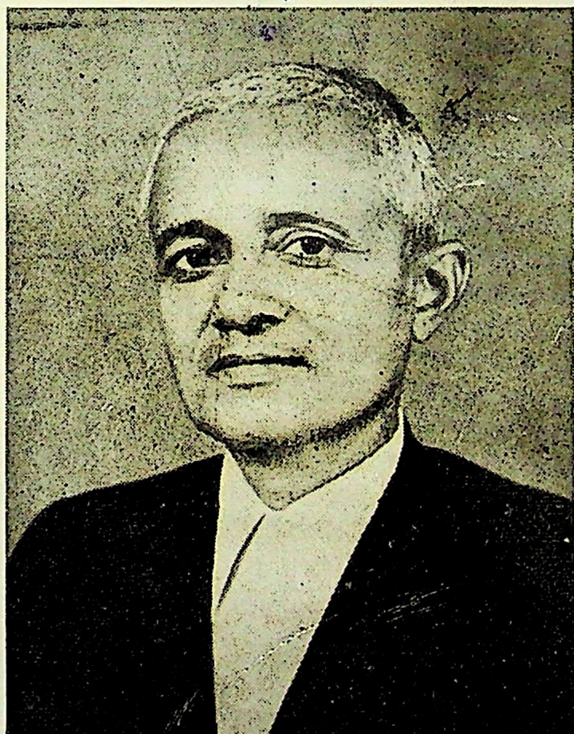
न्यायालय की चहारदीवारी के अन्दर के कार्य-कलापों में एक सिह-रण का भाव देखनेवाला व्यक्ति साहित्य-प्रेमियों को परितृप्ति-कलश प्रस्तुत कैसे करता? किंतु, व्यवसाय से विभिन्न जिला-खण्डोंका निवासी अन्ततः आदमी ही तो है—इसी अहंभाव ने लेखनी को बल दिया। चला था कुछ कहने, पर, रुकूं कहां और क्या कहकर? अतः इसका विश्लेषण किये बिना ही 'अपनी बात समाप्त करता हूं। जीवन चलता रहे, अव-रोधों के बावजूद चलता रहे, रुक जाय तब भी चले।

इसके रचनाकाल में अपने अधिवक्ता मित्र भाई साधुशरण, बृजनंदन, रामलखन, रणधीर, गणेश, कृष्ण बिहारी, जुगेश्वर, भगवान, राजेन्द्र, गजेन्द्र, इन्दु इत्यादि के प्रोत्साहन के लिए हृदय से कृतज्ञ हूं। पांडुलिपि को उलट-पुलट कर प्रमुदित होनेवाले भाई रामेश्वर यादव युवा अधिवक्ता की इसे पुस्तकाकार रूप में देखने की इच्छा पूरी हुए बिना इस संसार से विदा होने की बात कौन जानता था!

प्रो० रामबुझावन सिंह का अपने शिष्य के प्रति आशीर्वचन उनकी महानता का परिचायक है। मित्र डा० कुमार विमल की सारगर्भित पंक्तियों के प्रति आभारी हूं। अधिवक्ता मित्र कामेश्वर मानव ने पांडु-लिपि को पुस्तकाकार स्वरूप देने में सहयोग देकर मुझे अनुगृहित किया है। सम्बद्ध प्रेस कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं। सहृदय पाठकों से निवेदन है कि वे इसकी त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट करायें......अस्तु।

वर्तमान पताः—
द्वारका प्रसाद
एम. ए., बी. एल., एडवोकेट,
ए-९१, पीपुल्स कोऑपरेटिव कॉलोनी,
लोहियानगर, पटना—२०

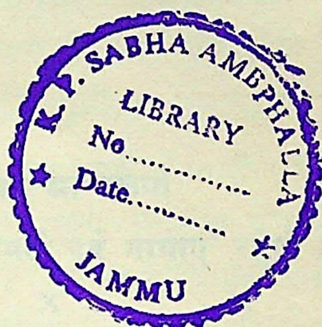
हस्ताक्षर
द्वारका प्रसाद
८-१२-७८
स्थायी पताः—
ग्राम-बैंसा, पत्रालय-जट डुमरी
थाना-पुनपुन, जिला-पटना



श्री द्वारका प्रसाद

एम. ए., बी. एल., अधिवक्ता





आवाहन

कथा फिर से सुनाऊँ यह हृदय की लालसा है
पराशर-पुत्र ने जिसको रचा, गति क्रम दिया है
ऋषि-मुनि, सन्त ने अपना सफल जीवन बनाया
महाभारत महानिधि-स्रोत घोषित कर दिया है।

सुना है मैंने जिसको विज्ञ साधक गुरुजनों से
सुनाया है मुझे सामान्य जन समुदाय तक ने
जो समझा अधिक उससे समझना है आजभी बाकी
वृहद् जीवन समर को मिल सको हो एक ही झाँकी।

वैशम्पायन हैं न गणपति आज लेखक हैं
जन्मेजय कहीं मिलते न नारद दीख पड़ते हैं
प्रभु बस एक अनुकम्पा तुम्हरी दीख पड़ती है
मिली जो कृपा पतितों को उसीकी आस हम रखते।

सहारा एक प्रभु तेरा अमंगल हो नहीं सकता
बढ़ाता हूं कदम जगदीश संशप छोड़ हूँ बढ़ता
चमकती, कौंधती बदली से भी जब फूटती किरणें
किसी को राह मिल जाती, जगत् ने यह भी है देखा।

यदि इन पंक्तियों में कोई भूली राह पा जाए
विमुख निज धर्म से सौभाग्यवश संन्मार्ग पा जाए
किसी असहाय टूटे दिल को साहस मिले औषध
समझता हूँ निरर्थक कुछ नहीं सब काम आ जाए।

प्रकम्पित आज जगधारा, किनारा खोजती विह्वल
जगत् गुरु प्रेरणा मिल जाय, जीवन सफल होजाय
भरोसा छोड़ कर बैठे को भगवन दे भरोसा तुम
जो साहस को चढ़े नौका समुन्दर पारकर जाए।

किनारे पर खड़े रहने को आदत छोड़ दे नाविक
लहर के साथ दो दिन तो लहर बन हौसला भरले
न जाने कोई यह संसार कब किसको विदा कर दे
मचलती साँस तबतक स्वत्व का अनुमान तो कर ले।

महाभारत के केशव, कर्ण दुर्योधन, युधिष्ठिर को
महर्षि भीष्म द्रोणाचार्य अर्जुन भीम आदि को
अनेकों सारथी सभ्रान्त योद्धा वीर सैनिक को
हृदय के उबलते भावों में देखो देव सुरगन को।

प्रत्यंचा जो चढ़ाता है चढ़ाता सीस भी अपना
साम्राज्य सुख पाये वही वनवास भी सहता
कलेजे से चिपक जिससे प्रणय का जोड़ता नाता
चिता उसकी जलाशयके किनारे भी सृजन करता।

मिला है भाई-भाई से गले में हाथ दे जी भर
कटी है प्रथम स्वर्णिम रात पीले हाथ होने पर
धरा की शस्य श्यामल स्थलों पर देवता ललके
पराजित हो गये हैं देव, नर के चेत जाने पर।

महत्ता मनुज जीवन की समर जो ठानता रहता
निकम्मा जो रहा कुछ दिन कमर तलवार ले चलता
विधाता की बनायो इस धरा पर क्या नहीं मिलता
हृदय से चिपक रहता था, न वापस आ कभी मिलता।



आयोजन

शान्तनु

इस धराधाम पर मानव कुल अपनी फैलाता रहा विभा
देवत्व पराजित हुआ कभी नभ धरती पर आकर लौटा
वसुधा जिसकी शोभा, सौरभ जिसका सुन्दर अतीत
भावों में भर हम जीते हैं, जीवन सब का है रहा बीत

सत्यवती संतान व्यास की अमर कथा को सर्प यज्ञ
वैशम्पायण ने श्रोतागण को अभिव्यक्त किया संयोग
धृतराष्ट्र-पांडु के जनक, विदुर को जन्म देने वाला
घोर तपस्या हित आश्रम में रहा साधना समुचित योग

गंगा देवों का नगर त्याग जगती पर सौरभ फैलाती
सौन्दर्य ढालती लतिका-सी अरमानों में सहमी भोली
कुरुवंश पुरातन दया धर्म के अवतारों के वंशज थे
शान्तनु, हस्तिनापुर में बल-विक्रम की खेल रहे होली

कौन बता है, परम सुन्दरी धरती पर अवतरित चाँदनी
आलिंगिता प्रणय-शीला, स्नेहिल जीवन संचार करो
यह सारा जग, जीवन, यौवन बस तेरे चरणों में अर्पित
सप्त हृदय का मिटे त्रास बाले संचित निधि दान करो

कामातुर बेहाल बेबसी अपनी ढाल रहे अविरल
कर न सकी स्वीकार याचना लगती कितनी तरल सरल
आलिंगन का मूल्य चुकाना दुस्तर कितना भूल गये
जितनी शर्तें सुनी स्वीकृति देकर आँखे मूंद चले

एक-एक कर सात रत्न का जन्म हुआ गंगा तन से
किंकर्त्तव्य-विमूढ़ नृपति सम्मुख, सबको सुरसरि जल में
जब हृदय प्यार में डूब रहा, नाविक पतवारें छोड़ रहे
तब झंझावत भले आए नौका का पूछे कौन हाल ।

प्रेमातुर गलबांही करते अधरों पर उष्ण अधर डाले
रति-क्रीड़ा हित सब न्योछावर स्पन्दित अवयव हो जाते
कब तक भूला होगा जगती पर मानव कुल का दिव्य रत्न
जो तप्त रहा दिनमान सान्ध्य अस्ताचल को है चल देता ।

साहस सम्भाल कर आज शान्तनु खड़े हो गये अडिग अचल
हे महामानिनी अपनी ही संतानों के संग क्या होली?
वे दिये डाल गंगा की अविरल धारा में सातों बालक
यह आज आठवां लेकर भी चल रही, लगे इतनी भोली ।

ज्वाला को कर शान्त, ध्यान दे नारी की मर्यादा को
आने वाली संतान न दे अपशब्दों की बौछार वृथा
यह नम्र निवेदन मेरा है आन्दोलित मन की पीड़ा है
हे नागिनी अपना रूप बदल हठ और न अपनीक्रूर दिखा ।

बस भूल गये इतनी जल्दी निज स्वाभिमान अपनी वाणी
है दम्भ तुम्हारा व्यर्थ सम्भालो लो अपना यह पुत्र
कहा था मैंने यह आरम्भ न कोई रोक सकेगा मुझे
करूँ हित या अनहित निर्बाध, वचन मेरा था वैदिक सूत्र ।

आश्वस्त रहो मैं चलती हूँ, इसकी सेवा में रहती हूँ
बढ़ता जायगा अनायास अमरत्व हृदय में भाव लिये
अर्पित कर दूँगी चरणों में नारी का वचन न टलता है
अविलंब चली तट मोह त्याग नवजात शिशु को गोद लिये।

है देख रहे राजा सरिता-तट एक धनुर्धारी किशोर
कुन्तल ललाम रक्तिम आभा, मुखमंडल पर देवत्व तेज
अर्पित करती बालक प्रसन्न वदना गंगा गयी दृष्टि दूर
सौभाग्य जान राजन ने अंगों में भर लियानेत्र जलकण।

युवराज पिता की गोद, हर्ष से गद्गद् नृपति आज हुए
रे यही देवव्रत धराधाम पर भीष्म पितामह कभी हुए
चढ़ गयी वंश की परम्परा को मर्यादा हिम खडों पर
नियति ने रचा चक्र सारा, भूपति के भाग्यसदेह हुए।

★
★★

भीष्म-प्रतिज्ञा

मादक, मोहक, स्नेहिल सरिता हरित शस्य-श्यामल दुकुल
सौरभ-मकरन्द छलकता है चल रहा मंद मलयानुकूल
भींगे अंगो में आज स्फुरण बड़े वेग से आया है
ऋतु राजभेजते सुधा किरण हृदयंगम करनेको उद्धत।

तुम कौन देवबाले धरती पर पहली किरण कमल-किसलय
मृदु मंद चपल तन्वंगी से थी छिटक रही शोभा स्वर्णिम
तू कौन, तुम्हीं पर अर्पित मेरा जीवन धन तन, मन सेवा
तू निर्विकार दीपक ज्वाला, चंदा नयनों की तृप्ति स्नेह।

जमुना सुसज्जिता आज हुई चह-चहा उठे द्रुमदल समोद
हे कनक-सुधा, फेनिल वचनोंसे मधुर हास तू रही ढाल
इस विकल प्राणका त्रास तुम्हारे बिना न कोई मिटा सके
देवी स्वीकार करो पूजा दूं दिव्य भाल भर रंग लाल।

सुन केवट-राज निकट आया, राजन ! मेरा सौभाग्य आज
केवट की तनुजा राज-वधु, धरती पर इन्द्रपुरी उतरा
यह सत्य वती मेरी कन्या, खुल गया भाग्य इस वनिताका
किन शब्दोंमें आभार प्रकट कर सकूं, अकिंचन जन ठहरा।

तुम रत्न-प्रभा के अभिरक्षक, मोहक उपवन के वनमाली
तेरी अनुकम्पा से मेरा जीवन मयूर नर्तन करता
तेरा अनुपम उपहार रेत की वनस्थली को सरस बना
जीवन मंगल शोभा प्रमोद रंजन से है पूरित करता।

क्या बदले में दे सकूँ, सोच-समझ नहीं कुछ पाता हूँ
संतोष मुझे हो इस हेतु कुछ माँग सको, यह अनुकम्पा
सब कुछ देकर भी तुझे कौन दे सकता दाम भवानी का
आह्लादित रहे तुम्हारा मन अनुपम इस उपवनकी चंपा।

दास राज लख तंद्रित हिरण कुशलअति कुशल वाण तीखा
रे सफल धनुर्धर-सा आखेटक ने सीधा संधान किया
हत हुआ हिरण चंचलता तन को भाग चली राजा अधीर
काटो तो ख़ून नहीं, भुजदण्डों में धड़कन भूचाल नया।

तो सत्यवती मिल नहीं सकेगी, चले शान्तनु धीमें पग
बीते दिन-रात महीने कुछ राजा दुर्बल असहाय क्षीण
युवराज देख नृप दशा संशकित हुआ विकलता जाग उठी
चरणों में मस्तक टेक पूछ बैठे क्यों पिता अधीर दीन।

शान्तनु ने दी सांत्वना बतायी अपने मन की बात नहीं
कुल भूषणको लख शीघ्र विकल रथ-चालक ने बातें कहीं
कितना प्रसन्न युवराज आज केवट की कुटिया दौड़ पड़ा
कंटक हो दूर बुढ़ापे का, विषधर जो पिता हृदय बींधे।

युवराज देख साक्षात आज, केवट भय से व्याकुल होकर
क्या कहे नहीं क्या कहे, द्वन्द्वके बीच सुनी जयनाद प्रखर
भर ले अंगों में युवक, प्रेयसी आलिंगन आबद्ध बने
जीवन की सफल कामना हो, लग गयी सोचने सत्यवती।

हे केवट राज! मांग तेरी पूरी की जाती है सुन लो
सत्यवती-संतान शान्तनु का उत्तराधिकारी हो
एक मात्र मैं पुत्र शान्तनु का यह वचन निभाऊँगा
करो शीघ्र सब कार्य सुमंगल कार्य हेतु तैयारी हो।

केवट प्रमुदित, सत्यवती हस्तिनापुरी की रानी है
कल तक केवट की कन्या थी, अब कुरु-वंश की रानी है
एक बात केवट ने कह दो साहस करके प्रलयंकर
जमुना तट स्तब्ध मौन पशु-पक्षो, बहता पानो है।

राजकुमार! तुम्हारी अनुकम्पा के हम हैं आभारी
जीवन भर श्रीमान् निभायेंगे वाणी यह भी मानी
कौन जानता भाग्य मनुजको किस दिन किधर खींच लेगा
सन्तति आप की छीने, यह राज्य कभी तो क्या होगा ?

मेरे सुत का भय हे केवट-राज तुम्हें भय देता है
ले सत्यवती सन्तति से राज-हृदय में संशय होता है
प्रण करता जमुना तट पर हे सूर्य, चन्द्र, तारे सुन लो
आजीवन अविवाहित रह सौभाग्य, न संयश कभी करो।

वीरों की वाणीका प्रभाव अग-जग नभ मंडल तक होता
पुष्पों की वर्षा हुई देव बालाओं ने स्वर दान किया
माता का नाम अमर करने शान्तनु को जीवनमय करने
दी चढ़ा जिंदगी ,यौवन धन कितना मंगल गंधर्व-राग।

बाजे-गाजे के साथ शान्तनु का साम्राज्य गुंजरित था
नृप आज विभोर प्रणय पाकर, केवट-गृह मंगल गायन था
कितना प्रशस्त उन्नत ललाट शांतनु के सुतका दीख रहा
दे त्याग ज़िंदगीका प्रमोद-आमोद पिता हित साध कथा।

इस धरती का आनंद मनुज को रहा खींच बेजोर नित्य
कर्त्तव्य त्याग मानव वैभव को ओर रहा प्रतिपल बढ़ता
रे कितना है निर्विकार जो चढ़ा रहा अपना सुहाग
रंगीन जवानी हवन हुई, पल्लवित बुढ़ापा स्नेहशील।

दुनिया में कभी-कभी आते रहते हैं ऐसे महारथी
जो देख न लेते अपने तक औरों को लेते प्रथम सुधी
मानवता का व्यापार करे कोई जीवन में रोटी हित
कोई भूखा रहकर भो दे, अपनी थाली भिक्षुक आगे।

हे भीष्म तुम्हारा अभिनन्दन करने का है सामर्थ्य किसे
जगमगा व्योम में रहे तारिकाओं के भींगे नेत्र आज
तेरा अभिनन्दन हिमगिरी का उतुंग शिखर कर सकता है
जो मिटा न सकता अपना कुछ तेरी जय क्या कह सकताहै।

भारतभूमि की देन, कोटि मानव को प्राण सहायक तू
अरमानों के श्रृंगार धर्मवेदो के पूज्य पितामह तू
तेरी गरिमा से भरतवंश की मर्यादा नभ-चुम्बित है
तेरा बलिदान महान स्वच्छ, कज्जल गंगा जल-सा है।

अपहरण

दो पुत्रों की माँ बन गयी, सौभाग्यशालिनी सत्यवती
धर्म युद्ध में काम आ गया, चित्रांगढ़ थर धीर मति
गद्दी मिली विचित्र वीर्य को जो नन्हा था बालक था
भीष्म प्रजा पालन करते थे, बन्धु स्नेह सहारा था।

समय बदलता गया, अनुज यौवन भूषण आभूषित था
लगे सोचने भीष्म सुमंगल बन्धु का समयोचित था
काशी राज महान पुत्रियों का कर रहे स्वयंवर थे
चले भीष्म तेजस्-स्वरूप अपहरण भाव दिल अन्दर थे।

अम्बा को थी अमित लालसा शाल्व गहे उसकी बाहें
कथा सुनाई जब उसने भीष्म ने भी भर दी आहें
जा भद्रे तू शाल्व पास, जीवन नौका पतवार बने
कर सका न जब स्वीकार, हस्तिनापुर को फिर उद्विग्नमना।

अम्बालिका अम्बिका की शादी की छोटे भाई से
बनी राजरानी वे दोनों, गुंजित भवन बधाई से
अम्बा ने जब लाचारी में भीषम ओर बढ़ाया हाथ
कहा भीष्म नें हे देवी ! मैं दे न सकूँगा तेरा साथ।

नारी का संकल्प तपस्या करने चली विजन वन में
मिला एक वरदान, हार फूलों की सदा बहार लिये
जो पहनेगा इसे भीष्म की हत्या कर सकता वह वीर
अगणित राज कुमारों से आग्रह न पहनता कोई वीर।

क्रुद्ध हृदय से अम्बा ने दी द्रुपद-भवन में माला डाल
स्वयं चली फिर घोर विजनवन तपलीना मानवी कठोर
परशुराम ने कहा शाल्व को अभी बाध्य कर सकता हूँ
करे तुम्हें स्वीकार रूपसी वृथा रहा वह तुमको छोड़ ।

अम्बा बोली सुनो विप्रवर, मुझे न पति वरण करना
देखूं निज आँखों जाता है भीष्म त्याग कर तन अपना
परशुराम लाचार, चली पर्वत की ऊँची चोटी पर
शिव का अराधन करती दिन-रात, प्रसन्न हुए उसपर ।

अम्बे ! तू अपने ही हाथों कर सकती भीषम का वध
सम्भव है वह नये जन्म में इस जीवन में धैर्य धरो
जीवन का तज मोह तड़पती अम्बा लपटों में कूदी
अपने हाथों बना चिता वह स्वयं उसी में जा कूदी ।

नियति का वरदान द्रुपद की कन्या होकर वह जनमी
शिशु बढ़कर बन गयी किशोरी सुमन हार रक्षित अबभी
द्रुपद देखते रहे पहन ली कन्या ने ग्रीवा में हार
निष्काषित कर दिया द्रुपद ने वनमें घूम रही बेजार ।

समय बदलता गया, कुमारी कन्या बढ़ी सयानी हुई
मिटते गये चिह्न नारी के, कन्या बनी पुरुष साकार
धनुष-बाण तरकश ले चलता आज शिखंडी शेर समान
कौन शुभ घड़ी वह आ जाय जब अपदस्थ भीम आक्रांत ।

विधि को था स्वीकार कौन धरती पर रोके वज्रप्रहार
शिखंडी कारण समर क्षेत्र तज दिया भीष्म ने यह संसार
योद्धाओं का योद्धा ज़ीवन खोता एक शिखण्डी से
जन्मा नारी रूप नरोत्तम लड़ सकता वैसे उससे ।

धन-धाम स्वर्ग संसार सदा आए जाय अविरल प्रवाह
बस एक धर्म हेतु मानव जगती पर धारण तन करता
जो कभी नहीं तलवार उठा सकता नारी की गर्दन पर
क्या करे धर्म के महासमर वह ज़ीने मरने की चिंता ।

भीष्म पितामह जगत् पितामह शूरवीर के पूज्य पितामह
धरती के आलोक पुंज, गौरव के संचित भाग्य पितामह
शौर्य तेज आभा मुख मण्डल पर दिनेश-मण्डल सा है
रिपु-दल मर्दन क्रूर, धर्मके परम पुंज जगपूज्य पितामह !



नियोग

सत्यवती के पिता एक नौका-जन सेवा हित रखते
प्रमुदित-मना चलाती, युवक पराशर नौका पर चढ़ते
कामातुर उन्माद अंक में सत्यवती, संतान जनी
जमुना-द्वीप डाल शिशु का तन रही कुमारी शुद्ध बनी ।

द्वैपायन उत्पन्न हुआ था, व्यास नाम आगे चलकर
हुआ अम्बिका का आलिंगन आँखें मूँद चली डर कर
धृतराष्ट्र जन्मांध पुत्र कैसे अधिकार राज्य का हो
अम्बालिका चली भय खाती पीली होकर साहस खो ।

पांडु-प्रादुर्भाव, अम्बिका जा न सकी धाई दौड़ी
विदुर जन्म अवसर पर होता चिंता नहीं रही थोड़ी
चलता रहा, नियोग व्यास से जन्में तीनों शुभ संयोग
सत्यवती की आज्ञा का पालन कर ही रतिमय-संभोग ।

संजीवन

देवासुर संग्राम नियति का गर्जन-तर्जन प्रलयंकर
नर-नारी आतंक विश्व में यदा-कदा होता रहता
संजीवनी वरदान असुरकुल शुक्राचार्य गुरु का था
मृतक पुनः जीवन पा जाय आतंकित सुर दल रहता।

कच को देवों ने समझाया वृहस्पति के पुत्र सुनो
पूज्य पितामह गुरु अंगिरा ऐसे कुल में तुम जनमे
तुम्हीं संभलकर मार्ग सोचकर शुक्राचार्य निकट जाकर
करो प्राप्त संजीवन देवालय उद्दीपन दीप जले।

देवयानी गुरुकी पुत्री थी, कच को शरण मिली गुरुद्वार
मो सेवा हित रहा मरण उपरांत हुआ जिंदा कई बार
सेवक होकर गुरु आश्रम में इतना मिला बिहार प्रिय
स्पन्दन हो आता पुलकित गात न राग बिखेर प्रिय।

अगणित मंत्रोचारण का जब असर न कोई दीख पड़ा
देवयानी की कच अभिलाषा ऐसा निश्चित भान हुआ
लगे शुक्र संजीवनी धन का फिरसे करने शुभ उपचार
जान लिया गुरुने पी डाला है कच को मदिराके साथ।

गुरुत्तर दुस्तर कार्य अकचका रहे गुरु क्या करूँ प्रयोग
जीवन पायगा कच तत्क्षण मेरा निधन यही संयोग
जीवन देने से पहले गुरु ने यह मंत्र दिया इस बार
पुनर्जीवित करना तुम मुझको, विधि उसकी है, यह उपचार।

गुरु का ज्ञान मिला, प्रसन्न अति, शवको जीवन दे सकता
असुरों के कठिन प्रहारों से देवों की रक्षा कर सकता
गुरु का ले आशीष शीश पर चाह रहाथा वह चलना
सुर बाला पीड़ित मन कहती मुझे विलग कैसे रहना।

अरमानों से नयनों से संसार सजाया जाता है
जाने-अनजाने लतिका पर सुमन झूलता जाता है
सौरभ का मकरन्द हृदय को भावों में भर देता है
स्नेहिल हृदय बिछुड़ जब जाता आहत कौन न होता है।

शर्माती रह गयी ऐंठकर कुंठित हो अधखिली कली
भ्रमर गुनगुनाता उपवन से विदा हुआ शर्माता-सा
हृदय पीड़ रह-रह सम्भालते दोनों ओर सनेही थे
'समय बड़ा बलवान' सहमते धीमे स्वर कह लेते थे।

इन्द्रपुरी आनन्द अस्त्र ऐसा अमोघ गृह आया है
असुर पराजित करने का संकल्प पनपने आया है
मिटी घोर अंधियारी जीवन आशा लतिका झूले पर
कौन देखने जाता है प्रेयसी लहकते शोले पर।

ययाति

देवयानी ने वसन पहन डाले शर्मिष्ठा का अनजाने
शुक्रदेव आचार्य पुत्री-हठ के कारण राक्षस कुल त्यागे
कूद पड़ी कुएँ में फिर भी नवयौवना अधीर हृदय
ययाति ने उसको निकाल बाहर लाया भारी संशय ।

मेरा क्षात्र-धर्म रमनी ब्राह्मण-तनुजा सुकुमारी है
हित-अनहित का धरो ध्यान परिणय विधानसे बाधित है
आग्रह तीव्र प्रगाढ़ अंग की लहराती शोभा की जीत
सामाज्ञी बन गयी देव बाला कुल रीति के विपरीत ।

शुक्रदेव का क्रोध ययाति को अभिशाप, पतन यौवन
क्षीण काय कर रहा तपस्या क्षमा मांगता जीवन धन
शुक्रदेव ने कहा तुम्हारा यौवन वापस आयगा
सम्भव है जब कोई जवानी भेंट तुझे दे पायगा ।

करे तुम्हारी जीर्ण अवस्था को स्वीकार जवानी देकर
मिटा सके अरमान जिंदगी का कोई निज पौरुष देकर
तभी तुम्हारे अंगों में ऋतुराज भरेंगे ऊर्जा रति की
देख निकटतम निर्विवाद हो अनुकंपा तुमपर जिस की।

धन-धान्य रंगशाला धरतीका मोहक रूप विपुल परिवार
हंसता प्रतिपल जब आशक्त हो गया ययाति यौवनकाल
सबकुछ ले कोई, सशक्त इस मानव काया को कर दे
जीवन का आनन्द मधुर हे देव सुलभ कोई कर दे ।

चार पुत्र कह रहे जवानी बेच भला क्या पायेंगे
कहो पिता कैसे आजीवन तड़प सहन कर पायेंगे
निखिल विश्व निस्सार सर्प-जिह्वा सच ही प्रतीत उस क्षण
जब अंगों में ओज नहीं, ढहता रहता है प्रतिपल मन।

पर धन्य पाँचवाँ पुत्र पुरु तूने सर्वस्व किया स्वाहा
दे यौवन अपना ययाति को पुनः युवा बलवान किया
असमय ले क्षीण शरीर, सहमता अवयव घोर निराशाको
भर दिया पिताका हृदय, त्याग प्रतिपल उठती अभिलाषा को

अब यौवन का उन्माद लिये, अंगों में मस्त बहार लिये
चला ययाति धन की नगरी, रमनी का प्रेमालाप लिये
दिन-रात प्रेयसी गलबाँही, अधरों का मृदु चुंबन होता
बलखाती-इठलाती बालाओं का परिरंभन होता।

वर्षों की अविरल स्नेह धार पदचाप नितंबोसे बोझिल
कटि पर प्रसाधनों का रुनझुन मद-भरी दृष्टि दशना फेनिल
कंचुकी पराजित हुई उछलती चली जवानी उफनाकर
कोमल लतिकाका अंग-अंग पुलकित आलिंगन प्रमुदित मन।

रे यौवन का उन्माद नित्य चढ़ता है ऊँची चोटी पर
हो जाता सत्य स्वप्न फिरभी आ गिरता कामुक धरती पर
रे भरी जवानी व्यग्र लालसाओं की मधुशाला समझो
है कितना गरम-नरम पुनि कितना ठंडा और कठिन समझो।

ले सम्भाल यौवनधन बेटा पुरु को वापस करता है
ययाति-सा याचक अपना सर्वस्व समर्पित करता है
मिली न शांति, चैन कहाँ ? अंगारों में अनुराग नहीं
जीवन कहाँ न झाँको मिलती ममता शाश्वत भाव नहीं ।

तंद्रित होकर डूब रहा आलिंगन-नद अभिसार-निधि
लचक भरे अंगों को देखी गहराई विस्तृत जलधि
नाविक देख न पाता कभी किनारा लहरों का चुम्बन
रहा तैरता अविरल चैन न पाया व्यथित प्रकंपित मन ।

त्याग दो, मन से वचन से वासना की भावना
कर्म से हो त्याग मूर्त्ति, कर जगत् की साधना
अमरता देवत्व सद्गुण आदि सब भर जायेंगे
वासना के जाल, तप के अनल में जल जायेंगे ।

[redacted]

मांढव्य

आरक्षी नायक द्वारा संवाद नृपति को आज मिला
घोर तपस्याव्रती ऋषि-आश्रम में आश्रित चोर मिला
जान न सके महर्षि फिर भी सजा उन्हें दी जाती है
राजा आकर पुनः माँगता क्षमा उन्हें मिल जाती है।

मुनि शांत प्रतारण सहकर भी आक्रोश न राजा पर करता
, साक्षात पूछता धर्मदेव रे किस कुकर्म का फल देता
बचपन में कष्ट दिया पक्षी कुछ कीट-पतंगोंको मुनिवर
अपराध वही फलका कारण स्पष्ट भाव शुचि उच्चारण।

मांढव्य क्रुद्ध हो गरज उठे, अनजाने क्या अपराध हुआ
बालक अबोध जो होता है उसके कर्मों का भोग हुआ
इतना कठोर, इतना निर्मम हे धर्मराज यह अनुचित है
लो तुझे शाप मैं देता हूं, मानव तन मुझको समुचित है।

विदुर रूप में जन्म लिया श्री धर्मदेव ने अवसर पा
देख लिया अनभल करता मानव कितना है वैभव पा
जिस हाथ से सेवा जगत् की कर सके मानव यहाँ
उस हाथ में शमशीर ले गर्दन मनुज की काटता।

कर्ण-अवतार

भोजराज को प्रिय सुता कुन्ती वन रहने लगी पृथा
सूर-सुता को पिता दान में देते प्रचलन ऐसा था
गोद लिये आनन्द-मग्न राजा अब रहे न निःसंतान
दुर्वासा ऋषिकी सेवाका प्रतिफल मिला सुखद वरदान।

यौवन देहरी चरण डाल चलती भोली घबराती थी
वरदान सत्य है जान इसे लेने की लिप्सा आती थी
नियति क्या जाने मंद-मंद मलयानिल स्पन्दन देता
अंगों में भर आता मोहक माधुर्य नेत्र तंद्रित होता।

सौन्दर्य-जलाशय आप्लावित कुंती का हृदय पुकार उठी
हे सूर्यदेव दर्शन देना, साक्षात् देखकर कांप उठी
बोलो तू कौन, सूर्य बोले आमंत्रित हो मैं आया हूँ
दो क्षण तेरा दर्शन करते रति भावों में भर आया हूँ।

मैं क्षमा मांगती पूज्य देव कन्या हूँ बाला भोली हूँ
माँ बननेका अधिकार नहीं मत करो कृपा बस वनिता हूँ
हे जगत् सुन्दरी ! प्रणय-पुत्र सौभाग्य विभा प्रतिभा वाहक
कौमार्य प्राप्त तत्क्षण होगा वधु होनेका संशय नाहक।

कुन्ती की गोद भरी धारणकर कुंडल सूर्य-कुमार प्रकट
अबला समाजसे आतंकित दहलाती सरिताके शुचि तट
मां वज्र बनी मातृत्व पनपते सूख चला, लतिका जलती
कुम्भलाई धरती शोणितसे आप्लावित होना चाह रही।

पांडव-निधन

मच गया स्वयंवर मंच भूप-गण जननायक आशान्वित मन
कुन्तीनें दी जयमाल पांडु की ग्रीवा में सस्मित चितवन
ऋषि दुर्वासा का मंत्र प्रकंपन दिल में धड़कन लाता है
साम्राज्ञी का अरमान भरा वैभव चरणों में छाता है।

कुन्ती को बाँहों में बांधे पांडु हो गये निहाल तृप्त
माद्री भी पत्नी बनी एक, राजा-कुल की यह पुण्य रीत
रे सूख न जाय वंश वृक्ष नव पल्लव फलित प्रसारित हो
धन-धान्य पूर्ण इस वसुधा पर राजाकुल पुत्र-विहीन न हो।

बन हिरण प्रेमिका साथ लिये था देव रति-क्रीड़ा करता
पांडु ने मारा बाण, हिरण आहत तत्काल प्राण तजता
हिरणी का कटु वरदान प्रेयसी आलिंगन करना चाहो
तत्काल तजोगे प्राण वासना जब पूरी करना चाहो ।

माद्री को बाँहों में भरकर पांडु रति भावों में डूबा
आमोद जलधिको तैर नहीं पाया, अवसान सलिल डूबा
पति-संग चिता पर जली माद्री कुन्ती ले पाँचो तनय चली
हस्तिनापुरी नगरी मोहक पतिके वियोग लगती पगली।

पांडव की अंत्येष्टि की गयी धर्म की वेदी पर दी गयी
अर्चना समुचित वेद प्रदत्त प्रार्थना सामूहिक की गयी
स्वर्गमें प्रतिदिन करते वास विश्वका आज न कोई त्रास
सूक्ष्म कितना जीवन का तत्त्व न दो पल की है पूरी आस।

एक वनवासी का अभियान विश्व की ममता का परित्याग
जान जग गया भूप चल बसे शोक-संतप्त पूर्ण परिवार
व्यास बोले मां यह दुर्भाग्य शोक संतप्त आज रो रही
त्याग घर-बार निवास विजन, संशय में व्यर्थ तप्त जल रही।

भ्रमण का ले संकल्प महान्, जिन्दगी का उत्सर्ग महान्
खोजने सत्यवती चल पड़ी, हुआ जीवन का सच्चा भान
विचरती आज अम्बिका साथ परम कल्याण ध्येय अरमान
वनों में अम्बालिका सहर्ष त्याग ही मर्म, त्याग ही ज्ञान।



भीम को विष

दुर्योधन लग गया सोचने पिता न राज्य कभी पाये
पांडु ही सामन्त बना, पांडव न पनपने अब पाये
बस एक भीम को मार. युधिष्ठिर अर्जुन कारा डाल
प्रभु की अनुकम्पा हो गयी, हमारी गोटी होगी लाल।

सुरसरि-स्नान निमित्त कुमारोंका दल मोद-प्रमोद भरा
दुर्योधन विष पिला भीम को करें प्रवाहित जल धारा
बाँध गये हाथ हैं पैर बंधे बेहोशी में दहता है
मां गंगे तेरी गोद जीवित शव पौरुष का बहता है।

जल की वेगवती धारा से नाग लोक तक भीम गया
विषधर सर्पों ने डंस पराक्रमी को विष से मुक्त किया
शूरसेन का नाना आर्यक सर्प एक था दौड़ पड़ा
प्रभो ! वासुकी नाथ। कुंड जल पीने को है भीम खड़ा।

नाग लोक नृपति ने सहमति दी जलपान भीम करता
दश सहस्त्र हाथी का बल, कुन्ती का तनय प्राप्त करता
समर क्षेत्रमें इस विशाल नायक का सफल प्रदर्शन होगा
कौन जानता था सरिता की धारा से बल संचय होगा।

धर्म राज ने देख भीम को पुलकित गले लगाया
बीत गया क्षरण उसे भूल जा, धर्म-मर्म समझाया
प्रतिशोधों के बीच मनुज का होता स्वत्व विलय है
क्षमाशील जग में प्रबुद्ध साधक, सौभाग्य शिखर है।

धैर्य जीवन की लम्बी सांस, टूटती नौका की पतवार
सहमते कदमों की रफ्तार सूर्य की प्रभा ईश वरदान
अंधेरे में प्रकाश का पुंज जलाशय बीच कमल का सुमन
अनमने जीवन का अरमान विश्व चेतनताकी पहचान ।

एक ओर यह नरम, गति शीतलता पनप रही है
दुर्योधन उस ओर द्वेष से पागल भार, सही है
महामोह-तम पूर्ण भाव भर मन से है इठलाता
सबको मिटा स्वयं शंभु बनने का स्वप्न सजाता ।

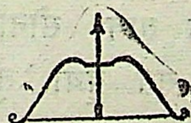
*
**

द्रोण-आगमन

गौतम-सुत शरद्वान नाम्नी को देख काम अभिसिक्त हुए
त्याग दिया आश्रम परिव्राजक के सदृश् गतिमान हुए
भावावेश जगा मन अन्दर यौन-भाव था भर पाया
वीर्यपात हो सरकण्डे पर अनायास था जम पाया।

दो भागों में बँटा कृपि संग कृपा धरा अवतरित हुए
शान्तनु का वात्सल्य मिला भाई-भगिनी के भाग्य खुले
शरद्वान जानकर प्रकट हुए धनुर्विद्या कृपाचार्य पाते
अपनी आँखों देख पुत्र की प्रतिभा अघा नहीं पाते।

भारद्वाज ने देख घृताची को अपना संयम खोया
वीर्य-स्खलन हुआ यज्ञ के पात्र संग्रहित उसे किया
द्रोण नाम था यज्ञ पात्र का, द्रोणाचार्य हुए उत्पन्न
धनुर्विद्या-नायक बल पौरुष धीरमति प्रतिभा संपन्न।



अंगाधिकारी

प्रदर्शन युवक दल की प्रतियोगिता का
गुरु द्रोण के शिष्य की श्रेष्ठता का
सजाया गया है, सभी जुट गये हैं
दिखाते हैं कौतुक नियम बन गये हैं।

समुज्ज्वल, चमकता, विभा सामने है
भुजाओं में पौरुष धनुष-बाण ताने
सम्भाला न अपने को बोला निडर हो
सुनो वीर मैं भी दिखाता हूँ कौतुक।

दिखाया गया जो प्रदर्शन अधूरा
उसे कर दिखाऊँ सफल और पूरा
प्रशंसा नहीं यह कटु सत्य जाने
जो अब तक न देखा वही देख लेना

भरी इस सभा में सहम गये प्रशंसक
कुमारों के गुरू देव को भी प्रकम्पण
खुली यह चुनौती हमें दे रहा है
हमारी ही शिक्षा दुषित कह रहा है।

न माना युवक तान सीना खड़ा है
अरे सूत का सुत वृथा तू अड़ा है
अकड़ भीम कहता तू राजा नहीं है
नहीं तू है सक्षम नृपति-कुल खड़ा है।

सुयोधन ने देखा, कहा वीर साथी
तुम्हारा हो अभिषेक अंगाधिकारी
फड़कती भुजाओं से उछला प्रतापी
विपक्षी सहमते, मिटी डींग सारी।

मुझे राज्य देकर मनोबल बढ़ाते
बता वीर नायक भला क्या तू पाते
मिले मैत्री का सुख, बचा क्या धरापर
मिला साथ तेरा बढ़ो स्वर मिलाकर।

चलो कर्ण, तुमसे न कोई लड़ेगा
रहेगी तमन्ना, समर में मिलेगा
चकित दृश्य सम्मुख सभा मौन साधे
बढ़ा कर्ण, पौरुष सुयोधन सजाते।



द्रुपद-दुर्दशा

पाँचाल देश – युवराज द्रुपद – सहपाठी
हिल–मिल रहते मैत्री अपूर्व सुखकारी
आश्वासन देता द्रुपद हमारा जब होगा अभिषेक
राज्य आधा होगा तेरा, आधा ही मेरा, होगें एक।

सफलता मिली, परीक्षोत्तीर्ण द्रोण जब हुआ
कृपा की सगी बहन से प्रणय-पाश बंध गया।
अश्वत्थामा–सा जनमा सूर वीर धरती पर
लग गये सोचने मिले द्रव्यकी ढेर द्रोण हर पल क्षण।

अंतिम याचक-से पहुँच गये जब परशुराम के आगे
शस्त्रास्त्र चलाना सिखलाया, दिन जागे
साहस बढ़ता ही गया, प्रणय प्रेयसी का
वात्सल्य पुत्र के लिए स्वच्छ सुरसरि-सा।

संवाद मिला युवराज द्रुपद का राज्य तिलक
आह्लादित होकर मिले भाव से ओत्–प्रोत्
पर द्रुपद मैत्री की डोर काट कर वैभव में पलता था
जब दृष्टि द्रोण पर पड़ी भरा आक्रोश वचन कहता था।

क्या द्रोण ! भूलते तुम हो एक भिखारी
मैं राज्य प्रतिष्ठापूर्ण प्रजा हितकारी
तेरा मुझसे सामान्य ढंग पर मिलना
अपनी संगति का जान अशिष्ट बहकना।

इस धरती पर क्या समय सबोंका होता एक प्रकार कभी
आदेश दिया दुर्योधन को फिर कर्ण साथ में गया वहीं
असफल होकर लौटे अर्जुन को पुनः द्रोण ने भेजा है
इस बार बंदी है द्रुपद, बंधा सहमा बंधनमें आया है ।

घबराओ मत सामंत, द्रोण ही मैं हूँ मेरा शिष्य यही
तुम रंक और मैं राजा हूं, पर मित्र-मित्र में भेद नहीं
मैं तुम्हें दान देता जीवन धन भी अर्पित कर देता हूँ
संसार अहंकारी का कैसे होगा ? बतला देता हूँ ।

धिक्कार मित्र ! ऐश्वर्य तुम्हें जब मिला आदमी न रहे
द्रव्यों में लिपटा मानव तन, वसुधाकी सुधि मन ला न सके
समरसता जीवन में फैलाती मैत्री साहश्चर्य प्रिय
वह दुष्ट द्रव्य में डूब मनुज की मर्यादा को जो भूले ।

आधा राज्य किया वापिस आधा पर द्रोण करे शासन
था महाघोर अपमान सदा विचलित रहता था नृपति मन
अरे दुष्ट ब्राह्मण तूने मेरा अपमान किया ठहरो
समय आये पर बतला दूंगा मनको कहा धैर्य धर लो ।

गुरु-दक्षिणा

घोर कालिमा मयी निशा में पवन-प्रहार दीपका जलना
बन्द हुआ, अर्जुन का जारी रहा हाथ से भोजन करना
अनायास ही हाथ पहुँच कर भोजन मुँह में डाल रहा
अन्धकार में धनुविद्या का तदुपरांत अभ्यास रहा।

बड़े वृत्त का घड़ा अश्वत्थामा को देनेवाला द्रोण
जल ले शीघ्र पुत्र आ जाय, पक्षपाती थे गुरुवर द्रोण
द्रोण देखकर मुदित भाव से कहते, अर्जुन तेरे सम
अन्य धरा पर मिल न सकेगा, धनुविद्या में सर्वोत्तम।

राजकुमारों का दल-बल आखेट हेतु बढ़ता जाता
भरा बाण से पूरा मुँह कुत्ता उनका दौड़ा आता
अभ्यासी तू कौन ? कुशलता धनुविद्या किसने यह दी
द्रोण पूज्य गुरु मेरे, अभ्यासी ने निर्भय हो कह दी।

देख रहा क्या देव ! आज अर्जुनका मुखरा म्लान हुआ
आहत हुआ न स्वान बाण का विद्युत् गति संधान हुआ
अभ्यासी ने कहा, भूंकने लगा स्वान था आगे आकर
आहत किया न, बंदकर दिया मुँहको बाणोंकी वर्षाकर।

परिचय देता अभ्यासी—मैं एकलव्य गुरु भूल गये !
कभी सीखने गया धनुर्विद्या गुरुदेव विमुख हो गये
मैंने मान लिया था गुरु, यह मिट्टी का आचार्य बना
नतमस्तक हो ध्यान लगाकर करता हूँ अभ्यास यहाँ।

उच्च कुल जन्मा नहीं फिर देव तुम सिखला न पाये
हृदय में धर ध्यान हे गुरुदेव इतना स्वयं पाये
है समाज नियम न जिसको तोड़कर बढ़ आप पाये
लालसा थी अमिट मेरी साधना क्यों विफल जाये।

एकलव्य ! प्रसन्नता होती तुम्हारी साधना से
दक्षिणाकी प्राप्तिका अधिकार मुझको सहज तुम से
दाहिने कर का अंगूठा काट कर दे दक्षिणा तू
योग बल तेरा प्रखर साधक अडिग लक्षित हुआ तू।

फटा, जर्जर...वसन धारी काटता अपना अंगूठा
रक्त की धारा लिया निज हाथ में गुरु ने अंगूठा
देख अर्जुन ! अब तुम्हारे सम न जग में धनुर्धारी
दीखता निश्चिन्त अर्जुन, टीस अन्दर एक भारी।

हे निषाद ! महान् उन्नत हृदय तेरा निष्कलुष है
उच्च कुल अभिमान झूठा कर्म से ऊँचा मनुज है
धनुर्धारी दे रहा दायां अंगूठा नीच है वह ?
वर्ण-भेद-जहर भरा जिसके हृदय द्विज श्रेष्ठ है वह ?

विटप शृंग पर गृद्ध आहुति देखो द्रोण बिखाते हैं
साफ दीखता सभी शिष्य लख उसको उन्हें सुनाते हैं
और दीखता क्या ? पशु-पक्षी, वृक्ष, धराका सुन्दर दृश्य
द्रोण बोलते हटो देखना है जो अबतक रहा अदृश्य।

अर्जुन विटप ओर देखो गुरुदेव ! गृद्ध वह बैठा है
और देखते क्या बस पक्षी एक मात्र तो बैठा है
ध्यान लगाकर देख, गुरु ! बस ग्रीवा उसकी दीख रही
बाण चलाने का पाया आदेश, लक्ष्य की साध रही

गंगा-तट स्नान, द्रोण की जांघ मगर ने पकड़ी थी
बाण मारकर पांच शीघ्र अर्जुन ने गुरु-रक्षा की थी
अति प्रसन्न गुरु द्रोण 'ब्रम्हशिर' श्रेष्ठ अस्त्र अर्जुनको दे
बतलाया सम्पूर्ण जगत् का पूर्ण नाश निश्चय कर दे

सुनो एक आदेश मनुज के ऊपर इसे चलाना मत
मनुष्येत्तर के आक्रमण पर इसे चलाना भूलो मत
क्रम-क्रम से अर्जुन पर ममता द्रोण बढ़ाते जाते हैं
सर्वश्रेष्ठ हो धनुर्धारी अवसर वह लाते जाते हैं ।

संधि-विग्रह-मर्म

एक वर्ष उपरांत हुआ अभिषेक युधिष्ठिर राजा अब
हुई प्रसन्नता मन में धृतराष्ट्र चिंता-मुक्त थे अब
समय बीतता गया बुढ़ापे में मन मैल उभर आया
द्वेष लगा जगने सद्भावों के विनाश का क्षण आया

बेचैन विह्वल पुत्र आकर पिता सम्मुख है खड़ा
हे पूज्य ! आज्ञा दीजिये जो उचित हो वह कीजिये
किसी भांति भी यदि राज्य रहता पांडवों का सर्वदा
हम हो गये बेकार जीवन व्यर्थ नाहक संपदा।

जब आपको जन्मांध कर कर भाई ने शासन किया
अपराध क्या हमने किया जो पुत्र उनका ही खड़ा
तैयार लेने राज्य, हम क्या बस भिखारी बन मरे
कुरुवंश की रक्षा करें पितुदेव चिंता ना करें।

युग दृष्टि अपनी ओर है योद्धा समर हित साथ है
इन पांडवों को मारना, बस एक झंझाबात है
इनकी पराजय है अवश्यमभावी इतना जानिए
जो कह रहा हूँ नाथ इसको आप भूल न जाइए।

जर्जर अवस्था में पिता को सोचना फिर से पड़ा
कैसा समय है व्यर्थ ही आतंक आकर है खड़ा
क्या चैन का जीवन मिलेगा, इस समर के बाद में
जब कलह है परिवार में, क्या हो भला इस राज में।

झुककर सुयोधन कहा श्रीमान् पांडव वन चलें
उसकी व्यवस्था जिस तरह से हो कृपा निधि ही करें
बस एक बार प्रकट समय पर वे नहीं हो पायेंगे
क्या लौटने पर पैर उनके टिक कभी भी पायेंगे।

ममता प्रखर कितनी हृदय से द्रवित राजा हो चले
अपने विचारों को बदल वे दुष्टता पर आ डटे
निज धर्म का परित्याग कर ममता जलधि में डूबकर
क्या उचित अनुचित है समझना शीघ्र ही वे भूल गये।

जब पतन की आती घड़ी मति भ्रमित है सदा
उन्नत विचारों पर शिला की चोट पड़ता है सदा
सब ओर बस उल्लास पांडव को भगाने की कला
में व्यस्त कुरु-कुल-भूप, कैसा समय ने करवट लिया।

कर्णिक अमात्य से पूछ रहे थे धृष्टराष्ट्र संधि-विग्रह
कैसा मंगल सूत्र श्रेष्ठ, कांटा सम चुभता बालक यह
महाराज कर्णिकने होकर अति विनम्र यह भाव भरा
राज्य कार्य पौरुष से चलता, विनम्रता से सुयश भरा।

अवसर पाकर गिरे हुए शत्रु पर घोर प्रहार करो
अपना छिद्र छिपा, शत्रु का छिद्र ध्यान में सदा धरो
शरण आये शत्रु की हत्या भी करके सामर्थ्य बढ़ा
करो नहीं विश्वास किसी का, अपने पैरों हो खड़ा।

अर्थ कामना रखने वाले दो जन मित्र न हो सकते
वचन दिया पूरा करते जाओ साम्राज्य न रख सकते
जब जैसा अवसर आए वैसे बढ़कर ऐश्वर्य सम्भाल
शत्रु बना हुआ है शासक , कर उपयोग सुनिश्चित चाल



लाक्षा-गृह

धन धान्य से परिपूर्ण नगरी हुई ओझल आज से
पांडव नगर से निकलते कुरुराज के आदेश से
आलोक जीवन का भयंकर कालिमा मे डूबता
आनन्द मंगल हस्तिनापुर का कलंकित हो चला ।

है कौन जो उस अग्नि से बचाएगा भला
कुरुराज़ क्रोधित हो जलाने को उसे देता जला
पति स्वर्गवासी पाँच पुत्रों को सुरक्षा भार दे
कुरुराज़के आक्रोश बस वनवासिनी कुल भामिनी ।

पुरोचन की कला से घर बना था लाह का ऐसा
ज़लाना शीघ्र सम्भव था भरा ऐश्वर्य था कैसा ?
विदुर ने शिल्पी-माध्यम से बताई मार्ग धरती तल
समय पर आग लग जाय निर्दशित मार्ग से तू चल ।

खबर सब ओर लाक्षागृह दहककर खाक खाक हुआ ।
भयंकर अग्नि से इन पांडवों के प्राणोंका अन्त हुआ।
विजन वन में निकल भूगर्भ से पांडव चले ऊपर
सघन वनवास का जीवन भयंकर वन-पशु सहचर ।

भयंकर काल से आक्रांत पांडव का जलाना था
महा विकराल था षड्यन्त्र जीवन शेष होना था
लगी जब आग, भागे भूमि तल के बीच से पांडव
जले वे सब जलाने का बनाये लाह के जो घर।

जलाशय खोजने जब भीम साहस से चला आगे
हिरण, चातक, सरीखे जीव-जन्तु देखकर मग में
सहम कर सोचने लगता, सबों का हक है जीने का
किया है कौन-सा अपराध जो हम जी नहीं सकते।

चले जाते धरम की राह, पांडव-पुत्र साहस से
मिले ऋषिराज धर्मधुरीन व्यास महान आरत से
चरण पर लोट कर पांडव जनों ने शिष्टता बरती
ऋषि ने भावना प्रेरित प्रबोधन शुभ प्रशंसा की।

सुनो पांडव तनय कोई न रहता पुण्यमय शाश्वत
महामानव भी सहता वेदना जब क्लेश आता है
बदलते इस समय का सामना साहस से करना है
तुम्हें ब्राह्मण का धारण वेश वर्षों तक गुजरना है।

हृदय में भाव हो ऊँचा न दुश्मन जीत पाएगा
समय वह आ रहा जब हस्तिनापुर स्वर्ग तेरा है
प्रवाहों में चला जो हरित वृक्ष पलास की गति से
बताए कौन किस स्थल धरा पर जम सके फिर से

धरा पर शेष क्या रहता निरन्तर वेदना ही है
कहो कुरुराज तेरे भाग्य में भी वेदना ही है
न काटो हाथ अपने हाथ से अपनी निशानी को
मिटा तुमको न दे पापी मिटाना चाहते जिसको।

हिडिम्बा

बढ़ता गया भीम, निर्जन वन पांडव जन बढ़ते जाते हैं
विजन देश अति शुष्क, क्लान्त अवयव धीमे पड़ते जाते हैं
माँ कुन्ती को प्यास भीम आगे बढ़ दौड़ लगाता है
भींगो वस्त्र को जल की धारा जननी प्यास बुझाता है

वीर्यवन्त राक्षस हिडिम्ब को मानव तन की गंध लगी
देख हिडिम्बा बहन, किधर मानव जिसकी मतिमंद हुई
सफल करो आखेट मनुज तन प्रस्तुत होने वाला है
अनुजा दौड़ी चकित महाबली पौरुष विक्रम वाला है।

मां ! तप्त स्वर्ण भुजबलशाली धरती पर सन्मुख कौन बता
कुन्ती कहती भद्रे ! है मेरा पुत्र भीम मन्तव्य बता
विजन देश राक्षस का शासन, नभ से ऊपर ले जाऊँ
निर्भय हो जीवन यापन करने का अवसर दे पाऊँ।

हँसा भीम राक्षसी तुम्हारे अग्रज का भय मुझे नहीं
रति-याचिका कोमलांगिनी पर मां का था आक्रोश नहीं
लांघ प्रतीक्षा की सीमा आ गया हिडिम्ब गरजता है
हे कुलक्षणे ! वेश बदल तू भूल गयी तन नर का है।

तुझे मार अभी स्वर्ग देता हूँ भेज सम्भल जाओ
टपक बीच में पड़ा भीम रति के प्रांगण से हट जाओ
परम सुन्दरी देव कुमारी कह मां तन सहलाती है
तीव्र वासना की लहरों से वेसुध होती जाती है।

जंग छिड़ गया, बल प्रयोग झंझावातों-सा स्वर गूँजा
तीव्र प्रहारों से राक्षस का प्राण अन्त, क्रन्दन गूँजा
चला पांडवों का दल पीछा करती चली हिडिम्बा भी
निश्चय किया न सफल याचना जीवन आगे शेष नहीं।

मान लिया जब पति त्यागना सम्भव कभी न हो सकता
अटल देख आग्रह, माता हो गयो द्रवित पनपी ममता
धर्मराज ने कहा, हिडिम्बे ! जबतक हो संतान नहीं
तब तक पति तुम्हारा होगा भीम शेष की चाह नहीं।

सन्ध्या तक तेरेसंग होगा, पर निशीथ में मेरे पास
महाबली राक्षस की भगिनी ने स्वीकार किया सोल्लास
हिमगिरी शिखर कन्दराओं में फल फूलों का मृदु मधुवन
लगा विचरने भीम प्रेयसी आलिंगन से प्रमुदित मन।

गर्भवती हो गयी हिडिम्बा, घटोत्कच का जन्म हुआ
प्रेमालिंगन का क्रम टूटा, रति-क्रीड़ा का अन्त हुआ
घटोत्कच ने कुन्ती सहित पांडवों का अभिवादन कर
किया पूर्ण आश्वस्त समय पर सेवा हित होगा तत्पर।

बढ़ती गयो हिडिम्बा हिमगिरी बीच पुत्र संग चला गया
उमड़ पड़ा वात्सल्य पांडवों के नयनों में भाव नया
विजन वनों में कोई अनजाना दिल सहला जाता है
रंग महल से हृदय तोड़ अपना कोई चल जाता है।

बकासुर

भिक्षाटन कर जीवन यापन राजकुमारों का सौभाग्य
समय अलक्षित पता न चलता, कब किसका कैसा है भाग्य
दूर-दूर तक नगर घूम कर ले आते भीक्षा सब लोग
माँ कुन्ती आधा दे देती भीमसेन को बाकी लोग।

जान न पाये दुर्योधन इस नगरी में पांडव रहता है
महामूर्ख अत्याचारो कोई कुकर्म भी कर सकता है
लुकते-छिपते समय बिताने की आदत पड़ती जाती है
सिंहनाद करने वाला गीदड़-सा दिन गिनता रहता है।

चिंता का विषय जान माँ कुन्ती पूछ रही क्या संकट है
असहाय विप्र कह रहा हृदय में चुभता तीखा कंटक है
माँ नगर छोड़कर चले गये सब क्षात्र-धर्म पालनकर्त्ता
भयसे आंतंकित जन समाज, फिर कौन नगर रक्षा करता।

विगत बरस-तेरह से माँ बस राक्षस ही राक्षस सब ओर
जिधर देख लो भरा हुआ आतंक हृदय में भीषण शोर
नाम बकासुर राक्षस का जो कुछ दिन पहले से आया
क्या बतलाऊँ कितने मानव तन को पापी ने खाया।

सब ने एक विचार हृदय में लाकर कुछ करना चाहा
आठ दिनों में एक बार भोजन घर पहुँचाना चाहा
अन्न, फूल-फल नाना भांति मदिरा कलस साथ लेकर
दो बैलों से शकट चलाता हृदय प्रकंपित भय लेकर।

साथ एक मानव का पुतला वाहक बनकर जाता है
भूखा राक्षस सबकुछ खा उस वाहक को खा जाता है
मैं न भेज सकता मानव को राक्षस सम्मुख खरीदकर
बस अपना ही यह तन है जिसके अर्पणका यह अवसर।

स्नेहमयी पत्नी, छोटा बालक, पुत्री तैयार सभी
किसे भेजकर अपनी रक्षा करूँ, पाप की घड़ी अभी
मैं चल जाऊँ सभी हमारे घर वाले मिट जाते हैं
सोच रहा हूँ सब मिल जायें, रुदनमय न विहान रहे।

माँ कुन्ती ने कहा, न चिंता करो सुनो ब्राह्मण भोले
मेरे पाँच पुत्र हैं राक्षस सम्मुख एक आज दे दे
चार रहेंगे पुत्र, न सुनी होगी गोद न चिन्ता कर
पुत्र रत्न वलिदान धर्महित, गर्वोन्नत माता का सर।

माँ पर थोड़े क्रुद्ध युधिष्ठिर, ममता से आप्लावित मन
भीमसेन के बल सो लेता सुख की नींद न चिंता मन
एक बार आँखों से ओझल इसे बनाना चाह रही
चिता सजाती हमलोगोंकी माँ क्या करना चाह रही ?

माँ का हृदय विशाल बड़े साहस से क्षत्राणी बोली
जिसके घर में रहा समय पर गर उसकी सेवा ना की
जान आज जब जाने को है उसे बचाने मैं न चलूं
कृतघ्नता का लगे पाप इस जीवन से फिर क्या ले लूँ।

क्यों रे विलम्ब हो गया, बताओ अभिमानी तू सोता है
कैसे साहस होता धीरज धर अविचल गतिसे बैठा है
तेरी है बारी आज, तुम्हारा अन्त तुम्हें ले आया है
कर दी विलम्ब तो क्षुधा-वेग कुछ तीव्र और हो आया है।

मुँह फेर भीम खा रहे शकट पर जो भी है सामान धरा
खाता-पीता मुस्काता है राक्षस ने आ थप्पर मारा
भोजन कर लिया समाप्त भीम अभिमानीको संतोष मिला
आ लड़ले वीर बहादुर कह बस कूद पड़ा उन्मुक्त मना।

दो-चार थपकियाँ मार गिराया राक्षस लोटा धरती पर
रे रौंद दिया छाती उसकी अपदस्थ निशाचर धरती पर
बकासुर के हनन का श्रेय कुंती के तनय को कब
पछाड़ा भीम ने साहस से, फैले इस अनय को जब।

आता है वीर बहादुर जो उसकी पूजा घर-घर होती
भय से भागा जो फिरता है निंदा सदैव उसकी होती
जिस धरती पर मानव समाज का शासक निशिचर होता है
उस भूतल का अभिशाप गगनचुंबी परिलक्षित होता है।

वनवासी पांडव विकल वेदना सहकर धर्म निभाते हैं
आंतकित जनहित प्राण हथेली पर ले समर मचाते हैं
श्रम पर जी लेते औरों के उनके जीवन का मोल नहीं
याचक हित अपना अर्पित कर दे जीवन, संशय लेश नहीं।

नगर में नाम सुन कर कांपते थे लोग जिसका
धरा पर एक-छत्र दल रहा अकंटक राज्य जिसका
तनय कुन्ती के हाथों वह धराशायी हुआ है
घसीटे आ गया सुविशाल काया, हत पड़ा है।

★

★

द्रौपदी-स्वयंबर

दूर-दूर के भूप युवक सम्राट साहसी आए हैं
अपने कुल के गौरव का गुणगान सुनाते आए हैं
धृष्टद्युम्न की हुई घोषणा चलें धनुर्धारी इस ओर
बहन द्रौपदी के स्वयंबर का विधिवत शुभ आरम्भ शोर।

दुर्योधन रिपु शल्य न जाने कितने सूर वीर आए
धनुष उठाते कदम बढ़ाते असफल हो पीछे आए
एक-एक कर राजकुमारों का हो गया दम्भ सब चूर
धनुष उठाना ही मुश्किल फिर लक्ष्य भेदना तो है दूर।

क्षात्र धर्म को गर्वित सेना सफल न हो पायी इस बार
कोस रहे दुर्भाग्य जलधि को कर न सका कोई भी पार
द्रुपद-हृदय आक्रोश, शोक, व्याकुल तन, मन हतचेत खड़ा
सौभाग्यशालिनी हो न सकी कन्या के आगे प्रश्न खड़ा।

आजीवन रहे कुमारी यह दुर्भाग्य महा भीषण होगा
हो गया शेष आनन्द, अश्रु आप्लावित उभय नयन होगा
वापस जाने की तैयारी आयोजन रहा अधूरा ही
आए थे सब साहस बटोर लौटेंगे पूरा कर के ही

जाने क्या है लिखा भाग्य जो अब तक विध रहा
राजन् ब्राह्मण कुल का बालक साहस करना चाह रहा
आज्ञा हो नृपति तब ब्राह्मण कुल किशोर कुछ दिखला दे
लक्ष्य वेध दे मिले प्रेयसी अंको में भर सहला दे।

आक्रोश हृदय में भरा, राजपूतों का रंग निराला था
थे समझ रहे क्षत्रित्व देश का डूब चला नभ काला था
एक विप्रभी समर ठानने का साहस जब है कर लेता
तो जीवन हो वृथा श्रेयस्कर मरण अंक में भर लेता।

सब ओर विरोधाभास, कहीं कहता कोई हो जाने दो
राजाका प्राण है जो आये कुल श्रेष्ठ उसे आ जाने दो
नृपतिका सुन आदेश विप्रका वेश लिये अर्जुन चलता है
धनुका समुचित संधान लक्ष्य विंध गया दीख पड़ता है।

सब ओर विजय रणघोष, कौन है, कहां रूपसी जायगी?
क्षत्रित्व पराजित हुआ, धरा पर विपदा दौड़ी आयगी
पाते जो कुछ पांचों पांडव मिलकर करते उपयोग सदा
माँ ने कह दिया सुहाग सबों के साथ जुटे हे प्रियवंदा।

जंगल में विपदा रहती थी, पांडव सभीत जी लेते थे
कब क्या हो जाय आशंका, काफी सतर्क हो जीते थे
सोने-धोने के दिन में भी आ जाता है सौभाग्य कभी
जलधिमें तैर रहा तिनका भी पा जाता ठहराव कभी।

है कौन जानता आज द्रौपदी के ललाट का रक्तिम धन
इतिहास गढ़ेगा नया, बनेगा जीवन का अभिनव बंधन
है कुरुक्षेत्र प्यासा, धरती पर महाप्रलय आने वाला
नियति की निर्मम कथा, जगत्से सब कोई जाने वाला।

मंदपाल

मंदपाल ऋषि कठिन तपस्याके उपरांत शिखर पर आज
निःसंतान रहे लेकिन, अवरुद्ध हो रहा पुण्य काज
शार्ङ्गक पक्षीके रूप पुनः धारण कर जोवन धरती पर
संतान हेतु प्रेयसी जरिता का आलिंगन बांहों में भर ।

अंडों की संख्या चार सफल दाम्पत्य आज लहराता है
पर कौन नियतिको जान सका, कब क्रूर समय चल आता है
लपिता-सी मिली सुन्दरो पंखोंको पसार अभिसार किया
स्नेहिल बाँहोंमें डाल सबोंको त्याग प्रेयसी संग चला ।

जरिता बची इधर, खण्डव वन क्रूर जंगली छाया में
भगवान कृष्ण अर्जुनने सोचा अग्निदाह हो इस उपवनमें
जितने भी भवन पुराने हैं, है कुटिल जनों का जो डेरा
सब साफ मुक्त हो जायगा, भूखंड बनेगा स्वर्ग नया ।

लग गयी आग, चल रही लपट जरिता सभीत सहलाती है
चारों लघु शावक को माता छातो से पुनः लगाती है
रे क्रूर पिता चल गया, प्रेयसी के आँचल की छाया में
मैं हूँ समर्थ इतना न सखे, चल सकूँ संग लेकर नभ में ।

बच्चों ने कहा, न शोक करो माता ! तुम अपनी जान बचा
फिर अपने जीवन को सार्थक करने हेतु गार्हस्थ्य बसा
हमलोग चले तो क्या होगा, कुल की मर्यादा बचती है
अब समय नहीं है माँ ! उड़ जा लपटें मड़राती चलती हैं।

पुनः बोलता गया, अन्यथा पांचाली को छलना है
पंचपति धारण करने वाली पर माया रचना है
कभी विरोध हुआ आपस में बागी तो फिर आयेंगे
टूट जायगा दल-दल पूरा, ध्येय प्राप्त कर पायेंगे।

कहा कर्ण ने दुर्योधन ! पर आज हो गया उड़ता है
छोटा था तब भी उनको साहस से जीते देखा है
बस एक मार्ग अब बचता है बेधड़क अभी हो तैयारी
सारा सेना के साथ घेरकर शांत करें दुश्मन भारी

राजाका हृदय दहलता था, भीषण भविष्य था देख रहा
आ गये भीष्म होकर विनम्र कुछ समझाया सुचि सूत्र कहा
हे धृतराष्ट्र ! क्या परिजन हैं, पांडव क्या अपने नहीं रहे
क्या उचित नहीं आधा दे दें हम राज्य शांत हो पुनः रहें।

कितनी बदनामी फैल रही, सब बोल रहे लाक्ष गृह में
राजा ही चाह रहे थे ले लें प्राण पांडवों के क्षण में
अपनी मर्यादा का धरना है ध्यान, न भावुक होने का
है समय करो संकल्प हो शांतिसे नियम ढंगसे जीने का।

हर्षित मन बोले द्रोण, नृपति! जो कहा भीष्मने है करना
कुछ भी इसके प्रतिकूल करें, अनभल होगा जाने इतना
फिर विदुर प्रेम बस कहने लगे, बुलाना उन्हें जरूरी है
जो गया बीत कर त्याग उसे संशोधन मात्र जरूरी है।

राजा का हृदय आज मर्यादा की सीमा के बाहर था
बेटों का प्यार अपार, अनर्गल मंत्रणाओं में डूबा था
पर श्रेष्ठ और कुल के भूषण के महामंत्र को जान भला
कुछ और कियेका कौन करे साहस, दम किसमें आज भला।

हैं विदुर कुशल नीति पुराण के आगमागम सबके ज्ञाता
तज उन्हें पांडवों को लाने पांचाल अन्य क्योंकर जाता
सारी तैयारी साथ लिये पांचाल पहुँच सम्मान सहित
वे द्रुपद सभाले अनुनय विनय विदुर कर रहे विराग सहित।

पर आज द्रुपदको संशय है, क्या होगा जान सिहरते हैं
जो धोखा देता आया है, उसकी बातों से डरते हैं
पर शस्त्र नियम का ध्यान धरे कहते हैं पांडव ही जाने
तब कुन्ती माताके सम्मुख झुककर बोले स्वर पहचाने।

माता ने कहा, विदुर तू ही जब तुष्ट और विश्वस्त हुए
तो और सोचना ही क्या बाकी सानन्द अभी हम साथ चलें
बाजे-गाजे के साथ पांडवों की आ रही सवारी है
सर्वत धूम, उल्लास, कौरवोंके दिल में भय भारी है।

स्वागत होता सब ओर, घोर सहकर आ रहे यातना हैं
पांचाली देवी साथ द्रुपद की अनुकम्पा की छाया है
बिन आँखोंके ही देख नृपति समझाते हैं सुन लो बालक
पांडव सदैव हितकारी थे युग सेवक थे आज्ञापालक।

क्या भेद हमारे लिए तुम्हीं तो कुल भूषण हो राज करो
मेरे पुत्रोंकी कुटिल व्यवस्था का शाश्वत मत ध्यान धरो
आधा अब राज तुम्हारा है, हे धर्मराज तुम राजा हो
वह खण्डव प्रस्थ पूर्वजोंकी थी राजधानी फिरसे वह हो।
समृद्ध नगर को बना, पुत्र सानन्द राज भरपूर करो
जो बीत गया उसकी चिंता से अपने को मत खिन्न करो
सब पांडव सहित द्रुपदबाला कुन्ती माता चल पड़ी आज
प्राचीन नगर को इंद्रप्रस्थ दे नाम कर सुखद राज।

कुल छत्तीस वर्षोंका जीवन भर गया नगर धन-धान्यपूर्ण
क्या कोई दुश्मन आयेगा, होगा उसका रे दर्प चूर्ण
वनवासी पांडव आज समय की बदली दशा देखते हैं
सब लोग स्वस्थ, आनंदपूर्ण, निर्भय सानन्द विचरते हैं।

इन्द्रप्रस्थ

संवाद हस्तिनापुर तक भी आ गया, विदुर आकर बोले
राजन ! दुर्भाग्य द्रौपदी कुल देवी अनाथ घर-घर डोले
अर्जुनने अद्भुत कार्य किया वे सब अपने कुल नायक हैं
कितने सुशील, गुणवान, राज्यकी गति संभालने लायक हैं।

कितना कठोर संवाद हृदय को टुकड़े-टुकड़े करता है
राजा हत्चेत उदास, न ऊपर भाव प्रलक्षित होता है
अति मग्न वेश बोले स्वागत कर पांडव जनको लाना है
जो हुआ खेद उसपर आगे का ध्यान हमें पर देना है

अपने कुल का सौभाग्य भतीजे अर्जुन ने है पनपाया
वह कौन न जो धरती पर सुन संवाद हर्ष से इठलाया
आ गया कुमारों का दल, दुर्योधन विषाद में डूबा है
संताप हृदय में भरा हुआ जीवन कुछ उबा-उबा है।

आज्ञा पाकर कुरुवंश-प्रमुखका आज सुयोधन डोल रहा
किस भांति होगा नाथ पांडवों का ऐसा कुछ बोल रहा
संतोष न जीवन में लाता, नित स्वार्थ भावना ले जीता
दुर्योधनका यह दुषित भाव था जहर न जन-मानस पीता।

था साथ कर्ण क्रोधित पागल-सा उथल-पुथलकी तैयारी
मन से कर रहा सदैव विधाता मंगल कर यश दे भारी
पहले दुर्योधन है कहता हे पिता ! द्रुपद को लूँगा साथ
कौन सहायक बोल रहेगा विजय सर्वदा अपने हाथ

जरिता स्नेहिल नारी मां का रखती है हृदय महान् आज
चूहोंके बिलमें शरण मिलो जीवन बच रहा विशाल राज
लपटें जा न सकेगो अंदर, घोर नि·ाशा मिट जायगी
मैं भी पुन: लौट आकर अपने बच्चों को पा जायगी।

बच्चों का भारी विरोध, माँ ! चलो भाग तू त्याग मोह
क्या होगा कर चिंता न कभी है समय नहीं, अब वृथा न रूक
माँ गयी दौड़कर उड़ती हुई आकाश मार्ग से रो-रो कर
बच्चे रह गये अनाथ सभी उलटें-पलटे धीरज खोकर

भीषण अग्निकांड दुष्ट जन वन्य पशु हिंसक मरते
जो अबतक व्याप्त पाप छाया, हो गयी ध्वस्त इसके चलते
आ गयी लपटतो वह्नि ज्वाल की शिखा पंख फहराती-सी
शावक किशोर असमर्थ साहसी जूझ गये अंगारों से

हे अग्निदेव ! तेरी अनुकंपा, जला सको तो शीघ्र जला
गर छोड़ सको जी सकता हूँ, रह सकता हूँ बिन पंख भला
सुन बच्चे को मीठी पुकार देवत्व वह्निन का जाग उठा
हे वत्स तुम्हारा जीवन इन लपटों से नष्ट न हो सकता

मिट गयी भयंकर अग्नि लता, सब ओर घोर सन्नाटा था
ज़रिता घबरायी-सी लौटी बालक चारों लहराता था
लपटों से बचकर रहे देख आश्वस्त, ईश की अनुकंपा
आज निपूति लौट रही, थी मेरे मन ऐसी शंका

ऋषि मंदपाल लपिता से गलबांही कर के हो गये सन्न
क्या होगा मेरे बच्चों का ममता अली अति खिन्न वदन
मैं आज देखना चाह रहा शावक जीते या मरते हैं
आ गयी दहकती आग भयानक कष्ट हाय वे सहते हैं।

लपिता भावों से दूर डांटती रही चले जाना चाहो
तो चलो भाग जरिता से तेरा ध्यान न हटता है बोलो
क्यों आये मेरे साथ हृदय में लगन नहीं या जब तेरे
आओ या जाओ भाग, नहीं अंतर पड़ता मन में मेरे।

शार्ङ्क पक्षी का रूप धरे उड़ते आये हैं मंदपाल
जरिता बच्चों से उलझ रही, कितने चंचल आनन्द ग्राम
मन में उन्माद न आज रहा, होकर विनम्र पूछा जरिते
है कुशल सभी तो कैसे प्रभु ने बचा लिया लौ की गति से।

बेकार तुम्हारी प्रवंचना है पुरुष वासना के याचक
क्या व्यर्थ बहाते हो आँसू लपिता के चरणों के सेवक
अब मंदपाल की व्यथा भरो आँखों में आती नींद नहीं
क्या अपराधी हूँ जान न पाया, बातों में सान्निध्य नहीं।

कहते जाते हैं मन्दपाल नारी है पति की प्रियतमा
पर आने पर संतान छीनती जाती है मन मोहकता
वात्सल्य भरा आंचल कामुक की बाट जोहना क्या जाने
निष्ठ नुत्र सुचि संतान गोद, आलिंगित होना क्या जाने।

लिप्सा

धर्मराज ने इन्द्रप्रस्थ में राज्य किया साहस के साथ
जनहित का परिणाम भला है यश सौरभ आया है हाथ
सखा कृष्ण को आमंत्रित कर धर्मराज ने प्रश्न किया
राजसूय करना चाहूँ शुभ अभिलाषा अभिव्यक्त किया ।

अनुमोदन कर दिया कृष्ण ने धर्मराज को बतलाया
जरासंध का बध आवश्यक प्रमुख मर्म यह समझाया
कही कहानी वही पुरानी उग्रसेन की कामस की
लगातार लड़ कर मथुरा से दूर द्वारिका जाने की ।

अन्य सभी स्वीकार करें सम्राट् तुम्हें यह हो सकता
जरासंध का ही विरोध पर सब पर छाया दे देता
उसे न जब तक कर परास्त आगे का कोई काम नहीं
जीवन है अनमोल सुयश से बढ़ उपलब्ध अन्य नहीं ।

धर्मराज सभ्रान्त शान्ति के अग्र दूत सेनानी हैं
निष्फल जाय न कर्म सोचते बहुत बार श्रुतिज्ञानी हैं
ठीक नहीं जंचता है केशव ! धरती पर लोहू लोटे
अनभल हो आक्रोश बढ़े मन में पल्लवित भाव खोटे ।

भीम एक बलवान भुजा अर्जुन भी एक सहारा है
रण में झोंक उभय नायक को क्या ज़गती ले लेना है
मिटे चैन से दिवस चाँदिनी शितलता फैलाती है
रक्तपात उपरान्त सुगति जग में किसको मिल पाती है ।

भीमराज सुन रहे भला जीवन क्या है बेकार बना
भेड़ गीदड़ों की भांति जी लेना क्या है ध्येय बना
जब तक क्षात्र-धर्म हित सेनानी संग्राम न करता है
जीता है बेकार धरा पर व्यर्थ निरर्थक मरता है।

अर्जुन ने भी कहा न धरती पर जीना साकार कभी
साहस पूर्वक जी न सके तो मानव तन बेकार सभी
साधन रहते भी मानव बेकार पड़ा रह सकता है
साहस जब तक साथ नहीं निस्तेज निकम्मा रहता है।

कृष्ण हृदय में सोच छियासी राजकुमारों को कर कैद
जरासंध जी रहा समय अनुकूल उचित है उसका बध
बलि जो देना चाह रहा सौ-सौ राजाओं की जगती
है अनर्थ बेकार उसे कह दे कोई चाहे भगती।

सब लोगों की बात जान कर धर्मराज साहस लेकर
आगे बढ़ने की उत्कंठा से बोले होगा प्रियवर
राजसूय कर यज्ञ जगत में यश फैलाना आवश्यक
हों सम्राट् भरे धरती फैले सौरभ परमावश्यक।

जो पांडव वनवासी होकर जी लेते थे लुक-छिप कर
समय बदलते देख क्रान्ति की करे योजना प्रलयंकर
कुछ पाने पर तोष विश्व में लिप्सा किसको थोड़ी है
श्रेष्ठ धुरन्धर पंडित गुरु जन अक्ल सबों की भोंड़ी है।

कहा कृष्ण ने समर बीच संघर्ष भयानक मगध राज से
सैन्य शक्ति सामर्थ्य अतुल रण जाए वृथा उस राक्षस से
परिव्राजक धर रूप पांडवों सहित कृष्ण ज़ा मिलता है
मल्ल युद्ध प्रस्ताव भीम के साथ मगध पति लड़ता है।

द्वादश दिवस समाप्त दिवस तेरहवाँ भी जारी संघर्ष
दो टुकड़ों मैं गिरा अन्त में जरासंध पांडव अधिहर्ष
धरा-धाम पर महाक्रूर का भय छाया रहता था
मिटी कालिमा, फटा मेघ जो मंडराया करता था।



शिशुपाल-वध

धर्मराज पा रहे संरण, भीष्म पितामह ने समझाया
राजसूय में आगंतुक कुल श्रेष्ठ कृष्ण यह मर्म बताया
सर्वश्रेष्ठ सम्मान कृष्ण को देना परमावश्यक है
अन्य जनोंको समुचित सेवा, सब भांति सब रक्षक हैं ।

निश्चय अडिग कृष्ण मर्यादित हुए प्रथम आयोजन में
इर्ष्या-भाव पनपने लगता कुटिल मानवों के मन में
हो उन्मत्त शिशुपाल क्रोधसे पागल होकर बोल उठा
धर्मराज धिक्कार तुझे. ऐसे अवसर पर व्यंग्य किया ।

भूल गये अपने कुल भूषण, सेनानी अवतारों को
यह सम्मान दिया तूने ऐसे नगण्य चरवाहे को
क्या क्षमता पायी बोलो कितना अपमान हमारा है
रे भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा कुरुराज कर्णसे प्यारा है ।

तेरा कुल भूषण एक नहीं, पांडव कुलका अभिमान नहीं
सबको तिलांजलि दे, पूजो इस बच्चेको यह ध्यान नहीं
जो कुछ था अबतक शेष, तुम्हारे इसी कर्म से शेष हुआ
पांडव कुल भूषण आज वंशका कांटा निश्चित सिद्ध हुआ।

आये भय से क्या सब राजा, तेरी अधीनता मान यहाँ
सुनते थे धर्मनीति नायक, इससे जन मानस आज यहाँ
पर अपने हाथों आज खून तूने कर डाला, महामूर्ख ।
तेरा संचालक भीष्म डुबायेगा तुझको तू जाग मूर्ख ।

िकसका सम्मान प्रथम देना उसकी पहचान न की तूने
क्या है साम्राज्य कहीं उसका, रण-कौशल क्या देखा तूने
इतनी बचपना दिखाते हो, हे धर्मराज ! तू डूब मरो
सब को मत लेकर चलो साथ, अपने कुकर्म से स्वयं डरो।

सम्मान मिला रे कृष्ण तुम्हें, यह मर्यादा आघात हुआ।
सुन्दर वस्तु दी अंधे को संगक्लीब षोडशी प्रणय हुआ
जितने भी वंशज हैं तेरे सब एक रंग के लगते हैं
राजा कुल लक्षण एक नहीं, सब व्यर्थ अकड़ते रहते हैं।

ाब नहीं सह्य मुझको, तेरी यह नगरी रही पिशाचों की
ाजा जितने आये लौटेंगे, व्यर्थ जान व्यय लाखों की
ोई न प्रयोजन आज सफल तुमको न तनिक सम्मान मिला
धर्मराज बेकार नाम, असमय दुर्भाग्य-प्रसून खिला।

आश्वस्त रहें हे नृपति, बोलते नम्र युधिष्ठिर शोकमना
अतिकष्ट हुआ जो आज भूल जाये उसको उद्विग्नमना
जो अब तक जलता रहा कृष्ण से दो बातों से क्या सुधरे
ल पड़ा व्यंग्य करता, थोड़े से और जनों को संग लिये।

म न बन्द यहाँ होता, हो रही अनर्गल बातें हैं
बोल रहा है ऐंठ-ऐंठ केशव मन में अकुलाते हैं
युद्ध मात्र बच रहा, सुदर्शन चक्र भयानक चलता है
भंजित दो भागों में, शिशुपाल अंत हो जाता है।

आशंका

शुभ यज्ञ सफल हो गया, भरा उत्साह अमंगल दूर हुआ
आश्रम से आकर व्यास देव ने उचित मर्म उपदेश दिया
हे धर्मराज तेरी मर्यादा से मर्यादित जन अनेक
शुभ कार्य ध्येय मंगल भविष्य जगती सेवा गंतव्य एक।

चरणों पर लोट युधिष्ठिर ने गम्भीर प्रश्न कुछ आज किये
कुल भूषण बतलाएं आशंका क्या भविष्य की आप किये
शिशुपाल देह तज गया, कहो क्या और अमंगल बाकी है
धरती पर शान्ति का प्रभाव होगा या अनभल बाकी है।

भगवान व्यास अति शान्त शौम्य स्थित प्रज्ञा की बेदी पर
कह रहे वचन सुन धर्मराज तेरह वर्षों का महा कष्ट
इस धरती पर होगा अधर्म भाई का गला भाई घोंटे
ऐसा ही क्षण आने वाला चिन्ता न व्यर्थ की कभी करे

तेरे बन्धुगण एक ओर कौरव की एक अलग टोली
इस कुरुक्षेत्र में पागल हो खेलेंगे लाल रक्त होली
इस महा खंड में क्षात्र-धर्म पर भारी विपदा आयगी
जो दीख रही सम्पन्न धरा वह लपट बीच मिट जायगी।

साहस न कभी खोना सुन लो हे वत्स धर्म जब साथ रहे
फिर जगती की सारी सेना उसको न पराजित कभी करे
चल रहा आज अब और न कहने का अवसर यह भाता है
जिसकी आशंका मन में है वह अविचल आने वाला है।

सुन चकित युधिष्ठिर चौंक पड़े कुल भूषणकी वाणी कठोर
हूं बड़ा भाई जब जान लिया, सुन लो बंधुगण हृदय खोल
अर्जुनने कहा न क्लेष करो, तुम डटे रहो हे श्रेष्ठ सखा
दुर्दिन जो आयेगा सन्मुख, वह इन हाथों से जाय टला

मैं सदा रहूंगा शांत, न क्रोधित होने का अवसर होगा
आक्रोश बुलाता आपत है, क्रोधित न कभी यह नर होगा
इस ओर प्रतिज्ञा धर्मराज कर रहे धर्म फ़ैलाने की !
उस ओर जल रहा दुर्योधन लिप्सा साम्राज्य बढ़ाने की।

चिंतित देखा दुर्योधन को, शकुनी ने पूछा वत्स कहो
धरती पर क्या न तुम्हारा है, फिर मन मलिन क्यों बात कहो
दुर्योधन क्रोध प्रकंपित हो गरजा हे मामा सुन लेना
अपमान मिले जब जीवनमें बचता पशु समझो जो लेना ।

जब क्षात्रजनोंके बीच, कीट सम काट दिया शिशुपाल गया
सब ओर रहे सब मौन, नहीं विद्रोह वचन कोई बोला
तू क्या कहते सर झुका अगर जी लेना होता धर्म कभी
तो जान हथेली पर लेकर मर जाते क्यों नर श्रेष्ठ सभी

बदला न कभी मैं ले पाया, उस महाप्रलय की बेला का
धिक्कार मुझे सर झुका हुआ बंधु बांधव जन-परिजन का
जबतक न पराजित करूँ उसे पांडव न अधीन हमारे हों
हे भगवन सफल न यह जीवन, क्यों नारकीय बाकी क्षण हों

शकुनी मामा ने आज सुयोधन को जलते तपते देखा
आक्रोश चतुर्दिक फैल रहा चलती साँसे टेढ़ी रेखा
तो सुनो मार्ग बतलाता हूँ कुछ मर्म बताये जाता हूँ
यह असफल होगा कभी नहीं विश्वास दिलाये जाता हूँ।

रे धर्मराज को द्यूत-कला की तीव्र लालसा रहती है
सब धर्म भूल वह जाता है जब स्नेह निमन्त्रण पाता है
लेकिन है नादान दांव पर उसे फंसाना है आसान
राज्य-मुकुट वैभव आदि वह हार जाएगा ऐसा मान।

रे एक बुन्द भी खून बहाना धरती पर होगा बेकार
दाँव पेंच की सफल योजना, शत्रु की निश्चित है हार
बन कर तेरा प्रतिनिधि रण नीति दिखला दूं उनको
शकुनी मेरा नाम स्मरण रहे, न विस्मृत हो उनको।



चीर-हरण

धृतराष्ट्र के पास पहुँच कर शकुनी ने संवाद दिया
दुर्योधन था साथ, अलक्षित करके उसे विलाप किया
हे राजन ! दुःख की पीड़ा से दुर्योधन जलता रहता है
महाराज निश्चिन्त न शोभा इस अवसर पर देता है ।

गले लगाया दुर्योधन को धृतराष्ट्र ने कहे वचन
वेद-विज्ञ, रणवीर, सफल नायक समर्थ सब जन-परिजन
करते हैं सम्मान कहीं भी है अभाव का लेश नहीं
आज प्रगति की बेला में परिलक्षित कोई क्लेष नहीं ।

दुर्योधन ने कहा, पांडवों का वैभव है फैल रहा
इन्द्र-प्रस्थ जाकर देखा है, हीरा मोती खेल रहा
है कितना सम्पन्न, सबों पर तानाशाही रखता है
पार्श्ववर्ती जन-साधारण राजा सब उससे डरता है ।

क्षात्र-धर्म में तोष नहीं, भय और दया का लेश नहीं
जब तक न पराजित उन्हे करूँ, जोवन परितृप्ति शेष नहीं
हम आज प्रगति की चाह करें, शत्रु पर भोषण वार करें
जैसे हो प्रलय प्रहार करें, चुप बैठ न मौन प्रलाप करें ।

दुर्योधन ! सुन धर्मराज ईर्ष्या न किसी से करता है
वैभव उसका अपना मानो, वह वृथा तंग कब करता है
ईर्ष्या करने पर महाशोक अपनों से वैर मौत लाती
उपदेशों की यह माला, दुर्योधन हृदय न टिक पाती ।

क्रुद्ध हृदय दुर्योधन कहता, वृहस्पति की वाणी है
क्षमा और संतोष न राजा हित क्लोवों की रानी है
नैतिक हो या रहे अनैतिक साधन असफल कभी न हो
कैसा भी दिन आ जाए, क्षत्रिय प्रकंपित कभी न हो।

शकुनी ने देखा मौके पर युक्ति सफल कर लेना ठीक
जुए में कर उन्हें पराजित, विजय लालसा की है ढीठ
सिर्फ बुला दें आप युधिष्ठिर को, बाकी सब कर लूंगा
जो कुछ जमा किया पांडव ने, इन चरणों में रखदूंगा।

राजा ने चाहा ऐसे अवसर पर विदुर-मंत्रणा लें
दुर्योधन कह उठा न नीति पाठ पढ़ाने का प्रण लें
राजनीति की चाल न नैतिकता की गाड़ी पर चलती
दुश्मन पर विजय न जोपाए उसकी सब नीति है ढहती

धृतराष्ट्र सब सोच-सोच कर मन ही मन अकुलाता है
पराक्रमी पांडव को जुए में ला संकट लाता है
बात बढ़ेगी जुए से, फिर शस्त्रागार खनक जायगा
रक्त बहेगा धरती पर, यौवन मतान्ध हो ढह जायगा।

युग-युग के अनुभवी शिष्ट राजा ने कहा सुनो बेटे
ढहती हुई अवस्था मेरी, करो उचित भाए बेटे
बार-बार पर कहता हूं यह मार्ग कंटकाकीर्ण जरूर
महाप्रलय निश्चित, सम्भालने वाला मानों कोसों दूर।

एक तरफ जुए के खातिर बनने लगी रंग-शाला
और साथ ही विदुर संग हैं परामर्श रत क्रुद्ध मना
अपने पुत्रों के भविष्य की चिन्ता उन्हें सताती है
आने वाले दुर्दिन की आशंका बढ़ती जाती है।

विदुर ठिठक कर मौन भला क्या अनभल प्रलयंकर होगा
महानाश की घड़ी आ रही किसको कौन बचा लेगा
फिर भी राजन की आज्ञा है अभी बुलाने जाता हूँ
साथ युधिष्ठिर को लेकर तत्काल लौट मैं आता हूँ।

जान रहे थे धृतराष्ट्र क्या कल को होने वाला है
दुर्योधन अपना विनाश कर लेने को मतवाला है
विधि की विडंबना पर कोई दे पाए छाया कैसे
जो निश्चित कर दिया विधाता ने वह भला मिटे कैसे।



धर्मराज ने देख विदुर को समाचार पूछा सत्कार
गुरुजन जन परिजन मित्रों का जान सके कैसा आचार
विदुर नीति नायक विलम्ब कर सके न भेद बताने में
धृतराष्ट्र का दूत सूक्ष्मति निज कर्त्तव्य निभाने में।

सुन्दर भवन विशाल रत्न हीरे मोती का जमघट है
बन्धु-बान्धव सहित पधारे जम जाए नृप आग्रह है
जुए का प्रस्ताव युधिष्ठिर कभी कभी भय खाता है
श्रेष्ठ विदुर ! संसार जुआरी धोखा देता खाता है।

क्षात्र-धर्म जो निभा सके वह द्युत खेल मर्मज्ञ रहे
नीति धर्म की बात करे जो व्यसन जाल आबद्ध रहे
फिर उसका क्या अंत नहीं, जिसका विनाश सर पर डोले
रे व्यथित हृदय है धर्मराज घबराए से कुछ स्वर बोले।

रहे खेलते नृपति मंडली सभ्य जनों की शोभा है
धर्म मार्ग है सुन कर मन ही मन पांडव मन डोला है
धर्मराज जो सत्यव्रती नीति का घोर प्रशंसक है
तत्पर हो जाता जूए हित निश्चय ही कुल दंशक है।

सभी बन्धु-बान्धव समेत पांडव टोली बढ़ती आयी
मिल रहे कुल गुरु जनपरिजन आँखें लगती हैं पथराई
स्वागत-सत्कार भरा प्रांगन दावों पर जीवन आएगा
रे कौन जानता जूए से संग्राम भयंकर आएगा।

इस ओर युधिष्ठिर बैठ गये शकुनी उस ओर पधारे हैं
दुर्योधन दल संचालक बन ऊँचे आसन जम आये हैं
छिड़ गया द्वन्द्व कौतुक-क्रीड़ा के नाम भयंकर अनाचार
है वाम विधाता अमितमति, सुन कौन सकेगा सदाचार।

दौलत का खुल कर अट्टहास, हीरे मोती की बारी है
शकुनी को मिलती विजय सदा, पांडव विनाश की बारी है
घोड़े, हाथी, बर्त्तन, वासन, कपड़े-लत्तों को हार गये
पुनि धर्मराज कुल राज-पाट धन दौलत सारा हार गये।

क्या बचता है जो आगे का जारी रख सकते खेल यहाँ
सहदेव सरीखे भाई हार कर भी भाई है भिड़ा हुआ
फिर नकुल पुनः अर्जुन, देखो वे हार भीम तक अभी गये
अपने को हार गये बाकी क्या रहा, द्वन्द्व में डूब गये।

समझाया कुशल खिलाड़ी ने हे धर्मराज द्रौपदी रही
संयोग जानता कौन, बोल दो आज उसी की बात रही
जो पाठ पढ़ाता नीति का, वह धर्मराज पत्नी हारा
द्रौपदी दांव पर आयी है, रे दांव पुनः प्रतिकूल गया।

सब चाकर पांडव कुल नायक दुर्योधन का जयघोष हुआ
जा दूत द्रौपदी को ले आ, सेवा ही उसका काम रहा
रे विदुर दूत बन जा न सके, समझाने लगे सुयोधन को
जब पागल हो युवराज, सम्भाले कौन धराके दामन को।

आने वाला आतंक भयंकर, महा भयंकर क्षण होगा
फिर कौन बचाएगा किसको, सबका आतंकित क्षणहोगा
उस महा प्रलय को देख सुयोधन बुद्धिसे लो काम अभी
रे अनाचार का फल होगा क्या, ले इसको पहचानअभी।

जब नहीं बुलाने विदुर गये पांचाली देव-कुमारी को
तब दूत दूसरा गया, रौद्र छवि गर्जन किया सुयोधन ने
लाना है शीघ्र द्रौपदी को वह आज राज की चेरी है
धाई होकर वह रहे यहाँ शुभ यही लालसा मेरी है।

दुर्योधन क्रोधित आज विदुर से उलझ पड़े बेकार यहाँ
तुमको क्या उचित रहो घरमें दिलरहे पांडुका धाम जहाँ
बड़बड़ा रहा उन्माद पीड़ित दुर्योधन किसकी सुनता है
आश्चर्य चकित सब जन-परिजन, आँखों से पानी ढलता है।

दूत दौड़कर गया, द्रौपदी को संवाद सुनाता है
कुछ प्रश्न पूछतो पांचाली, वह सभा भवन में आता है
कहती है पूछो धर्मराज जब अपने को ही हार गये
तो क्या अधिकार रहा उनका जो मुझे दांवपर लगा सके

सुन प्रश्न दुष्ट दुर्योधन का आक्रोश चरमसीमा पर है
रे दुःशासन तू ही अब जा, जैसे हो उसको लाना है
अग्रज का पा आदेश अनुज सारी मानवता छोड़ चला
तू हुई प्रेयसी प्रियतमा, रुक और न जी को वृथा जला

पांचाली का अवसाद जलधि की गहराईसे गहरा है
नारी की आँखों का पानी कहता, समाज क्या बहरा है
कुन्तल ललाम को पशुता के हाथों अपमानित होना था
रे धराधाम पर घोर पाप का शमन किसी विधि होना था

साहस कर पुनः आज अबला इस सभा मंच पर कहती है
जो अपनेको ही हार चुका, क्या उसके वश कुछ रहती है
जो स्वयं नहीं स्वाधीन दूसरे का सौदा क्या कर सकता
है आज देश में धर्म कहाँ, अन्याय क्रूर क्रीड़ा करता

माता ने तेरा जन्म दिया, कर स्तन पान जीवित रहते
माँ, बहन, सुता, बधु आदि से क्या यही धर्मवरता करते
रे अधम जनों की सभा, पंच जो पक्षपात में डूबा हो
फिर धर्म खोजना वहाँ व्यर्थ, जो शुभ कर्मों से ऊबा हो।

सुन भीमराजकी उष्ण धमनियों का शोणित है खौल उठा
रे धर्मराज तू पतित दुष्ट के हाथ पत्नी को सौंप रहा
सहदेव ! अग्नि प्रज्ज्वलित करो ,उन हाथोंको जल जाना है
नारी को जो रख सके दांव, जल भष्म उसे हो जाना है।

अर्जुनने साहस बांध भाई को कहा, ध्यान दे मर्यादा
रे अग्रज का अपमान न कर सकते, हैं कुल सभ्रांत यहाँ
तुम नहीं आज तक उग्र हुए, भैया का यह अपमान न हो
है समय बड़ा बलवान देखते जाना है, जो होता हो।

जब बड़ों-बड़ों की हार हुई, चुप-चाप देखते महानाश
तब युवा वर्ग नेता विकर्ण, भर रहा दिलोंमें आज आश
क्या क्षात्र-धर्मको छोड़ सभी हो गये नरकगामी योद्धा
शकुनीका है यह दांव-पेंच, रे अनघ व्यर्थका महानाश।

जनमानस में विद्रोह भावना अभी पनपने वाली थी
अब कर्ण बीच आ पड़ा कालिमा पुनः लौटने वाली थी
गुरुजन विशिष्ट जनका परिषद्, बालक अबोध क्यों करे शोर
जो हार गया अपनेको पत्नी गयी साथ, फिर वृथा शोर।

क्या पत्नी का अस्तित्व अलग से होता है, यह पढ़ लेना
है सदा साथ आना-जाना, अर्द्धांगिनी शब्द समझ लेना
अपने को हार युधिष्ठर तो पत्नी को बचा नहीं सकता
है धर्म-नीतिमय कार्य, व्यर्थ अवरोध न कोई दे सकता।

आक्रोशपूर्ण कटुभाव कर्णने कहा दुःशासन वसन खोल
अब सब कुछ है अपना बाधाकी बात व्यर्थ कोई न बोल
शक्ति का क्रूर प्रदर्शन है नारी की लाज लूटती है
रे महाजनों की श्रेष्ठ जनों की बैठक मूक सहमती है।

धरती का सब सामर्थ्य आज बेकार नग्न नारी होगा
आँखों में आँसू भरे हृदय से पांचाली सहमी होगा
भगवान कृष्ण तू ही मेरी अबला की रक्षा कर सकते
इस महाअनयसे नाथ लाज का दामन तुम्हीं बचा सकते।

अबला की भींगी लाज, वस्त्र की ढेर मंच पर ढहती है
प्रतिशोध भावना अभिप्रेरित श्री भीम वेदना ढलती है
रे भरत वंश काला कलंक तेरा मैं रुधिर न पी पाऊँ
यह भीष्म प्रतिज्ञा है मेरी, तो वीर गति हो ना पाऊँ।

अब धृतराष्ट्र की अंधी आँखों से भी साफ झलकता है
धरती पर महाप्रलय होगा, पापी अब कहाँ सहमता है
कह रहे युधिष्ठिर ! बुरा हुआ, जो हुआ उसे हम भूल चलें
जूएमें जो कुछ हार गये, कुल प्राप्त साथ ले पुनः चलें।

पर आज नियति को कौन रोकने वाला था इस धरती पर
जो महानाश होने वाला, रूक जाये कैसे धरती पर
रे पुनः लौट कर धर्मराज जुए पर दांव लगाते हैं
बारह वर्षों का वन जीवन, तेरहवें गुप्त निभाने हैं।

अज्ञातवास था तेरहवाँ, जब प्रकट कभी हो जायगा
तो बारह बरस नया फिरसे वनवास प्राप्त हो जायगा
यह महाद्यूत का दांव पुनः शकुनी का पक्ष निभाता है
रे पुनः पराजित धर्मराज, वन जीवनको वह जाता है।

अभिशाप

नयनहीन सामन्त राजधानी का वैभव भोग रहा
यदा-कदा पूछा करता है कैसे पांडव निभा रहा
मिलता है संवाद भयानक नगर छोड़ कैसे गुजरे हैं
सर झुकाये अग्रज, सहदेव, नकुल पीड़ित मनसे गुजरे हैं।

नमित दृष्टिसे देख भुजाओंको बढ़ता था भीम धरा पर
धूलिकरण फैलाता अर्जुन आगे बढ़ता सहम-सहम कर
नर-नारी आकुल बेचैनी से सह सके न यह पीड़ा
नयनों से जलधार धरा पर महा प्रलय जैसी पीड़ा।

विदुर सुनाते यदा-कदा ऐसा होता रहता है
जन-जीवन में पांडव-जन गुणगान चला करता है
कितना है निर्मम राजा कैसे उसके बालक कठोर
अपने जनको देकर पीड़ा, कैसे जोता घर अनय डोर।

थे विदुर व्यस्त राजा से बातें होती इन्हीं प्रसंगों में
आ पड़े विहँसते नारदजी था भस्मतिलक सुचि अंगों में
चौदह वर्ष आज से पूरा इस धरती पर जब होगा
दुर्योधन के पापों से कौरवकुल राज्य ध्वस्त होगा।

द्रोण हृदय से द्रवित निवेदन करते हैं हे राजन ! सुन
पांडव जन निर्दोष उचित बंधु संग रहें नगर अर्जुन
कटुता का साम्राज्य भयानक शस्त्रों का नर्तन होगा
महानाश की घड़ी अलक्षित असुरों का गर्जन होगा।

पशुपात-प्राप्ति

शाल्व ने सुना, भयंकर वध हुआ शिशुपाल का
सैन्य ले आगे बढ़ा, घिर गयी नगरी द्वारका
उग्रसेन महान् सेनाध्यक्ष, नगरी बच रही
यादवों का उष्ण शोणित, तप्त धरती जग रही ।

अब कृष्ण आये द्वारका देखा नगर पीड़ित दुःखी
संवाद पुनः मिला विपत्ति पांडवों पर आ पड़ी
युवराजगण रत द्यूत-क्रीड़ा राष्ट्र का क्या हाल हो
पांडव वनों में घूमते मां-पत्नी बन्धु साथ हों ।

शीघ्र चल भगवान् ने देखा, युधिष्ठिर विजन वन
शोक-व्याकुल हृदय द्रवित, विशाल बोझिल आज मन
द्रौपदी की वेदना इतिहास पर आघात सम
नारी मण्डलकी प्रतिष्ठा पर निशाचर कर अधम ।

धर्मराज महान्, योद्धा भीम, अर्जुन सम पति
हो रहे निस्तेज थे, अपराध के बन्दी सभी
नेत्र से जलधार अबला के हृदय की चीख-सी
देखकर भगवान की मन-भावना अति हीन-सी ।

द्रौपदी ! आघात का बदला प्रलय का रूप ले
मृत्यु के हाथों मिटेंगे विप्लवी यह जान ले
पांडवों के हम सहायक हर घड़ी तत्पर रहेंगे
अपनी आँखों से अनय का अन्त निश्चय देख लेंगे ।

टूट जाय हिमगिरी धरती प्रकंपित हो भले
सूख जाय जलधि, जो होना न सब कुछ हो भले
ले रहा सौगंध भामिनी ! वचन टल सकता नहीं
दुष्ट कौरव नाश के पंजे से बच सकता नहीं।

धृष्टद्युम्न महान् अपनी बहन को समझा रहा है
शुभ घड़ी आयेगी ऐसी भावना पनपा रहा है
क्रूर कौरवका अनय अब आ चुका ऊँचा शिखर
कौन जाने कब महापापी गिरे, जाय बिखर।

द्रोणका वध मैं करूँगा, भीष्महंता शिखंडी है
कौरवों का यम गदा ले हाथ में आगे खड़ा है
कर्ण का वध समर में गांडीवधारी ही करेगा
रक्त की बौछार से विकराल वसुधा रूप होगा

द्वारका पर शाल्व का भीषण प्रतारण हो रहा था
कृष्ण रक्षा में लगे संहार युवकों का हुआ था
उस घड़ी में महानाशक द्यूत का था तेज फैला
कर पराजित कृष्ण दौडे आये सुन संवाद सारा।

संग लेकर पार्थ के सुकुमार अभिमन्यु सुभद्रा
चल पड़े भगवान अपने नगर अभिप्रेरित विभा-सा
द्रौपदी के पुत्रगण को तो चला पांचाल साया
जन-निवास-विरक्त पांडव ने विरतिकी छांह थामा।

गदाधारी भीम का आक्रोश रह-रह उबलता है
मसल दूँ इन कौरवों को, खिन्न मन अति सोचता है
द्रौपदी अपमान का बदला न जबतक देख पाती
चैन की कब नींद भामिनी धैर्य कैसे बांध पाती।

भीमराज विकल बताते धर्मराज ! समर चलो अब
धैर्य धारण क्षत्रियों का धर्म, बतला दो रहा कब ?
हम नहीं ब्राह्मण ऋचाओं का निरंतर मनन कर
जो रहें संतुष्ट, हम हैं क्षत्रिय यह याद कर

देवत्व का सुचि रूप भैया छोड़ दो शमसीर लो
धरती पुकार रही धरा पर युद्ध का वरदान लो
सहते रहो, मरते रहो, डरते रहो, वन में रहो
यह शोभता क्या पार्थ को, मेरे अनुज सभ्रांत को।

आक्रोश का अवसर युधिष्ठिर समर से कब भागता
पर युद्ध की परियोजना हित धैर्यपूर्वक सोचता
परिणाम क्या हो युद्ध का अनुमान संशयपूर्ण था
मजधार में बेहोश हो चलना नहीं स्वीकार था।

व्यास देव महान् का उपदेश तो आदेश ही है
शस्त्र संग्रह की लगन मन धनंजय के लगी है
कर तपस्या कठिन दुस्तर पार्थ आगे बढ़ रहा है
इन्द्र राज महान् सम्मुख शस्त्र हेतु अर्चना है।

विश्व का आनन्द, तुम देवत्व देना चाहते हो
देव ! वनवासी हमारे भाई, पत्नी जानते हो
धर्म मेरा आज मुझको कर रहा प्रेरित निरन्तर
युद्ध का आह्वान सब उपलब्धियों से है श्रेयस्कर।

जा मिलो आग्रह विनयसे शिव महान् विचर रहे हैं
शस्त्र के आगार कौशल कुशल आभूषित भरे हैं
पूर्ण है सामर्थ्य जग का एकमात्र महान् योगा
शक्ति संचालक बने पाकर कृपा हतभाग रोगी।

पार्वती को संग ले आखेट क्रीड़ा मगन बम-बम
धनुष बाण महान् ले चल रहे प्रेरित आज हरदम
पार्थ का संधान भालू के गले में जा लगा है
देव का भी बाण आहत के गले आकर टिका है।

भूलकर आखेट उसको तुम न अपना मान लेना
अन्यथा संघर्ष आयुधवृष्टि गौरव नाद होगा
छिड़ गया संघर्ष आहत रीछ हित बढ़ता मनोबल
पार्थ का गांडीव छीना गया, लड़ता खडग लेकर।

बंध गया तन निष्क्रिय है देव की कर रहा पूजा
देखता साक्षात् रण कैलाशपति हो आ भिड़ा है
देव चरणों में लिपट कर पार्थ शस्त्रों का सुयाचक
वरद् हस्त महान् शिव ने दे दिये पशुपात घातक।

पांडु-कुल-भूषण प्रभु वरदान पा हर्षित मगन मन
सौम्य आनन पर चमकता तेज द्विगणित असित साधन
शत्रुओं का नाश, रे हुँकार भर की देर बाकी
पाप का साम्राज्य टूटेगा, मरेंगे अधम पापी।

मातली रथ साथ, अर्जुन को निमंत्रण दे रहा है
सारथी आग्रह धनंजय स्वर्ग नगरी जा रहा
वेदना का ताप प्रतिपल मिट रहा है स्वस्थ मानस
समर हित अंगराइयाँ ले रहा अर्जुन अतुल साहस।



बृहदश्व–संवाद

कृष्ण अग्रज संग वन की छाँह द्रुमदल सहज डोले
रे प्रवासी पांडवों को देख कर बलराम बोले
देख ले हे कृष्ण तेरो इस धरा पर धर्म क्या है ?
पाप की गठरी लिये कौरव ही वैभव भोगता है।

धर्मराज महान् अपने बन्धुओं संग विजन वन में
द्रौपदी साध्वी पतिव्रता व्यथा अवसाद मन में
है कहीं भगवान ? मिटता जा रहा मन भाव जन का
देख कर आतंक सज्जन मंडली का तपस्वी का।

सात्यकि भावुक हृदय से अभिवचन करने लगा
सुन प्रिय बलराम ! चिंतन का समय पीछे गया
शीघ्र ही जितने कुटुम्बी आत्म जन हैं पांडवों के
आक्रमण कर मिटा सकते पूर्ण दल बल कौरवों के।

धर्मराज अगर तपस्या धर्म की चर्चा करें
अभिमन्यु का ही हम सभी अभिषेक साहस से करें
व्यर्थ के बकवास का हम सब करें परित्याग अब
सोचना है व्यर्थ धारण शस्त्र कर लें वीर सब।

कृष्ण को साग्रह निवेदन धर्मराज सुना रहे
सत्य का परित्याग कर क्या प्राप्त जन कुछ कर सके
राज्य क्या कुछ भी धरा पर लोक में ऐसा नहीं
सत्य का परित्याग कर पाने की लिप्सा हो जगी।

हे परम अति पूज्य भ्राता भीम नें सादर कहा
बहुत दिन बीते, धनंजय लौटकर नहीं आ सका
एक बार बुला उसे, उस वीर का स्वागत करें
दुष्ट कौरव, कर्ण, शकुनी आदि का मर्दन करें।

कलपती, सहमी धरा अह्लादमयी तब हो सकेगी
पाप की गठरी कुठाराघात से टुकड़ी बनेगी
तब तुम्हारा हृदय जब चाहे बनो साधु-मुनि
विजन वन सारा रहेगा, विचरना साधक मुनि।

संयोगवश वृहदश्व वन में पांडवों से आ मिले
शंका निवारण पांडवों का कर विचरते चल पड़े
संवाद उनसे मिल गया, अर्जुन अलौकिक अस्त्र ले
है आ रहा परेशानियों से मुक्त होकर जान ले।

हे धर्मराज ! व्यथित न हो नलकी कहानी याद कर
रे यातना ही यातना थी, जिन्दगी यह याद कर
तुमधर्म पर जीते, तुम्हारी विजय निश्चित जान ले
जो पाप-क्रीड़ा में फंसा, मिटना उसे है मान ले।



लोमस ऋषि-प्रबोधन

इन्द्रप्रस्थ से कितने ब्राह्मण धर्मपुत्र के साथ चले
आपत की इस कटु बेला में स्नेह सुमन सर्वदा खिले
लोमस ऋषिने कहा युधिष्ठिर तोर्थ तुम्हें अब करना है
इन कुटुम्बियों की संख्या को न्यून, क्षीण कर देना है।

तीर्थाटन में व्यस्त पांडवों की टोली बढ़ती जाती है
वसुधा की रे निखिल छटा नाना भांति आती जातो है
मुनि अगस्त की कथा धर्म के महामार्ग का भव्य भवन
नयन निमीलित धर्मराज जगती की शोभा से बोझिल।

सुन बालक हमलोग तड़पते पिंड दान के बिना अधीर
निःसंतान तुम्हारा जीवन, मुक्ति पूर्वजों की मुश्किल
अबतक निःसंतान दम्पत्ति मांग रही वैभव विदर्भ का
मुनिके सम्मुख नत-मस्तक वरदान मांगते शिशु पानेका।

कठिन वेदनामयी दम्पति को सुखकर वरदान मिला
अति सुन्दर कन्या जन्मेगी, राजा का सौभाग्य खुला
एक शर्त्त स्वीकार करो, प्रेयसी वह होगी योगी की
दिव्य भाल सिंदूर दान की अभिलाषा है मेरी ही।

राजकुमारी का कुन्तल ललाम, यौवनका कमल खिला
स्नेहिल बांहों में पीतम के आने का अरमान खिला
बलखाती अधखिली कुमारी, अंगों में भर रही उमंगें
कैसे हो स्वीकार पिता को ले जाये योगी अधनंगे।

वचन दे राजा हटे यह धर्म शास्त्रोचित नहीं है
लोपमुद्रा जानती ऋषि कोप की सीमा नहीं है
प्रणय का बंधन ऋषि संग प्रेयसी वल्कल वसन है
सिहरती रति कामना, आभूषणों तक की लगन है।

व्यर्थ इतना सोचती हे भामिनी भूखा भिखारी
चाहती ऐश्वर्य मेरे संग, नंगा ब्रह्मचारी
मानना आखिर पड़ा ही चाहकर बेचाह कर
हो गये याचक यति से कामिनी स्वीकार कर।

कुछ न बच पाता करूँ क्या राज्य तो इतना बड़ा है
कह रहे राजा, समय कितना कटु अनुभव हुआ है
कर को बोझ बढ़ाऊँ जनता अस्त-व्यस्त हो जायगी
जन-जीवन आक्रांत धरा पर भारी विपदा आयगी।

बस एक था इल्वाल नृप जिसने बनाई सम्पदा
कर-भार से जन-मन व्यथित सर्वत्र फैली आपदा
मणि रत्न दान दे राजाने मुनि से आशीष वचन मांगा
ऋषिकी बलखाती भामिनीका सौभाग्य अभी मानो जागा।

अरमानों का संसार सजाया गया कामिनी मचल रही
चुंबन आलिंगन, रतिक्रीड़ा, नाना विधि दंपति व्यस्त रही
दिन ढलता गया, जगी संध्या, शिशुचंद प्रेम आकाश खिला
साधक अंगों की अंगराई मिट रही ध्यान क्या मुझे मिला।

विभन्दक योग साधन तपश्चर्या रत परम साधक
विजन वन शृंग ऋषि सम सुत सहित अस्वस्थ फलदायक
अनावृष्टि भयानक हुई प्रलय की यातना आयी
निवासी अंग के सम्मुख घुटन की वेदना छायी।

महर्षि जन विनय कर मांगते हैं रोम पद नायक
बुलाओ शृंग ऋषि को घोर वृष्टि श्रेष्ठ संचालक
तपस्या बल वृहद् आनन्द अंतःकरण रहता है
जगत् की कामनाओं से विरक्ति साथ रहता है।

सजी नौका सुगंधित बेल बूटों साज-सज्जा से
चला सुकुमारियों का दल सहमता सहज लज्जा से
कुशल तो है ? बता ऋषिवर तपस्यापूर्ण है जीवन
नहीं परिताप है कोई समस्या-शून्य यह जीवन।

तपस्या से प्रवाहित धमनियों में वासना जागी
अरी नवयौवना कुन्तल ललाम, महान् बड़भागी
पिता आश्रम से बाहर हैं, बताओ कौन तुम बाला
सहेली संग आश्रम को बनाती आज मधुशाला।

तड़पती वासना जागी, हृदय का वेग स्पन्दित
मधुर फल, सोमरस, मिष्टान्नसे अति प्रेम आनंदित
प्रणय का तीक्ष्ण आवाहन, गले में प्रेयसी लिपटी
चलूं ऋषिराज आश्रम अग्निहोत्र सम्भालने लौटी।

तपस्यामय भला जीवन, मधुर यह हार ग्रीवा में
विभंदक देखते हो पूछते, मुख म्लान आश्रम में ?
नहीं गायें गयो दूही, न बछड़ा कूदता आगे
हुआ क्या है ? यहाँ पर कौन आया तपस्वी आगे ।

पिताजी ! इस धरा की एक इठलाती सुघर बाला
निरस वन देश को सौंदर्य मादक दे गयी बाला
अरी वह ब्रह्मचारिणी देव कन्या तुल्य नारी है
हृदय की एक अभिलाषा, जगत् में सबसे प्यारी है

पिता साधक सफल योगी, सफलता मिल नहीं पाती
सुनो अवतंश मायामयी, न कन्या देव नगरी की
ऋषि कुल देवभूषण त्यागियों के कुलके अधिनायक
परम आनन्दमय आध्यात्म, तुम नहीं वासना लायक।

अरे आया मधुर अवसर, पिताजी पुनः अनुपस्थित
चहकती आ गयी नौका, मचलती सुमुखी समुपस्थित
प्रणय का वेग झंझावात को देता निमन्त्रण है
विहँसती बालिका के संग शृंग विहार प्लावित है।

अंगराज की तपित भूमि को मिला वृष्टिका नव वरदान
शृंग ऋषि की अनुकंपा से धन्य-धान्य जनमन आह्वान
राजमहल में हुई घोषणा प्रणय निवेदन है स्वीकार
शांता, राजकमारी ऋषि की ग्रीवा में देती जयमाल।

पिता विभंदक राजमहल में अंगराज के रहे पधार
स्वागत समारोह आनंदित प्रमुदित ऋषिकुल भूषरण आज
राजमहल में देवकुमारों के सदृश बेटे को देख
पुत्र-वधु शांताको पतिके चरणों में पुनि अर्पित देख।

पिता हृदय आह्लादित होकर यह आदेश सुनाता है
करना वही अनवरत बेटे, जो राजा को भाता है
पुत्र रत्न जब तुम्हें प्राप्त हो पुनः लौटना आश्रम ओर
करना तुम्हें मनुज सेवा है, पावन परम तपस्या घोर।

लोमस ऋषि ने बड़े प्रेमसे कहा युधिष्ठिर सलिला देख
इसी किनारे शृंग ऋषि ने कठिन तपस्या की थी देख
नल-दमयन्ती, राम-जानकी अनुरंधता अगस्त ऋषि
आये थे महान् योगी, इस पुण्य शिला के पास कभी।

भारद्वाज मुनि रैम्य ऋषि के परम मित्र थे श्रेष्ठ महान्
परावसु-अर्वाबसु दोनों रैम्य ऋषि के पुत्र सुजान
भारद्वाज सुत की इच्छा विद्या सम्मान मिले मुझको
यवक्रीत नाम था पढ़नेका सुन नास कष्ट होता उसको।

कठिन तपस्या व्रत महान् उपरांत इन्द्र सम्मुख आये
नतमस्तक यवक्रीत मांगता वेद, ज्ञान सुन मुस्काये
गुरु की सेवा करो, किसी अध्यापक से विद्या पढ़ लो
सिर्फ तपस्या से विद्या पाने की आशा को तज दो।

इतनी क्रूर यातना सहता आता है वह वैरागी
अध्ययन करना व्यर्थ मानता, कैसा है वह अनुरागी
गंगा तट पर देख विप्र को रेणु सलिला धार बहाते
परेशानी से अंजली भर कर पुनः रेणु उपहार चढ़ाते।

हे ब्राह्मण ! तू क्या करता है, कैसी यह शैलानी है
सेतु एक बनाना चाहूँ उसकी यह तैयारी है
कैसा बुद्धि-भ्रष्ट अंजलि के बालू से सेतु बंधेगा
गंगा की इस तीव्र लहर में रेणु का कण ठहर सकेगा।

अरे असम्भव इसे बताते अपनी सफल योजना देख
बिना पढ़े ज्ञानी बनने की अपनी ढीठ कल्पना देख
यवक्रीत समझता आज इन्द्र गंगा तट दौड़े आए हैं
ब्राह्मण वेशी हो देव मुझे उपदेश सुनाने धाए हैं।

श्रद्धापूर्ण अभिवादन नतमस्तक यवक्रीत आज करता
श्रेष्ठ गुरु से वेद ज्ञान के अध्ययन का निश्चय करता
शुभ वरदान मिला, साधक के आनन की असीम शोभा थी
लोमस ऋषि की कही कथा पांडव भविष्य की सुचि रेखा थी।

उद्दालक-ऋषि-शिष्य कगोला अपढ़ और था भोला-भाला
ऋषि संतान सुजाता ने पहनायी प्रणय पुष्प माला
कहता था कुछ गलत श्लोक जब वेद-मंत्र का पिता कगोला
गर्भ बीच अति विकल व्यथित हो जाता था शुभ मति वाला।

आठ बार की आठ गलतियों से अंगों में ऐंठन आठ
अष्टावक्र नाम, विद्वज्जन बीच चल पड़ी उसकी बात
द्वादस साल बिताए जीवन वेद और पूरा वेदान्त
धर्मशास्त्र आचार शास्त्र का परम पुंज उदधि अति शांत

धर्मशास्त्र का तर्क शास्त्र का मिथिला धाम पुराना था
अष्टावक्र श्वेतकेतु के संग पहुँचने वाला था
मिले मार्ग में स्वयं जनक, कुछ उनके प्रहरी ज्ञानी थे
"हटो मार्ग से महाराज हैं" ऐसे कुछ अभिमानी थे।

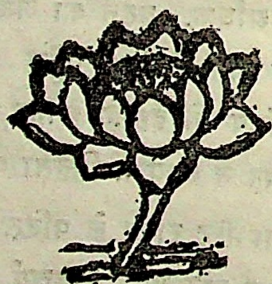
बालक तेज न सहने पाया, सुनो नृपों का धर्म पुराना
अंधे लंगरे जन, अबला बोझे वाला पुनि विप्र समाना
इनके लिए मार्ग की सुविधा पहले कर लेने के बाद
ही चलने का अधिकारी है राजा, विपथगामी अपवाद।

राजा जनक प्रसन्न अधिक, बढ़ने का अवसर देते हैं
द्वारपाल जब रोक रहा, वे स्वयं पहुँच कह देते हैं
बालक होकर भी मंडप में इसका आना नहीं निषेध
सत्य कहा इस ब्राह्मण ने आयु न विद्वता की है रेख।

शास्त्रार्थ हुआ गम्भीर राज्य के पंडित सभी पराजित हैं
विन्दी पंडित तक हार गये, आश्चर्य चतुर्दिक छाया है
सभा भवन ने निर्णय अपना सुना दिया है अष्टावक्र
तेरे सम्मुख टिका न कोई, धन्य विधाता का है चक्र।

कगोला जिस सभा से हो पराजित फिर नहीं लौटा
समर्पण कर दिया जलधि को वापिस घर नहीं लौटा
वही मण्डप, वही विन्दी, जलधि में आज बन्दी है
किसी अज्ञानी की भी विज्ञ, अनुभवप्रज्ञा संतति है

सुचि धर्म के स्थान का होता निरंतर पर्यटन
लोमस ऋषि कहते कथा, पांडव सहज करते श्रवण
कैसा अतीत महान्, संकट में बड़प्पन फूटता
पापी भयानक क्रूर हो, घट एक दिन है फूटता।



हनुमान-भीम मिलन

धनुर्धारी पार्थ लम्बी योजना में जा जुटा है
बंधु-बांधव, पुत्र-पत्नी परिजनों से वह जुदा है
इस धरा पर वज्र कैसा लोमहर्षक दृश्य लाये
पापियों का नाश, शोषित-पीड़ितोंका राज्य आये।

उच्चगिरी गह्वर शिला खंडोंमें चिपका चल रहा है
श्रेष्ठतम हथियार हेतु हौसला ले बढ़ रहा है
अनवरत बढ़ता रहा, चढ़ता रहा, गिरीराज चोटी
देह धारण व्यर्थ, जिसकी कल्पनाएँ क्षुद्र खोटी।

इधर काम्यक वन धनंजय बिना शुष्क था फीका था
पर्वत की चोटी चढ़ने का निश्चय उचित अनूठा था
चला पांडवोंका दल गिरी गह्वरको लांघ रहा दिन-रात
सुमन पवन की डोर थाम पांचालीके आँचल अज्ञात।

सुनो राजन तपस्वी भीम देखो उस तरफ जाकर
सुमन कुछ और ले आओ, चढ़े श्रीमान् के ऊपर
महाबली भीम उद्वेलित प्रिया की लालसा भरने
उछलते चल पड़े आगे सुमन उपहार ले आने

चतुर्दिक मधुर कदली के विपुल उपवन सुहाते हैं
चमत्कृत देखकर श्री भीम वानर को सुनाते हैं
यही तो मार्ग है मेरा सुनो वानर हटो जल्दी
दया की याचना करता, सहमती क्रूरता ढलती।

कहा वानर ने आगे मत बढ़ो, खतरा भयानक है
कहा उपहास से मैं भीम हूँ, बकवास क्या यह है ?
पुनः मैं कह रहा वानर तो हूं पर व्यर्थ मत बढ़ना
अगर कर पार चल जाओ तो संकट से नहीं बचना।

बुढ़ापे का समय आया, खड़ा मैं हो नहीं सकता
हटा दो पूँछ मेरी यह, स्वयं तो टल नहीं सकता
पवन-सुत भीम मैं हनुमान का भ्राता मुझे समझो
समुन्दर लांघ सकता हूँ, नबे चारा मुझे समझो।

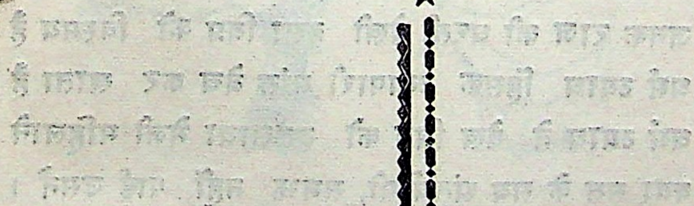
हटाने पूँछ झपटा भीम साहस कर पुनः लपटा
पसीने से हुआ लथपथ, न अविचल अंग पर पलटा
क्षमा अपराध कर हे देवता ! तुम कौन बतलाना
हुआ अनजान से अपराध, मन संशय न कुछ लाना।

कहा वानर ने हे पाण्डु तनय अग्रज तुम्हारा हूँ
पड़ा हनुमान हूँ आगे भयावह कष्ट कहता हूं
तुम्हें जाने नहीं देता कंटीला मार्ग दुर्गम है
बड़े हिंसक महाघातक, निशाचर यक्ष निर्मम हैं।

निकट में देख वह निर्झर, खिली सौगंधिका प्यारी
सुमन ले जाओ पांचाली प्रतीक्षा व्यथित बेचारी
मिलन दो भाइयोंका प्रीतिपूर्वक उभय दल पुलकित
दिखा दो उग्र रूप विशाल, सुन अग्रज हुआ सस्मित।

विशालाकार दीर्घ महान् भय आतंक देता है
सहज ही पुनः अग्रज अवयवों को मोच लेता है
कहीं शत्रु चला आये समर स्वीकार तुम कर लो
जरूरत जब कभी आये, मुझे बस स्मरण कर लो।

उपस्थित पार्थ के रथ की ध्वजा पर सर्वदा रहना
सफलता पांडवों की ही पराजय शत्रु को मिलना
पराक्रम-पुंज सेनानी तदपि रे नमित कितना है?
सुमन के साथ वापस चल पड़ा उत्साह कितना है?



कौशिक कथा

कौशिक ब्राह्मण त्याग तपस्याहित जंगल में रहता था
सारंग दिया विटप श्रग तपस्वी का श्रंतरतम जलता था
कड़ी दृष्टि से देख लिया, सारंग झुलस कर गिरता है
भीक्षा हेतु कृषक प्रिया के द्वार नगर आ टिकता है।

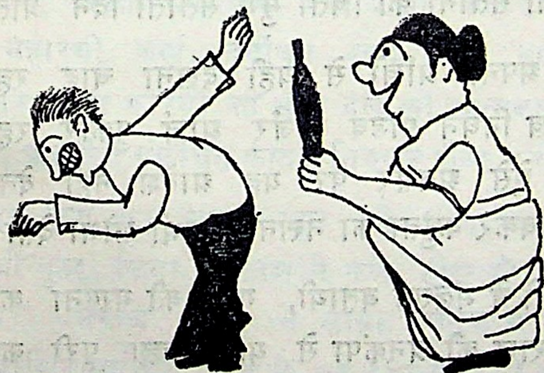
भीक्षा देने में देर! क्रोध से ऋषि की वाणी क्रूर हुई
गृह स्वामिनी विहँस कर बोली पति सेवा में देर हुई
क्षमाशील ब्राह्मण होता है, क्रोध न भाता साधु को।
पति सेवा उपरांत अन्य सब नीतियुक्त सुन वाणीको।

तू क्रोधित बेकार न सारंगी समझो इस नारी को
किंकर्त्तव्यविमूढ़ विप्र, भामिनी उपदेश भिखारी को
धर्म व्याध मिथिला का वासी, उत्तम योग दिखायेगा
विप्र करो दर्शन मानव का उचित धर्म समझाएगा।

जनक राज की धरती देखी हुआ विप्र को विस्मय है
धर्म व्याध हिंसक व्यापारी मांस बेच कर खाता है
धर्म व्याध ने देख विप्र को बतलाया भेजी महिलाने
क्या सब के सब अंतर्यामी, समझ नहीं पाई उसने।

समझ गया तू क्यों आया हे विप्र वृथा संन्यासी है
माँ घर पर पितु शक्तिहीन सेवाविहीन कुश गाती है
अपना स्वधर्म तू त्याग भक्तिका उलटा पाठ पढ़ा करता
देखो व्याधकी यह कुटिया, जन-परिजन सम्मानित रहता।

खुले नेत्र साधक ने समझा अब तक भूलभुलैया था
मांग भरी स्नेहिल युवती की मृदु गार्हस्थ्य बसाया था
महा-मंत्र वेदान्त धर्म-ग्रन्थों का चरम अनुठा है
कर पालन स्वधर्म जगती में अन्य ढोंग सब, झूठा है।



गंधर्व-पांडव युद्ध

विप्र, संत, साधु, संन्यासी, मुनि साधक परिव्राजक जन
पांडव जन से मिल लेते थे, वन-व्याधि-पीड़ित सज्जन
धृतराष्ट्र पर्यटन किये ऐसे लोगों से मिलता था
पांडव जन संवाद, व्यग्रता, भावुकता से सुनता था।

मिटा न अबतक पांडव जन का तेज, ओज, आनंद विहार
लड़ न मिटे क्रोधी आपस में हुआ परस्पर नहीं प्रहार
पार्थ लौट आया धरती पर प्रलयंकारी शस्त्र प्रचुर
अपनो संतानों को चिंता मुझे सताती दिन प्रतिकूल।

दुर्योधन अपनी आँखों से यही देखना चाह रहा
मेरे सम्मुख निर्धन पांडव जर्जर आर्त्त पुकार रहा
धृतराष्ट्र ऐसे अवसर पर यह आदेश नहीं देता
निकट पहुँचकर कटुता का नर्त्तन न कभी शोभा देता।

शकुनी ने मंत्रणा बतायी, गायों की गणना करनी है
महाराज की अनुकंपा से यह इच्छा पूरी करनी है
धृतराष्ट्र भयभीत सशंकित शायद अनभल टल न सके
पुत्र मोह बस कठिन समयमें आग्रह वर्जित कर न सके

जलता हृदय द्वेष की ज्वाला में कब ठंढा होता है
धन-दौलत से भरा हुआ, बेकार निरंतर रोता है
घृणा किसो से करो, तड़प से दिल अपना मर जाता है
फूट पड़ेगा अनायास, जब अनघ घड़ा भर जाता है।

द्वैतवन कुरुराज के युवराज सब जुटने लगे
भलिभांति गोधन सांढ़, बछड़ा, वृषभको गिनने लगे
पुनि मांस मदिरा रमनियों का हृदय वेधी स्वर मधुर
रे नाट्य, नर्त्तन, परिहसन, उल्लास पायल ध्वनि विपुल।

रमनीयता शुचि शैल की जिस ओर पांडव थे बसे
अपनी बिछा दो छावनी, उत्साह से सम्मान से
अवरोध का सम्वाद सुन गर्जन सुयोधन का हुआ
तम्बू तना गंधर्व का, उसको हटाना तय हुआ।

संघर्ष का बढ़ता गया जब वेग, योद्धा कट मरे
भागे महारथी कर्ण, दुर्योधन स्वयं बन्दी हुए
सब ओर भागा कौरवों का सैन्य दल खो आत्मबल
पीड़ित, प्रतारित संकुचित कातर निरुत्तर सैन्य दल।

इस दृश्य का संवाद सुन श्री भीमराज प्रसन्न हैं
जो कुछ किया कुरुवंश ने फल ठीक ही उपयुक्त है
पर धर्मराज महान् ने साग्रह अनुज से यह कहा
आखिर सुयोधन भाई है, वह मिट गया तो क्या रहा!

अपमान अपने भाई का सह ले न मानव धर्म है
अपसत्व को अपना सके, कटुता मिटे यह मर्म है
देवत्व में अपनत्व की फलती लता सम्मान से
गंधर्व के हाथों न मिट जाय सुयोधन ध्यान दे।

पकड़ कर बांध गठरी सम बहा दी बीच धारा में
लगा दी आग लाक्षागृह मिला वनवास जुए में
किया सब कुछ सुयोधन ने उसे तुम भाई कहते हो
गरज कर भीम कहता है, भ्रमित तू आज होते हो।

न नंगी करने में बंधु-प्रिया को बंधु शर्माए
उसे कह भाई हे श्रीमान् लोहू अब न खौलाए
मिटा दे कोई उसको खाक में सम्मान धो डाले
प्रशंसा मैं करूँ उसकी, जो जिंदा ही ज़ला डाले।

नहीं अवसर बुरा कुछ सोचने का भीम से बोले
न मिट जाय परस्पर के कलह में कुल प्रभुत्व भले
सम्भालो हाथ में भारी गदा, अर्जुन चलो आगे
धनुर्धारी लगा दो प्राण की बाजी, प्रलय भागे।

चला गांडीवधारी पार्थ भीम भाई साहस से
सुना जब चित्रसेन महान् ने दो मुक्ति बंधन से
पराजित हृदय दुर्योधन दुःशासन को सुनाता है
सम्भालो राज़्य तप उपवास के मन निकट आता है

छुड़ाए शत्रुओं के हाथ से मुझको कभी पाण्डव
भला स्वीकार यह जीवन मचा है शैव-रण तांडव
ज़ो भागा समर से वह कर्ण ही उपदेश देता है
सुयोधन धैर्य धारण कर वृथा अवसाद तेरा है

सम्भालते हृदय से शकुनी ने अभिभाषण दिया सुन्दर
बुलाकर पांडवों को मैत्री का संदेश दें सुखकर
पुनः वापिस करो साम्राज्य जो उनका बसाया है
समय बतला रहा, हमने समय यों ही गँवाया है।

सुना जब पांडवों से मैत्री का संवाद शकुनी से
सुयोधन ने गरज से यह कहा, जीवन नहीं रहते
हमारी लाश पर कोई बिठा ले पांडवों का गढ़
हृदय है, प्राण है तबतक न सह सकता कभी जीकर।

बड़े भावुक हृदय से कर्ण यह आह्वान करता है
समय तेरह बरस बीते तो अद्भुत कार्य करना है
अरे शमसीर का स्पर्श कर सौगन्ध लेता हूं
सुलाऊँ पार्थ को संग्राम में संकल्प लेता हूँ।

भले संसार का कोई सहायक छोड़ हट जाय
धरा पर पा तों की शृंखला कंकड़ हो ढल जाय
समुन्दर सूखकर सर्वत्र रेगिस्तान हो जाए
समर अभियानमें यह अकिंचन तुमसे न हट पाए।

*

अक्षय पात्र

एक वैष्णव यज्ञ दुर्योधन महारथी कर रहा है
वन-निवासी पांडवोंका समय दिन-दिन टल रहा है
एक दिन करना तुम्हें है राजसूय यज्ञ भारी
कर्ण कहता गर्व से शक्ति बढ़े जम सुयशकारी ।

पार्थ का जबतक न होगा अन्त हाथों से हमारे
मांस भक्षण और मदिरा पान होंगे त्याज्य सारे
जब कभी याचक उपस्थित हो फलेगी कामना
भगवन समय वह आये कब हो पांडवों से सामना ।

सदन में मुनिवर श्रद्धा के पात्र दुर्वासा पधारे
कौरवों ने श्रद्धा से आतिथ्य चरणों में चढ़ाये
विज्ञ ऋषि वरदान देने को हुए उद्धत अभी
मांग ली 'पांडव निकट पहूँचें' सुयोधन ने तभी ।

एक दिन अपराह्न को उपरांत भोजन ऋषि पधारे
पांडवों को सोच पड़ गयी, क्या बचा जो खिला पायें
लौट कर आता हूँ स्नानादि पूजा-पाठ करके
अतः भोजन को व्यवस्था करें यह आदेश करके ।

सब भोजन समाप्त कर बैठे बचा पात्र में अन्न नहीं
अतिथि के भूखा रहने पर साधक हृदय प्रसन्न नहीं
सुनो कृष्ण ऐसे अवसर पर धरती हूँ बस तेरा ध्यान
पांचाली की सुनी प्रार्थना कृष्ण उपस्थित पवन समान ।

बड़ी भूख लग गयी द्रौपदी-कृष्ण कन्हैया मांग रहा है
अक्षय पात्र किनारा धोने पर थोड़ा-साग मिला है
पूर्ण क्षुधा जग के त्राता की भीम बुलाते दुर्वासा को
आने पर मिल रही तृप्ति शिष्य सहित मुनिजन परिजन को
करते ही स्नान आज भोजन का रहा अभाव नहीं
संतुष्टि ऐसो हो पायी, भरा पेट यह भान सही
भगवन् का अनुराग अभावों में बाहुल्य छिटक पड़ता है
निर्धन के घर भी वैभव बौरा-बौरा दौड़ा फिरता है।

धर्मराज-यक्ष वार्त्ता

द्वादश वर्ष महान् पर्व-सा बीत रहा है, प्रलयंकारी
आने वाला काल, विश्व कुहराम मचाने की तैयारी
यौवन का उन्माद राग भोगों की रहती अभिलाषा
पांडव वनवासी, गृह त्यागी, समर जीतने की आशा ।

अग्निकुंड ऋषिके आश्रमका बझा लिया अपनी सींगों में
हिरण भागता फिरा, चहुँदिशि वहि्न ज्वाल आरण्य वनों में
ब्राह्मणका अवसाद होम की जल पाती कैसे शुभ ज्वाला
बैठ गये हो क्लान्त सभी पांडव था हिरण वेग वाला ।

कर न सके ब्राह्मण की छोटी-सो सेवा असमय कैसा
क्या प्रताप हो गया लुप्त, पशु तक भागे दुर्दिन ऐसा
पाँच पांडवों की मन पीड़ा, प्रतिपल हृदय सिहरता है
लिखा भाग्यविधि वाम विधाता यह अभिभाषित होता है।

प्यास, नकुल जल देख कहीं, यह धर्मराजकी वाणी थी
विटप शृंग आरुढ़ अनुज की दृष्टि चतुर्दिक छायी थी
एक जलाशय झलक पड़ा है, तपा रवि की किरणों में
जल लाने चल पड़ा नकुल, विश्राम नहीं उन चरणों में

सुखद जलाशय त्रास कठिन, पी लेना चाह रहा पानी
अकस्मात् कानों से आ टकराती एक प्रखर वाणी
प्रश्नोत्तर बिन दिये जलाशय का पानी जो पी लेगा
तत्क्षण तज संसार समापण जीवन लीला कर लेगा ।

परेशान नकुल, प्यासा अधीर जलको पी लेता एक घूंट
निर्जीव पड़ा, कोमल किसलय-पूरित यह वृक्ष विशाल ठूँठ
सहदेव गये फिर प्रश्न मिला, उत्तर न दिया जल पीता है
हो गया शांत, अवसान, नकुलके निकट हाथ क्या होता है ?

आ गया पार्थ, पीड़ा महान् दो हरित पुष्पका आज निधन
फिर प्रश्न सुना हतचेत प्याससे विकल घूँट दो किया पान
रे धराशायी अर्जुन, गांडीव निरर्थक होता धरती पर
आ गया भीम देखा जो कुछ सहमा-चौंका अवनी तल पर

बोलो, विलाप कर बोल उठे हे नकुल ! अनुज सहदेव पार्थ
क्या देख रहा हूँ स्वप्न नहीं, तुम नहीं जगत् क्या नहीं व्यर्थ?
अंगों का शौर्य प्रताप गया चेतनता खोती जाती है
प्यासे प्रलापके बीच न जलकी आश तजी अब जाती है।

उत्तर न दिया इस महाबली की काया धरती लोट गयी
तत्काल विकल श्री धर्मराज आ गये अमरता मात हुई
जो दृष्टि बीच आ रही, जगत की शाश्वत यह सच्चाई है
लूट गये निरर्थक बंधु आज, बच गया अभागा भाई है

थी लगी प्यास जल ओर मनुज की ललचाई आँखें जाती
अंगों की तीव्र विकलताको दुनिया कब कभी रोक पाती
बढ़ते हैं हाथ लगानेको जल पीकर प्यास मिटाने को
जो देख रहे वह जला रहा, अन्दर-बाहर जल जाने को

होगी तेरी भी गति वही जल पीने से यह ध्यान रहे
दे दो पहले उत्तर निर्भय जलपान करो, यह मान रहे
कोई न दीख पड़ता कितना स्पष्ट शब्द पर आता है
प्रतिकूल भयानक परिस्थिति में भी साहस रह जाता है।

क्या प्रश्न बताएँ महाप्रभु उत्तर देने की बारी है
क्या और बुरा बच रहा, हमारे ही जाने की बारी है
कुछ प्रश्न सुनाई पड़ता है, ध्यानस्थ युधिष्ठिर धीरज धर
उत्तर देने का साहस कर तनने का लेकर पौरुष बल

क्यों सूर्य चमकता नित्य-प्रति ? रे यह ब्रह्माकी शक्ति है
आपत में कौन सहायक है ? साहस में जिसकी भक्ति है
क्या अध्ययन कर विद्वान मनुज? विद्वानोंके सत्संगों से
धरतीसे कौन महान् बता? माँ की महिमा बढ़ धरतीसे।

नभसे ऊँचा क्या बोल जरा? वह तो स्थान पिताका है
वायु से चलता वेगवान ? हाँ मन हो ऐसा व्यापक है
रे जली राख से तुनक कौन? दुखसे व्याकुल दिलका कोना
यात्रीका होता कौन मित्र? अध्ययन उपार्जित मति होना।

घर वाले की मैत्री किससे? पत्नी, न अन्यका ध्यान करो
क्या अंतकालमें साथ चले? बस एक धर्म सब त्याग चलो
वह कौन बड़ा वर्तन सबसे? यह धरती सब धारण करती
आनन्द बताओ क्या होता? शुभ करनी हृदय मगन करती।



क्या त्याग मनुज सबका प्यारा? बस अहंकारका त्याग करो
क्या छोड़ दिये आनंद मिले? आक्रोश त्याग सब शोक मिटे
छुट जाय क्या तो धनी बने? बस एक लालसा त्यागो तुम
है ब्राह्मण कौन बता देना? ब्रह्मा सम जिसका चाल-चलन

आश्चर्य जगत् में श्रेष्ठ कौन? नित नर-नारी मरते रहते
फिरभी मनमें जाग रहा भाव, हम शाश्वत धरती पर जीते
प्रश्नोंका लगा रहा तांता है यक्ष-अलक्षित पूछ रहा
हे धर्मराज तेरी महिमा जो धीरज धर उत्तर देता।

वरदान दिया हे धर्मराज अब एक भाई जी सकता है
जिसको चाहो तू बतला दे तेरे संग वह रह सकता है
मिले नकुल हे देव अन्य रहने दे अशुभ किनारों पर
आश्चर्य, महाआश्चर्य चयन ऐसा क्यों किन आधारों पर

हे यक्षराज मैं तनय कुन्ती यों दो न लौटने भी पाएं
तो गोद न सुनी होने को, रो-धोकर समय बिताएंगे
पर देख माद्री तो स्वर्ग गयी, दोनों ही उनके लाल लूटें
मैं भीम पार्थ में चुन लेता, तो धर्म धरा पर कहाँ टिके

इस कठिन समय का न्याय कठिन कितना दिलपर आघात करे
रे धर्म त्याग कर मानव कुछ भी पाले सब बेकार रहे
भाई अर्जुन-सा त्याग सके बल विक्रम भीम लुटाकर भी
जो धर्म नीतिकी लाज बचा पाए, नर-पुंगव प्रहरी ही

यमराज स्वयं बन हिरण, यक्ष चल पड़ा परीक्षा लेने
अपनी संतान देख लेने बल-विक्रम धैर्य परख लेने
आश्वस्त हुआ, वरदान दिया, संकट की घड़ी न टिकती है
जो बचा सके आचरण न प्रतिभा उसकी धीमी पड़ती है

तेरा प्रकाश जग में फैले, हे तेज-पुंज के महाशिखर
चारों भाई हो गये जीवित, आनन्द प्रहर, मोहक अविरल
जगकी इस कठिन तपस्याके दो क्षणको पंकिल बना नहीं
उद्देश्य त्याग जीनेसे मरना श्रेष्ठ, मंत्र यह भूल नहीं

कीचक-वध

एक-एक कर दिवा-रात्रि का होता गया पूर्ण अवसान
बारह वर्ष वनोंमें बीता मिट सका न दिल का सम्मान
पाण्डव सहित विपुल ब्राह्मण दल घुला-मिला नित रहता था
जीवन की इस कठिन यातनामें धीरज गढ़ रहता था।

सुनो ब्राह्मणों ! कष्ट उठाया रहे हमारे साथ वनों में
इस लंबी अवधिकी गाथा हृदय व्यथित कर दे दो क्षण में
धृतराष्ट्र के पुत्र यातना नित-दिन नयी सजाते हैं
बस भगवन् ही साथ अग्नि ज्वाला से बाहर लाते हैं।

भावावेश प्रबल आँखों से अश्रुकणों की लड़ियाँ देख
धोम्य ऋषिनें कहा युधिष्ठिर सुनो विगत कुछ कड़ियाँ देख
इन्द्र, महाविष्णु, नारायण सबने अवसर उलटा देख
छिपा लिया अपने को, बौना बने रहे कठिनाई देख।

आज विदाई की बेला में हृदय वियोग न सह पाता है
एक वर्ष की अवधि को अज्ञातवास में सह लेना है
धैर्य तुम्हारा हिमगिरी की उत्तुंग शिखरसे भी ऊँचा हो
अवसर हो प्रतिकूल पराक्रम उससे तीव्र तेज ऊँचा हो।

चले गये आवास ब्राह्मणोंका वियोग पाण्डवको खलता
आगे का अज्ञातवास भगवन् जानें कैसे है चलता
किन रूपों में किसे वर्ष का बारह मास बिताना है
राजवंश की संतानोंको लुक-छिप समय निभाना है।

पांचाल, मत्स्य, सल्वा, विदेह, वाह्लिक, दर्शन, सुरसेन सरिस
फिर मगध, कलिंग राज्य इतने, कर चयन निवास, विराग वरिस
मत्स्य देश राजा विराट् का अग्रज मेरा मन भाता है
कहा पार्थ ने, धर्मराज हर्षित मन अनुमोदन करता है।

रे मत्स्य राज शासक विराट् नित धर्म कार्यरत रहता है
निष्पक्ष सुनाता है निर्णय है पराक्रमी नहीं डरता है
राजसूय करने वाले सम्राट्, बताओ क्या कर लोगे
पार्थ पूछने लगा, गला भर गया, चाकरी तुम कर लोगे?

धर्मराज ने कहा, द्यूत-क्रीड़ा राजा को भाता है
सन्यासी बन ज्योतिष नीति शास्त्र पढ़ाने आता है
भीम पाकशाला में रहने की उत्कंठा बतलाता है
मैं वृहन्नला बन रह लूँगा, राजभवन अर्जुन कहता है।

नकुल अस्तबल की रखवाली गो-सेवा सहदेव करेगा
पांचाली का हाथ रमनियों का रुचिकर श्रृंगार करेगा
कितना कठिन आज का निर्णय, धरती पर अंगार सुलगता
राजमहल, सम्राट् बन्धु पत्नी समेत सेवक बन रहता।

देख द्रौपदी का साहस सैरध्री बन रह लेने का
भारत की ललनाओं के अनुकूल धर्म पर रहने का
अरी श्रेष्ट कुल की बाला तेरा सौभाग्य खुलेगा कब
आँखो से ढलते जल कण को प्रमुदित अश्रु बनाना कब।

धर्मराज ने धारण कर के संन्यासी का वेष चाकरी करनी चाही
नर्तक राज पार्थ बनने को उद्धत विविधा चाह रहो
वेष वदल कर सेवा वृत्त में रत होने को करें प्रार्थना
बल विक्रम पौरुष प्रताप का सम्भव कैसे छिप कर रहना ?

तुम सेवा के योग्य नहीं हे नर नायक विराट् कहता है
पुनः नियुक्ति हो जाती है हठमय आग्रह करता है
लगी द्यूत की बाजी बैठे संन्यासी के वेष युधिष्ठिर
मत्स्य देश नृप व्यस्त द्यूत की धूम चित्त रह सका न स्थिर।

महाबली भोजन प्रबन्ध में व्यस्त रहा करता दिनरात
कहीं चला आए कोई मल्लयुद्ध उतरता उसके साथ
पार्थ धनुर्धरी अमोघ बाणों से कंपा सके जो धरती
राजकुमारी सुकुमारी उत्तरा सिखाते नर्त्तन नटी-सी ।

तरुणाई अंगो में लेकर राजकुमारी लहराती है
मधुर गीत नर्त्तन के आभूषण से छवि विहंस जाती है
अंगों का लावण्य मधुर संगीत नाट्य के भूले पर
सजी उत्तरा मुस्कानों से रत्न जड़े हों शोले पर ।

वृहन्नला नृप की बेटी को सुमधुर राग सुनाता है
नूपुर ध्वनि झंकरित धरा पर वैभव धन विखराता है
यौवन का शृंगार सरस ऋतुराज पुष्प की लाली ले
राजभवन पल्लवित बालिका उठती हुई जवानी ले ।

नकल देखते घोड़ों की घुड़दौड़ सौम्यशालीन सजावट
गो-सेवा संलग्न बन्धु सहदेव सजग सुन नृप की आहट
नृप पत्नी सुदेष्णा जो अति प्राणप्रिय सुकुमारी थी
पति सेवा संलग्न धर्मरत, गृह स्वामिनी, सति न्यारी थी,

सेनाध्यक्ष महान् धुरन्धर कीचक भाई रानी का
डरते थे सब लोग, भयंकर बलवाला, अभिमानी था
सैरन्ध्री के रूप द्रौपदी का लावण्य देख लेने पर
कामातुर हो गया, असंभव ले संभाल ऐसे अवसर पर।

कुछ अभद्र आचरण देखकर उसका पांचाली रोयी थी
कौन जानता पवित्रता-स्नाता किन भावों में खोयी थी
दिन-दिन बढ़ता गया परन्तु कीचक का बेढंगा रोग
सती साध्वीके हृदय बीच रे बरस पड़ा क्या जाने लोग?

कीचक होता सफल नहीं उसका विषाद बढ़ जाता है
बहन साध्वो से अपनी कुत्सितहीन लालसा कहता है
करती है अवरोध प्रथम फिर समय बदलता जाता है
रानी का भी पूर्ण समर्थन कीचक को मिल जाता है।

अब सुदेष्णा नम्र वाणी से अनुनय-विनय सुनाती है
पांचाली दिल के कोने से ऐंठ-ऐंठ रह जाती है
कहीं चाकरी करने से क्या स्वाभिमान मिट जाता है?
जबरन बांहोंमें कस कर क्या दिलको जीता जाता है ?

कैसा यह आदेश निशाचर के कमरे में जाना है
पांचाली को धर्म बेचने के पहले मर जाना है
रानी का आदेश, स्वर्ण का पात्र साथ ले जाना है
कीचक के उस शयन-कक्ष से मदिरा भर ले आना है।

धरती पर दे आँख, द्रौपदी कीचक के आगे आयी है
कामातुर ने हाथ उठाकर आलिंगन मुद्रा लायी है
चली भाग पांचाल देश की क्षत्राणी गौरव-शीला
भगवन भारत की मिट्टी में रचते हैं कैसी लीला।

भाग रही अबला का पीछा महा नरक गामी करता है
पदाघात देता देवी को अट्टहास कर हँस देता है
आज द्रौपदी भीमराज की बाहों में बंध कर रोई है
अंत करो इस महानीच का करुणामयी बोझिल बैठी है।

भुजबल प्रबल प्रताप आज आक्रोश-शकट् पर आ बैठा है
सब कुछ कर सकने को उद्धत भीम कृत संकल्प खड़ा है
नहीं देव मत करो शीघ्रता मुझको उसे बुला लाने दो
कामी है बेहोश रहेगा, पंजे में ले आने दो।

गयी धैर्य धारण कर फिर से नीच कलुष मन बैठा है
अवसर देख सहर्ष प्रणय की पुनः याचना करता है
देख लिया मैंने प्रताप तेरा हे नर पुंगवा तेरी हूँ
प्रणय निवेदन स्वीकारोक्ति देती हूँ मैं तेरी हूँ।



एक निवेदन सुनो प्रणय की लीला गुप्त निभानी है
हम दोनों के बीच धरा पर नर-नारी कपि कोट नहीं है
प्राण प्यारी आदेश तुम्हारा मुझे हृदय से प्यारा है
इस मंगल-मय प्रणय शिखर पर युगल युग्म को जाना है

समय हुआ निर्धारित वीते जब निशीथ का प्रथम चरण
राजनर्तकी का लीलामय कक्ष प्रणय का मंगल क्षण
प्रमुदित मन से स्नानादि, चन्दन पुष्प पराग संवारे
कीचक कामातुर आ पहुँचा मंगल कक्ष प्रदीप निवारे

पड़ा हुआ तन मानव का झिलमिल रंगीन आवरण बीच
सौरन्ध्री के साथ रति-क्रीड़ा को पहुँचा उद्धत नीच
आह! गहन इस अंधकार में प्रियतमा कर रही प्रतीक्षा
आ पहुँचा देवी, पी लेने दे रस की गागर भर इच्छा

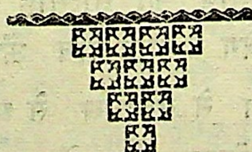
भुजबल का अभिमान, जवानी की अंगराई ले लेकर
आह्लादित आ गिरा धमककर पूर्ण समर्पित काया पर
अवसर समुचित जान उठी रंगीन महकती सी चादर
कीचक था हतचेत विकल, जब शेर निकल आया बाहर

अब महाबली ने की न जराभी देर उठा कर फेंकदिया
दंगल हुआ भयानक, कीचक ने भी भुजबल झोंक दिया
बहुत वार जब उठा-पटक में दोनों थक कर चूर हुआ
ऐसा था संयोग भीम ने भारी धक्का मार दिया।

धराशायी हो गया प्रबल भुजबल वाला अत्याचारी
मिल न सकी द्रौपदी, द्रौपदी-सा चादर में सेनानी
हर्षित अति आह्लाद पूर्ण भावों में भीम चला आगे
धराधाम से विदा निशाचर, पांचाली के भय भागे।

शुभ संवाद सुनाने के उपरान्त भीम स्नानादि कर
धूप और चंदन लेपन कर पूजा-पाठ भजन-कीर्तन कर
करता है परितोष हृदय में भगवन ! तूने रख ली लाज
पांचाली की लाज लुट गयी होती तो क्या होता आज

आज द्रौपदी कर्मचारियों को समझाती हर्षित मन
पति मेरे गंधर्व सम्भाले क्या कीचक उसका संबल
जो अनाचार रत रहे बताओ पौरुष उसका क्या होगा।
परनारी-गामी मानव दानव से भिन्न नहीं होगा।



वस्त्र-अपहरण

गंधर्व की अर्द्धांगिनी सैरन्ध्री सुन्दर भामिनी
कीचक-पतन उपरान्त मानो दानवी है नागिनी
कब आ उठे आक्रोश इस परिचायिका के हृदय में
जिस पर पड़े अभिशाप मच जाय प्रलय अविलम्बमें

सम्वाद कुरु नायक को मिलता अब तलक ऐसा रहा
कोई पता चलता नहीं, पांडव धरा तज चल गया
पर अन्त में जब यह सुना बध वीर कीचक का हुआ
सन्देह हो आया कहीं वह भीम हाथों ही गया

दो ही धरा पर जान ले सकते थे कीचक वीर का
था एक उनमें भीम ही संशय बढ़ा कुरुराज का
आभास ऐसा है बसेरा पांडवों का मत्स्य नगरी
आक्रमण कर देश पर, पांडव मिलेगा स्वतः ही

त्रिगर्त का शासक सुशर्मा युद्ध को तत्पर हुआ
था द्वेष कितने वर्ष का, प्रतिशोध का अवसर हुआ
फिर कर्ण ने प्रस्ताव का सोत्साह अनुमोदन किया
हम बढ़ चलेंगे वेग से आह्वान ऊँचा स्वर किया।

दक्षिण दिशा से सैन्यबल से आक्रमण भारी किया
गायों को लेकर कैद में बढ़ता सुशर्मा ही गया
संवाद पहुँचा राज्य में आतंक भीषण छा गया
जो कंक बन कर रह रहा उस युधिष्ठिर ने यों कहा।

चिन्ता न करनी आप को संन्यासी ही पर्याप्त है
हे मत्स्यराज महान कितने वीर तेरे पास है
जो अस्तबल को देखता, उस धर्म ग्रन्थि को बुला
गोपाल तन्तीपाल को बलवा सरीखे को बुला।

रथ की भयानक योजना, बलवा बना श्री भीम अब
रण को चला तैयार हो शत्रु भगे अविलम्ब अब
बस एक ही अर्जुन बचा जो नर्त्तकी के वेष में
सब पांडवों का दल चला सोत्साह रण की खोज में

जम कर भयानक युद्ध में अगनित सिधारे स्वर्ग को
शत्रु ने जम कर कैद में ले ली नृपति सम वीर को
जब तक सम्भाले युद्ध को यह सब भयानक हो गया
राजा पड़ा जब क़ैद में, सैनिक का संबल खो गया

समझा दिया जब धर्मसुत ने भीम रुक कर सोचता
भारी प्रलय के बीच मानव आत्म बल नहीं बेचता
साहस बढ़ा कर भीम अब भीषण महा रण में चला
आया सुशर्मा कैद में मुक्ति नृपति अब पा गया।

आल्हादमय नृप के नगर में महोत्सव परियोजना
बन गयी रण से वीर जब लौटे बना शुभ योजना
पहुँचने पाए नहीं राजा, विजयी हो राजधानी
बीच में गोपालकों ने सूचना दी दीनवाणी।

छीनकर गायें हमारी लूटते वे आ रहे हैं
एकमात्र कुमार तुम रक्षक नृपति रण में लगे हैं
उत्तर नृपति सुत कह रहा साहस से मैं तैयार हूँ
बस सारथी हो साथ में रण के लिए तैयार हूँ।

सैरन्ध्री ने तब उत्तरा को कहा मैं हूँ जानती
रथ हांकने में दक्ष है बृहन्नला यह मानती
उत्तर ने बातें उत्तरा की मानकर बुलवा लिया
रथ पर नहीं आकर चढ़ी रथ दौड़ता आगे चला।

धारण करे रण-वेष प्रमुदित हृदय यह नटी सारथी
संकोच से सोभार, आनन सहज लज्जा भार थी
तैयार होकर चल पड़ो युवराज तब बोला सुनो
रक्षा तुम्हारी मैं करूँ फिर व्यर्थ मनमें तुम डरो।

इस नर्त्तकी ने गर्व से कर दी भयानक घोषणा
कुरुराज रण को छोड़कर भागें यही सम्भावना
अब स्वयं जब युवराज रण में आ पड़े उत्साह से
है कौन जो संभाल ले इस आक्रमणको ढाल से।

नृपति दक्षिण दिशा की ओर सेना ले बढ़ा आगे
बनी परिचारिका ही सारथी उत्तर चला आगे
अगर अर्जुन भी आ जाय तो क्या यह तो समर अपना
अभो जो सामने आये विजय उसकी बने सपना

सुयोधन ने मुखर स्वर में कहा हे कर्ण ! शुभ अवसर
पुनः वनवास द्वादश वर्ष, जीवन क्रूर गति दुस्तर
जगत् में समर है उसका जो गर्दन हाथ ले चलता
न साहस कर सके जीवन व्यथा हो निष्क्रिय रहता ।

सुनो युवराज उस टहनी से जाकर ला जरा थैला
अरे कहते हैं सब उसे वृक्ष पर शैतान है फैला
न चिंता कर कहा फिर सारथी ने शीघ्र ले आना
हुआ विस्मय, खुला थैला, चमकता शस्त्र अनजाना ।

सुलक्षणे ! कौन हो तुम व्यग्रता से बोलता उत्तर
कहा तब सारथी ने पार्थ हूँ मैं शीघ्र चल बढ़कर
हमारे भाई-बंधु सब बदलते वेष को लेकर
तुम्हारे घर रहे यह भाग्य का है खेल हे प्रियवर ।

क्षमा करना महारथी ! भाग्यशाली कौन सम मेरे
जगत विख्यात अर्जुन साथ है जब समर में मेरे
निकट अति निकट शत्रुदल, महारथी पार्थ कर जोरे
प्रतीचि ओर है उन्मुक्त मग के मिटे सब रोड़े ।

धरता ध्यान भगवन सूदन का तू तेज देते हो
हृदय में जागृति भर दो समर में विजय देते हो
हटाकर चूड़ियाँ हाथों में चमड़े का कवच धारण
पुनः रथ पर हुआ आरुढ़ धनु टंकार संहारण ।

सुना गांडीव की टंकार कौरव दल सहम जाता
दिया जो देवताओं ने कवच रह-रह चमक जाता
न अपनी शक्ति का हो दम्भ साहस खो नहीं सकता
विभात्सु धन्य तेरे सम धरा पर तू ही है लगता।

अश्व दौड़ते रणभूमि की ओर दौड़ता रथ का चक्का
अर्जुनको गांडीव सहित जब देख लिया सब हक्का-बक्का
कहा द्रोण ने बड़ी कुशलता से आगे का काम हमारा
दुर्योधन ने नहीं मान्यता दी गरजा है समर हमारा।

सुनो कर्ण ! तेरहवाँ बाकी वर्ष अभी अर्जुन आया है
बारह वर्ष उसे फिर से वनवास भाग्य देने आया है
व्यर्थ द्रोण बतलाते उसको इतना महाबली उत्साही
उससे बढ़कर संग हमारे कितने हैं फौलादी साथी।

दुर्योधन का वचन हृदय में धारण कर बढ़ आया कर्ण
लड़े न कोई भी लड़ लेगा उससे स्वयं अकेला कर्ण
सभी गाय को लेकर भागो परशुराम भी आयेगा
धरती पर लोहू उसका बिन मूल्यों का ढल जायगा।

बढ़ता हूँ मैं स्वयं अकेला अर्जुन क्यों मतवाला है
थोड़े ही क्षण में उसका गांडीव टूटने वाला है
सुना रहा टंकार हमारे शोणित को धिक्कारेगा
समय आ गया देख शीघ्र वह धरतीसे उठ जायगा।



साहस का अवतार कर्ण बाणों की वरसा करता है
अर्जुन पर आघात भरे आक्रोश हृदय से करता है
समर आज का प्रलयंकारी धरती पर लोहू की धार
गर्दन लोटेगी धरती पर भीषण होगा यह त्योहार।

कृपाचार्य ने देख समर की भीषणता को कहा सुनो
बढ़ो अकेला नहीं समर में दल-बल सहित प्रहार करो
बड़ी शक्ति भी कभी-कभी एकाकी हो मिट जाती है
मेल-जोल साधारण ताकत विजयी हो जाती है।

सुनकर तीखे स्वर में बोला कर्ण समर आये बेकार
वेद-पाठ है वृथा शत्रु के बने प्रशंसक साहस हार
जिसके शोणित में कौरव का नमक सहमना उसे नहीं
खो जाए पुरुषार्थ दूसरे चिंता उनकी मुझे नहीं।

सुना अश्वत्थामा ने मन में आशंकाएं भरी हजार
सुनो कर्ण ! नृप नहीं राजधानी को लौटे भारी हार
तुम लहराते विजय पताका अहंकार है भूल तुम्हारी
कब आया अवसर जब रण में बाजी अर्जुन से है मारी

मान लिया हो नहीं क्षत्रिय का लोहू इन बाँहों में
कहाँ शास्त्र में पढ़ा द्यूत में जीत राज्य लो हाथों में
समर विजय जिनको मिल पाती वे भी व्यर्थ न बकते हैं
मर्यादा होती उनकी भी शिष्टाचार बरतते हैं।

अग्नि का लघु ज्वाल अन्न को पका मधुर कर देता है
शांत सदा रहता कब बेमौके अड़-बड़ बक देता है
सूरज का अति प्रबल तेज जगती को राह दिखाता है
सुना कभी उसका प्रकाश अपने ऊपर भी आता है ?

धरती का साहस देखो सब व्यथा धीरता से सहती है
कभी उबलती नहीं वृथा वाचाल नहीं हो सकती है
जूएमें जो छीन लिया राज्य क्षात्र क्या धर्म तुम्हारा ?
भरी सभामें अबला रोती पौरुष सूचक कर्म तुम्हारा ?

पक्षीगणको जाल बिछाकर आखेटक करता है कैद
वही द्यूत में की है तूने जान गये सब तेरा भेद
अर्जुन से संघर्ष न जूए का मर्मज्ञ कभी कर सकता
गर्जन हो गांडीव जहाँ साधारण जन क्या टिक सकता।

दुखी हुए सुन यह विवाद फिर स्वयं पितामह बोले आज
बुद्धिमान कब निंदा करता सूझ-बूझ से मिलता राज
कभी-कभी साधक मीमांशक भी खो देता है धीरज
आता है आक्रोश तभी दुर्योधन खोता है धीरज।

सुनो अश्वात्थामा जो कुछ भी कहा कर्णने ध्यान न दो
द्रोण जहाँ हैं साथ हमारे भय का फिर स्थान न दो
परशुरामको छोड़ धरा पर कौन द्रोणसे लड़ सकता है
सभी सोच कर चलें साथ हम, अर्जुन आहत हो सकता है

भीष्म द्रोण की ओर मुड़े सुन लो नायक तेरहवां वर्ष
बीत गया कल ज्योतिष कहता पांचजन्य गुंजरित सहर्ष
तुम गिन सके न चाल ग्रहों की धीरे-धीरे चलती गयी
भ्रमित न हों, कर लें विचार क्या सबकी बुद्धि मारी गयी

अब भी है अवसर विचार कर मैत्री हम कर सकते हैं
युद्ध भयानक रूक सकता है सुख से सब रह सकते हैं
दुर्योधन मतिमंद धूम में बोल पड़ा हम युद्ध करेंगे
एक ग्राम भी दे न सकूँगा उसे पराजित शीघ्र करेंगे।

अर्जुन का गांडीव बाणसे भीष्म पितामह के चरणोंको
चूम रहा, फिर अन्य पूज्य गुरुजन नायक साधक चरणोंको
एक-एक कर कर्ण अश्वत्थामा फिर कृपाचार्य सम वीर
हुए पराजित द्रोण-भीष्म तक धन्य पार्थ पांडव कुल धीर

दुर्योधन की आयी बारी हुआ आक्रमण जोरों से
रथ को छोड़ सारथी भागे, अलग हुआ रथ घोड़ों से
सभी बचाने लगे सुयोधन को पर कौन बचा सकता है
उन्मत्त हो गांडीव नाचता, तूफानों से लड़ सकता है

अर्जुन ने गांडीव सम्भाला निकला बाण भयानक एक
शत्रु दल बेहोश पड़ गया, कटुता ने दी माथा टेक
पड़े हुए बेसुध कौरव–दल का सब वस्त्र हटाता है
अर्जुन का प्रताप जगती में व्यर्थ नहीं सब गाता है।

दुर्योधन के साथ पराजित सेना लौटी खो सम्मान
वस्त्रहीन सेनापति नायक, कुरुबंश जन्मी संतान
उत्तर चलो लौट नगरी को चंदन लेप सुवासित गात
करो, धूम मच जाय धरा पर चिंतित होंगे घर पर तात

समझाकर इतना टहनो पर अस्त्र-शस्त्र देता है डाल
महाबली ने बृहन्नला का रूप बना ली आँचल डाल
भेज दिया संवाद नगरमें विजय प्राप्त कर उत्तर आता
करो पूर्ण सम्मान धरा पर मत्स्य सूर वीरोंकी माता।



संन्यासी का रक्त

विजय मिली सुखकर विराटको नगर लौट घोषणा हुई
ज्ञात हुआ उत्तर रण में है भय सूचक वेदना हुई
प्रिय पुत्र ! तेरे यौवन का मुकुल स्फुरण बेला में
नन्हा बालक खो जाता है भीड़ भयानक मेला में

संशय आहत नृप सेनाके कुशल चालकोंका दल भेज
मर्माहत दिल से उत्तर के आने की अभिलाषा सेज
संन्यासी के रूप कंक ने कहा, न संशय आप करें
राजन ! जबतक वृहन्नला है शत्रु हाहाकार करे।

हो अजेय भी इस धरती पर उसे पराजित होना है
रथ का चालक हो वृहन्नला उसे न संशय होना है
शीघ्र मिला संवाद शत्रुओंसे गायें छीन लायी गयीं
मत्स्य देश युवराज शौर्यसे कौरव सेना मारी गयी।

सत्यमान संवाद नृपति का हृदय हर्ष से आप्लावित
मुस्काता है कंक कहकहा मार कह रहा आह्लादित
कौरव की क्या बात जगत् में कोई लोहा ले न सके
वृहन्नला जिस रथका चालक नायक पीठ दिखा न सके

स्वयं कृष्ण या इन्द्रदेव के रथके चालक का अभिमान
टूट जाय जब वृहन्नला को देखे बिजली-सा गतिमान
जिसने शुभ संवाद दिया है उसे रत्नकी ढेरी दे
पुलकित हृदय विराट घोषणा करता पूजन अर्पण दे।

तोरण बन्दनवार बंध रहे जगमग दीपों का त्योहार
राजनगर में विजयी उत्तर का आगमन गले में हार
हर्ष और उल्लास नगर की गली-गली में दौड़ रहा
पाशा-क्रीड़ा बैठ गये नृप कंक साथ में खेल रहा।

देखा तूने तेज वंश की लाज बचाई उत्तर ने
शत्रु दल संहार किया है मान बढ़ाई उत्तर ने
हर्षित हो अह्लादित होकर बोल रहा जय घोष विराट
कंक समय पर सदा बोलता बृहन्नला के चलते तात

महाबली युवराज वंश को उज्ज्वल करने वाला है
उसके पौरुष के सम्मुख नर्त्तकी गीत क्या गाता है ?
अरे कंक ! आनन्द प्रहर में क्या अनभल बक देता है ?
नाच नचाएगी, नाचेगी उसका पौरुष भजता है !

इस अवसर पर अगर नर्त्तकी उत्तर संग नहीं होती
उत्तर का पौरुष दो पल में शांत दुर्गति हो होती
भाग्यवान् सुकुमार युवक जो मिला सारथी ऐसा था
कौरव दलसे लड़ लेना क्या खेल? टिड्डियोंका दल था।

राजा का आक्रोश सातवें आसमान से ऊपर था
राजकुमारों को श्रेणी में नर्त्तकी का क्या प्रकरण था
जब-जब हृदय हमारा गौरव से पुलकित हो जाता है
तुच्छ नर्त्तकी का गर्णन तू वृथा पुनः ले आता है।

फेंक दिया कौड़ी क्रोधाग्नि धधक उठी थी जोरों पर
कंक-नासिका आहत, चलता लाल रक्त शुचि अधरों पर
सैरंध्री ने रक्त न भू पर गिरने दिया, सम्भाला है
सोने के छोटे बर्त्तन में प्रेम-भाव से डाला है।

यह क्या ? तेरी यह विडंबना ? रक्त संभाले क्यों अबले
क्रोधातुर विराट आंखों में अंगारे भर कर बोले
सुकुमारी कुल की मर्यादा मानवता का ध्यान धरे
हो विनीत बोली राजा चिंता इस क्षण ना आप करें।

संन्यासी का रक्त धरा पर जहाँ-जहाँ गिर जायगा
बरस-बरस तक अनावृष्टि रे महाकाल छा जायगा
कौन बचाएगा धरती को महाकाल की पीड़ा से
क्या सुलझेगी विश्व समस्या कौतुकमयी इस क्रीड़ा से।

आये राजकुमार समय अब नहीं बात करने का है
कंक-मंत्रणा बृहन्नला को अभी रोक लेने का है
सह लेगा क्या धार रक्त का महारथी जिंदा रहते
समय बीत जाने पर बातें बदलेगी रहते-रहते।

उत्तर ने आते ही आहत कंकदेव को देख लिया
भयाक्रांत हो उबल पड़ा रे किसने यह दुष्कर्म किया
समझाने लग गये पिता छोटी बातोंको ध्यान न धर
जब-जब मैं लूँ नाम तुम्हारा जपे नर्त्तकीका यश स्वर।

लगा बताने अगर जीतकर आता पुत्र तुम्हारा है
श्रेय नहीं उसका वृहन्नला के कारण रिपु हारा है
भला बताओ कबतक सुनता ऐसी अट-पट उल्टी बात
कौड़ी फेंक मार दी मैंने खैर छोड़ दे अब यह बात।

अरे पिताजी छोड़ इसे दूँ तो फिर ध्यान धरूँ किसका
माथ टेककर क्षमा माँग लो प्रलयंकारी फल इसका
नतमस्तक राजा ने तत्क्षण क्षमा मांग ली देर न की
कुशल क्षेम पूछा उत्तर से किस कौशल से जय ले ली।

नहीं वीर मैं पिता, पराजित मैं न किसी को कर पाया
देव पुत्र का चमत्कार है, गायों को भी छीन लिया
कौन देव का पुत्र बताना वत्स बधाई मैं दे दूँ
बलशाली वह कौन प्रणय बन्धन में वनिताको दे दूँ।

सभाकक्ष में धूम-धाम है कंक, बल्लवा, वृहन्नला
तंतिपाल पुनि धर्मग्रन्थी भी युवराजों संग लगे भला
सभा बीच युवराजों के समक्ष बैठता सेवक-जन
क्या विराट यह सह लेगा उगले शोला यह आया मन।

भेद बताया गया नृपति को पांचाली संग पांडव हैं
वेष बदलकर समय बिताया, कर सकते रण-तांडव हैं
पुलक स्फुरित बाँहों में है धर्मराज आबद्ध हुआ
कन्यादान करूँ वनिताका अर्जुन अवसर आज हुआ

महारथी, संयमी, तपस्वी, योगी पार्थ सदाचारी
तात तेज पौरुष महान् ने वचन कहा मंगलकारी
राजकुमारी सुकुमारीको सुर ध्वनि मधुर गीत नर्त्तन
सिखलानेवाला पुत्रीके सिवा समझ क्या सकता मन।

अभिमन्यु इसके जीवन की नौका को खे सकता है
प्रणय-पाश आबद्ध रहें, यह नीति सम्मत लगता है
धर्मराज के अनुज इंद्रियों पर अधिकार तुम्हारा है
विमुख अधर चुंबन आलिंगन त्याज्य स्वधर्म निभाना है।

अहंकारवश अर्जुन अवधि के अन्दर हो गया प्रकट
तेरहवाँ जब वर्ष न बीता उचित न था यह उझझटपन
अब से द्वादश वर्ष पुनः तुमलोगों को वन जाना है
दुर्योधन के एक दूत ने आकर अभी सुनाया है।

धर्मराज ने उत्तर देकर भेज दिया जाकर कह दो
अवधि बीत गयी तब गरजा पांचजन्य, उससे कह दो
द्रोण, भीष्म सम महाज़्योतिषि भूल गये क्या सीधी बात
सूर्य प्रकट रहते कह देगा कैसे कोई बाकी रात।

*

प्रबोधन

बीत गयी अज्ञातवास की अवधि पांडव प्रकट हुए
उपलव्यनगर स्थापित हो, घुटन-पीड़ा से मुक्त हुए
स्वजन मित्र को मिली सूचना, नगर द्वारकासे बलराम
कृष्ण, सुभद्रा अभिमन्यु संग यादव सेना छा गयी धाम।

काशी-गौरव शैव्य द्रुपद सुत और शिखंडी सहित चले
आलिगन सम्मान हर्ष आपस में बंध गये गले-गले
शुचि प्रणय-पाशमें अभिमन्यु वैदिक मंत्रोंका उच्चारण
सौंदर्य-भार अधखिली कली, ऋतु राज प्रसून उत्तरा मन

मृदु प्रणय-गीत संगीत रंगशाला की तैयारी बीती
अधरों का मधु-चुम्बन नयनोंसे अलस-सरस बेसुधी टली
नभ के रंगीन किनारों से धरती पर नजर लौट आयी
सब की उत्सुकता भरी दृष्टि, भगवान कृष्ण पर जम पायी

साधक, योगी, जगके त्राता, शोभा-सज्जनता-सिंचित तन
जब लगे प्रबोधन स्वयं कृष्ण, सब ध्यान मग्न चिर चिंतित मन
देखो पांडव का वनवासी होना, अज्ञात छिपे रहना
सब के पीछे जूए का छल दुर्योधन का दुर्गति होना।

पांचाली का अपमान पुण्य सलिला की धार सुखाती है
गंगा-जमुना की पवित्रता रे पाप-जलधि मिट जाती है
चिंतनका समय कठिन आया निर्णय यह सभा करे फिर से
क्या धर्म न टिकने पायगा, होगा अनर्थ जग में फिर से।

धीरज से सब संताप सहा, अवधि की पीड़ा झेली है
पांडव को मिले राज्य आधा, यह नीति भरी पहेली है
जो धर्मराज पीड़ा न किसी को जीते जी दे सकता है
संतुष्ट रहेगा अर्द्ध भाग हो प्राप्त युद्ध टल सकता है।

मैत्री की परम जरूरत है सम्मान जनक हो समझौता
कोई गणमान्य दूत भेजो दुर्योधन से कर लो सौदा
सुन लिया सबों ने हलधर ने तब किया हर्ष से अनुमोदन
इस कठिन कार्य के लिए दूत का चयन करे हम रिपु सूदन

भीष्म द्रोण शकुनी कौरव पति कृपाचार्य श्री विदुर महान्
अन्य जनों की अनुकम्पा जो प्राप्त करेगा दूत महान्
दुर्योधन से विज्ञ कुशल सम्भ्रान्त व्यक्ति ही बात करे
राजदूत वह जो संकट में धर्म परायण निडर रहे।

हर प्रकार से सम्भावित संघर्ष मिटाना पहला काम
हो अधिकार न भले नम्रता से प्राप्ति करने का काम
आग्रह से भी निपुण दूत शत्रु से प्राप्त करे सम्मान
पता नहीं दुर्मति में फूला दुर्योधन को क्या हो भान।

सुनता रहा सात्यकि यादव कुल संग्राम विजेता था
भावावेश उठा गर्जन उत्साह पुर्ण अभिभाषण था
सुनो पांडवों साहस से रण की करनी है तैयारी
भीक्षा नहीं मांगने जाते न्याय धर्म के अधिकारी।



पूर्ण किया द्वादश वर्षों का वनवासी होना तुमने
तेरहवां पुनि वर्ष सहमते छिप करके झेला तुमने
जो करना था किया तुम्हारा है अधिकार न यह भूलो
राज्य मिलेगा तुमको निश्चय अवसर आनेपर लड़ लो।

जो हलधर ने कही नम्रता की मीठी-मीठी बातें
उससे क्या कुछ दे देगा, मिट जायगी काली रातें
समय बिताना व्यर्थ साफ शब्दों में राज्य मांगना है
मिल जाय सब ठीक अन्यथा क्षात्र धर्म रत रहना है।

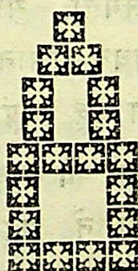
ओजपूर्ण प्रस्ताव सुना जब द्रुपद राज ने तोड़ा मौन
युद्ध बिना क्या मिल सकता है? रणकी तैयारी सब गौण
वेद-मन्त्र ज्ञाता मेरे जो मण्डप में पूजा करता है
दूत बनाकर उसे भेज दें, पता लगे रिपु क्या कहता है।

वासुदेव गंभीर भाव से पुनः निवेदन करते हैं
कौरव-पांडव दोनों को हम एक भाव से लखते हैं
आये हम विवाह अवसर पर वापिस हमको जाना है
द्रुपद राज। जो कहा आपने उसे काम में लाना है।

कृष्ण द्वारका धाम पधारे स्वजन सहित, मन पीड़ा थी
मिले कहाँ सैनिक सहायता परियोजना भयानक थी
कोरव-पति भी घूम-घूमकर सैन्य संग्रहण करता था
जन-साधारण इन संवादों से अब बोझिल होता था।

द्रुपद विप्र को दे प्रबोध कहता है मिलो कौरवों से
अधिक दिनों तक रहो हस्तिनापुर में काम न जोरों से
नौजवान दल हो सकता है, वयोवृद्ध की बात न माने
आपसमें संकट बढ़ सकता सब सोचे अपने मन माने ।

सफल हुए तो राज्य मिलेगा पांडव जीवन पायेंगे
नेक सलाह पसन्द न आये तो कौरव पछतायेंगे
हर प्रकार से छानबीन हस्तिनापुरी का अध्ययन कर
हम न रुकेंगे तत्पर होंगे पता नहीं कब मचे समर ।





निरस्त्र केशव

द्रुपद-दूत दुर्योधन के घर मैत्री स्नेह बढ़ाने को
अर्जुन विकल द्वारका आए कृष्ण शरण आ जाने को
दैवयोग दुर्योधन भी भगवान कृष्ण के भव्य भवन
पहुँच गये दोनो ने देखा निद्रा मग्न दया उपवन ।

प्रथम पहुँच कुरुराज विराजित अति मर्यादित आसन पर
कृष्ण देव के सर के पीछे अर्जुन चरणों से हट कर
खुले नेत्र अनुभव सिंचित है पार्थ उभय कर जोड़ खड़ा
अभिवादन उपरान्त मुड़े सर ओर महारथी है अकड़ा ।

धृतराष्ट्र का पराक्रमी बलवीर पुत्र तत्क्षण बोला
शीघ्र युद्ध होने वाला लगता साहसपूर्वक बोला
तेरे सम्मुख हम दोनो माधव समान अधिकारी हैं
एक वंश के दो कुमार क्या कहूँ स्वयं सुविचारी हैं ।

एक बात पर नीति धर्म की माधव आज सुनाता हूँ
मैं पहले आया हूँ मिलने यह अधिकार जताता हूँ
करो युद्ध में मदद हमारी पहला याचक मुझको जान
धर्मनीति अवतार कृष्ण तुम परम्परा के पोषक प्राण ।

पुरुषोत्तम धीरज धरकर मर्यादित भाषा में बोले
प्रथम दृष्टि अर्जुन पर आयी खड़ा हाथ दोनों जोड़े
तुम आए हो प्रथम तुम्हारा भी अधिकार रहेगा ही
जो कुछ मेरे पास युद्ध में दोनों ओर मिलेगा ही ।

एक ओर सम्पूर्ण सैन्यबल, शस्त्रों सहित सजी सेना
और दूसरी ओर अकेला रे निरस्त्र मेरा रहना
सुनो पार्थ तेरी जो हो इच्छा कर प्रकट करो धारण
जो बच जाय कौरव दलको मिलना है निश्चय कारण।

बोल विनीत मधुरवाणी अर्जुन निरस्त्र केशव के हाथ
दुर्योधन आल्हादित मन से नारायणी सैन्य दल साथ
उत्साहित दुर्योधन सेना सैन्य-शक्ति से मतवाला
पहुँचा सीना तान जहाँ बलराम शक्ति-शौरभ वाला।

तुम दोनों के बीच युद्ध में दुर्योधन मैं क्या कर लूँ
जब विराट-कन्या का परिणय हुआ कहा जो कुछ कह दूँ
सदा कृष्ण को कहा कौरवों और पांडवों में क्या भेद
हम दोनों के लिए उभय पक्षों में युद्ध भयानक खेद।

कृष्ण किंतु अनसुनी सदा करता आया इन बातों की
मैं भविष्य को देख रहा घन घटा भयानक रातों की
अर्जुन का मैं साथ नहीं दे सकता तुम्हें बताता हूँ
फिर केशव विपरीत समर कर सकूँ न संभव पाता हूँ।

नीति-धर्म अनुसार तुम्हें जो ठीक जँचे करते जाना
अंतिम थे यह वचन वीरके फिर स्वरका था रूक जाना
धूम-धाम के साथ हस्तिनापुर में दुर्योधन आया
कितना मूर्ख पार्थ केशव को रणहित बिना शस्त्र पाया

पार्थ ! निहत्था मुझको लेकर युद्ध करेगा कैसी भूल !
कहा कृष्णने, प्रमुदित होकर विहँस पड़ा अर्जुन सब भूल
केशव ! तेरा तेज महा प्रलयंकारी जब छाएगा
इस बसुधा पर कौन सामने जो मेरे टिक पाएगा,

कौन शस्त्र की करे कामना जब गांडीव हमारे हाथ
मन की मेरी साध सारथी रण में हो तुम मेरे नाथ
विहँस पड़े मधुवन में वंशी तान सुनाने वाले नटवर
विजय मिले पांडव कुमार धरती पर सुयश अमित सहचर



आतिथ्य

रक्त उबलता उभय पक्ष का हो सकता विस्फोट कभी
युद्ध अस्त्र सेना परियोजन कौरव पांडव व्यस्त सभी
मद्र देश अवतंश शल्य सेना असंख्य ले चलता है
नकुल और सहदेव भानजे के हित व्याकुल रहता है।

कोसों तक शमसीर चमकते रथ, हाथी, घोड़ों, की भीड़
चले अनवरत पुनः मिटाते क्लांत व्यथित अलसायी पीड़
दुर्योधन ने कुशल कर्मचारी को सेवा हित भेजा
नृप समेत सेना की सेवा के साधन उपलब्ध किया।

देख सेवकों की तत्परता शल्य सूचना देता है
पुरस्कार आवंटित करना उचित भान यह होता है
जिसने भेजा तुझे यहाँ पर उसे सुना दो सारी बात
तृप्ति मिली सुखद सेवा से मिटा मार्ग का सब संताप।

दुर्योधन को मिली सुचना ध्यान लगाए बैठा था
जाल बिछा कर आखेटक पक्षी पर नजर गढ़ाए था
हुआ उपस्थित हाथ जोड़ अभिलाषा पूर्ण करो नायक
हुई त्रुटियाँ सेवा में बीता कुछ प्रहर कष्ट दायक।

मदिरालय मधुपान पुष्प चंदन रंगीनबंधे तोरण
क्लांत हृदय हर्षित हो जाता द्विगुणित गति मचेगा रण
रण को साध लिए जन नायक सैन्य सारथी दलबल साथ
प्रमुदित हो आतिथ्य पान कर पुलकित हृदय मचलते हाथ।

दुर्योधन तुमने आतिथ्य समर्पित किया भला होगा
धर्मयुद्ध में कृपा करे हे नाथ भयंकर रण होगा
निस्सन्देह कुरुराज हमारी सारी सेना साथ रहेगी
यह मेरा सौभाग्य युद्ध में अरि सेनाकी चल न सकेगी।

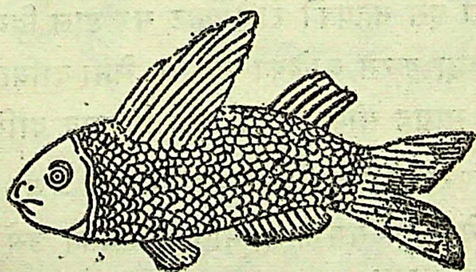
सुनो सुयोधन मद्रदेश की मर्यादा की क्या सीमा
वचन दिया जो अटल रहेगा पुरुष वचन अनुपम बीमा
देख युधिष्ठिर को आता हूँ यह व्यवहार बताता है
ठीक कहा तुमने दोनों हित एक भाव ही आता है।

परम पूज्य मामा ! चरणों में नतमस्तक सहदेव नकुल
कुशल क्षेम उपरांत कहा सेना दुर्योधन संग विपुल
स्तंभित दो क्षण पांडव पुनि धर्मराज बोले मामा
दुर्योधन दल श्रेष्ठ सारथी सम्भवतः तुमको होना

महायुद्ध में मेरे भाई अर्जुन की तुम लोगे जान
अजब विधि का लेख सुधाका कलस छोड़कर विषका पान
साहस करता कर्ण कभी बढ़ना चाहे दिल तोड़ूगा
है अर्जुन अजेय इतना उसके मानस में जोड़ूंगा।

फिर तुम्हीं बताओ बार-बार सुनता फटकार बढ़ेगा क्या
दिल जब है तेरे साथ सारथी होकर अहित करूंगा क्या
यह एक अकिंचन काफी है मेरी ममता क्यों उस पर हो
जब वचन बद्ध हो गया निभाऊं नहीं कहे क्या जगत् अहो

क्षमा करो पांडव कुमार अपराध हमारा सर पर है
मैं ठगा गया दुर्योधन से संताप भयंकर दिल में है
रे क्षात्रधर्म की मर्यादा निज वचन निभाना होता है
जो वचन भूल आचरण करे वह परम धाम कब जाता है?



नहुष

आवभगत मर्यादा की शृंखला टूटती दीख पड़ी
आसनसे उठ सके न राजा महाऋषि पर नजर पड़ी
स्वाभिमान से ग्रसित इन्द्र ने नमन किया-बैठे-बैठे
देव-ऋषि ने समझ लिया यह रहता है ऐंठे-ऐंठे।

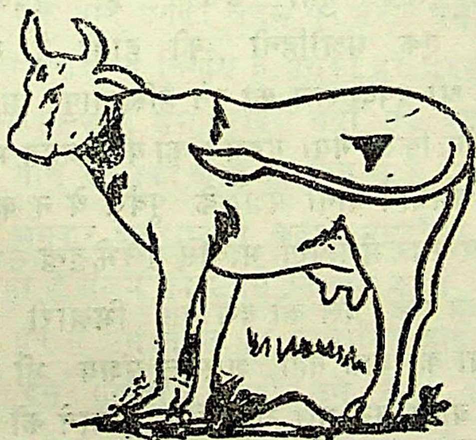
बृहस्पति सम्मान न मिलने से तज इन्द्रदेव का घर
चले गये तब विश्व रूप बन गये पुरोहित संशय घर
विश्व रूप की पत्नी का सौंदर्य देख श्री इन्द्र महान्
हत्या कर श्री विश्व रूपकी रूप साधना का संधान

नृप विहीन धरतीने आवाहन कर नृपति बना दिया
इन्द्र नहीं तो इस नहुषको राजमुकुट सर डाल दिया
प्रकट अनिच्छा करने वालेको भी था लेना दायित्व
देवताओं ने साग्रह सौंपा राज्य कार्य विषयक दायित्व।

परंपरागत रही धरा पर राजा प्रजा हटाती है
जिसे योग्य समझे सहमति से सबकी उसे बिठाती है
राज्य भोगने का अधिकारी एक न कोई आजीवन
जनहितका धर ध्यान समर्पित जो करता अपना जीवन।

सचिदेवी पर घृणित कुदृष्टि नृपति नहुष डालता है
ऋषि अभिशाप स्वर्गसे गिरता धरा न आश्रय पाता है
इन्द्रदेव ने कठिन तपस्या के उपरांत राज्य पाया
अनावृष्टि, अतिवृष्टि, व्याधि पापाचरण कारण आया।

धर्म आचरण करने से पुनि शस्य श्यामला धरा हुई
नियमबद्ध जोवन फिर लौटा वांछित फलको प्राप्ति हुई
यह परम धैर्यकी कथा शल्य पांडव कुमारको सुना रहे
तुम नीति धर्म पर डटे रहो सौभाग्य तुम्हारा अडिग रहे





सौहार्द-संबंध

पांडव भयंकर व्यथा सहकर धैर्य खोते हैं नहीं
सब ओर जाते दूत हैं दिन-रात थकते हैं नहीं
सात अक्षौहिनी पांडव दल को अबतक सैन्य मिला बलवान
ग्यारह था उस ओर निरंतर तत्परता पौरुषका भान।

रथ इक्कीस हजार आठ सौ सत्तर
गज की संख्या उतनी तुरंग तिगुनो तत्पर
फिर पाँच गुना उसका हो पैदल सेना
तब एक अक्षौहिनी की होती है गणना।

सम्वाद लिये श्री द्रुपद राज का दूत हस्तिनापुर आया
सम्मान प्रदर्शन किया गया गुरुजन को यत्न बहुत भाया
क्या एक विचित्रवीर्य दोनों पक्षों के पूर्वज थे न कभी
फिर क्यों न परस्पर मैत्रीपूर्ण भावोंसे सुलझे द्वन्द्व सभी।

पूरा राज्य एक दल को दल एक भिखारी बना रहे
यह शोभा की बात नहीं, शास्वत संशय भी बना रहे
जो कुछ बीता सब भूल बंधुओं से मिलने को धर्मराज
आतुर हैं शुभ लक्षण लगता धीरज धरकर लें सकल काज।

यह मंगलकारी प्रहर आपसी बैर मिटाकर गले मिलो
संसार कष्ट से बच जाय मानव की गरिमा मान चलो
थोड़ा-सा त्याग दिखानें पर लगता यह समर टलेगा ही
धन-धान्यपूर्ण इस बसुंधरा पर वैभव सुमन खिलेगा ही।

संवाद दूत ने सुना दिया, हर्षित हो भीष्म सुनाते हैं
भगवन को कृपा, सुयश उसका सब दिलसे मिलने आते हैं
कितने समर्थ सामंतों को उनको सहायता मिलती है
फिर भी मानवता धर्म हेतु सज्जनता उनकी निखरी है।

पर कर्ण बीच में टपक पड़ा, क्या नई बात बतलाते हो
हे दूत व्यर्थ का यह विवाद, किस हेतु तुम फैलाते हो
जब गये द्यूतमें सभी हार क्या उचित मांगना है उनका
अज्ञातवासमें प्रकट हुए क्या उचित कर्म यह है उनका।

फिर एक बार उनको जंगल की शरण धर्महित जाना है
जो सभासदोंका निर्णय है उसको हर तरह निभाना है
समझाओ उन्हें अभी द्वादश वर्षों तक वनवासी रहना
क्या मांग राज्यकी करते हैं, दिन में हैं देख रहे सपना।

तब मौन भंगकर धृतराष्ट्र ने कहा पांडवों से कह दो
मैं भेज रहा हूँ संजय को उनसे निश्चय करने कह दो
हे कर्ण ! दूत ने धर्म नीति पर आधारित बातें की हैं
ठुकराना इसे मूर्खता है भद्दी तूने बातें की है।

क्या नहीं देखते लक्षण रण में तेरी जीत नहीं होगी
मानवता होगी पीड़ित और दुर्भिक्ष अनावृष्टि होगी
संजय शांति का अग्रदूत पांडव की कुटिया में आया
चाचाने शुभाशीष भेजा आह्लाद प्रस्फुटित हो आया।

धर्मराज ने पुलकित हृदय कहा कौरव की जान बची
जो बीत गया हम भूल चलें सबकी सेवा में रहे रुचि
हे धर्मराज ! तू सदाचार अवतार समर क्यों चाहेगा
जन-परिजनका संहार व्यर्थ फिर क्या किसको मिल पाएगा ।

संजय ! कहते हो ठीक सदाचारी होना अति दुर्लभ है
पर हमने क्या अपराध किया जो बीता केशव आगे है
वे उभय दलों के शुभचिंतक उनका निर्णय माने दोनों
वे नहीं करेंगे पक्षपात विश्वास करें यह हम दोनों ।

युग-पुरुष कृष्ण ने कहा भयंकर कठिन समस्या आयी है
मैं स्वयं हस्तिनापुर जाकर देखूँ क्या होना बाकी है
है एक शांति का सुमन दूसरा समर भयानक कांटा है
कुरुराज करें स्वीकार यथा अनुकूल समय का आना है ।

जाओ हे संजय कहो आपने क्या न राज्य लौटाया था
इन बच्चोंको सम्मान सहित क्या नहीं ठिकाने लाया था
श्री भीष्म विदुर को नमस्कार मेरा सादर पहुँचा देना
दुर्योधन से समझा करके फिर इतना भी बतला देना ।

अधिकारी जो स्वयं राज्य का वनवासी हो पलता है
जो अपमान किया तूने कैसे उसको सह लेता है
जो न्यायपूर्ण उनका होता तुम उसे शीघ्र दे दे भाई
मिट जाय क्रूरता जीवन से भाई तो है आखिर भाई ।

अंतिम भी अस्त्र तुझे देता हम पाँच भाई हैं साथ-साथ
बस एक-एक भी गाँव मिले पाँचों को लेंगे टेक साथ
मत करो जिद्द धरती पर फ़ैलेगा अधर्म तो क्या होगा
जब रक्त उबलने लग जाय तो किस क्षण जाने क्या होगा

हम परम शांतिके पोषक हैं जन-गण-मन भला मनाते हैं
आमंत्रण समर हेतु करता तत्क्षण तत्पर हो जाते हैं
शांति युद्ध दोनों विकल्प की एकरूप तैयारी है
संवाद हृदय में धारण कर चल पड़ा दूत सुविचारी है

धृतराष्ट्र उद्विग्नमना खोया-खोया रहता सिंचित
कब ले आये संवाद सुखद मन दीखपड़े आशा सींचित
आहत हो क्रूर अनिद्रा से रे विदुर पास जा बैठा है
उचित मिलेगा परामर्श देखें भविष्य अब कैसा है ?

विदुर अधीर न होने पाये परामर्श शुभ देता है
उचित राज आधा दे देना द्वेष न शोभा देता है
सफल करो वात्सल्य पुत्र सम अपने पांडव ग्रहण करो
जो अनभल हो गया भूल उसको भविष्य निर्माण करो।

सूर्योदय की रक्तिम आभा-क्षितिज आज उल्लास भरा
संजय धर्मराज से मिलकर नृप के सम्मुख हुआ खड़ा
महाबली हे नृपति ! धनंजय ने ऐसा ललकारा है
कृष्ण सहित पांडवका लड़ना महाकाल आ जाता है।

एक-एक कर कौरव दल का अन्त अवश्यंभावी है
सुरगण इन्द्र सहित आ जाऐं विजय न टलनेवाली है
भीष्मराज ने कहा कृष्ण के साथ धनंजय आयेगा
धरती पर वह कौन सामने जो उसके टिक पायेगा

कर्ण व्यर्थ जो अहंकार में बात अनर्गल करता है
सोलहवाँ भी अंश पांडवों की ताकत क्या रखता है
पुत्र तुम्हारे महानाश को स्वयं पहुँचने को उद्धत
धैर्य करो धारण राजन ! संधिसे करो समस्या हल।

तुम करो याद जब-जब अवसर तूफानी धरती पर आया
क्या कभी कर्ण या दुर्योधन पांडवके सम्मुख टिक पाया
फिर अहंकार की बात वृथा कटुता से कटुता बढ़ती है
लो गले लगा पांडव-जन को धरती धीरज में रहती है

जब ज्वाला मुखी सुलगती है वैभव स्वाहा हो जाता है
लपटों में मृदु लावण्य मनुजता का भविष्य सो जाता है
सुन महा प्रलय की आशंका कुरुराज सहम यों जाते हैं
क्या मान सकेंगे पुत्र हृदय में भाव यही आ जाते हैं।

दुर्योधन जो चुपचाप अभी तक सुनता रहा उबलता है
हे पूज्य पिता ! चिंता करते पांडव जो अभी मचलता है
रण-भेरी तक की देर हमारी सेना को ललकारेगा
वह महानाश के बीच नोच अपना सर्वस्व लुटाएगा।

बस पाँच गाँव की बात रही कितना भयभीत युधिष्ठिर है
सब अहंकार मिट गया भयाकुल है न चेतना स्थिर है
पर भूल रहा है दुष्ट उसे दुर्योधन अब समझाएगा
सूचि अग्र भाग की माप न भूमि दुर्योधन से पाएगा ।

इस उटपटांग के बीच सभा हो गयी स्थगित लोग चले
सुन रहे नृपति क्या धर्मराजने कहा दूत जब लौट चले
हे रिपु सूदन ! संजय राजाका अति प्यारा हितकारी है
रे धृतराष्ट कुछ दिए बिना संधि का वृथा पुजारी है ।

मैंने कह दिया ग्राम हमको मिल जाए पाँच बस काफी है
है दुष्ट किन्तु दुर्योधन ऐसा अधम भयंकर पापी है
स्वीकार नहीं कर सकता है वह पाँच गाँव भी दे देना
बस एक मार्ग अब बाकी है तेरे बल समर कूद पड़ना ।

कहा कृष्ण ने धर्मराज मैं स्वयं हस्तिनापुर जाकर
निखिल विश्व हित शांति याचना करता हूँ वैभव पाकर
रे भूल गया है अहंकारी मद उसका होगा चूर चूर
धरती में ज्वाला सिमट नहीं पाती नियति है विमुख क्रुर

केशव ! दुर्योधन धर्मनीति की बात नहीं जब करता है
तब धर्मराज ने कहा तुम्हारा जाना ठीक न लगता है
तेरी रक्षा पर हे भगवन यों आंच कभी आ जाए तो
रे हम अनाथ जन का क्या होगा उसे असंगल भाए तो

कहा कृष्ण ने धर्मराज तू मेरी चिंता करते हो
राजदूत के साथ शरारत सूझी जैसा कहते हो
भस्म, चूर्ण स्वाहा होते क्या कोई उसको रोकेगा
दुर्योधन मतिहीन धरा पर दो क्षण क्या टिक पाएगा।

अतः न मेरी चिंता करना कठिन समय है धीरज धर
अंतिम शक्ति लगा शांति की परम चेष्टा अविरल कर
असफल फिर भी हुए विश्व में प्राणी दोष नहीं देगा
महानाश के लिए न उत्तरदायी हमको कह देगा।

तुम्हें जानता कौन नहीं हे धर्मराज नीति के पोषक
न्याय विमुख कैसे हो सकते, दयाशील के संयोजक
दुष्ट राज दुर्योधन की पर कुटिल कामना फैल रही है
यथा साध्य साहस करता हूँ मैत्री भावना चाह रही है।



शांति-प्रयास

चला सात्यकि साथ, शांतिका दूत कृष्ण जब चलता है
अन्य जनों को छोड़ भीम तक आगे बढ़कर कहता है
मधुसूदन ! कुरुवंश नष्ट होने पर और बचेगा क्या ?
परम चेष्टा करो शांति हित अविरल रक्त बहेगा क्या ?

सबकी बातें जान कृष्ण ने देखा द्रुपद कुमारी को
लिये हाथ में वेणु-गुच्छ अपमानित आर्य कुमारी को
मधुसूदन ! यदि भीम पार्थ भी रणकी अभिलाषासे दूर
पिता द्रुपद पौरुष बलशाली कुरु का दर्प करेगा चूर ।

बरसों से जिस अधम जिंदगी को मैं ढोती आयी हूँ
धर्मराज का पांडव-कुल सम्मान बचाती आयी हूँ
क्या मेरे उस सभामंच के अपमानों का मोल नहीं है?
रक्त धमनियों का पानी हो गया शस्त्रमें धार नहीं है?

सभी शांति के दूत बनेंगे फिर भी मेरे पाँच कुमार
अभिमन्यु को पकड़ तर्जनी रणचंडी को जीवन दान
भरे हृदय की कुंठित वाणी आँखों से बहती जलधार
नारी-सुलभ आभूषित लज्जा कह सकती क्या इसके पार

नीति विज्ञ भगवान कृष्ण रोमांचित पीड़ित द्रवित हुए
अबला का जब दिल रोता है, क्या होता है देख चुके
धृतराष्ट्र के पुत्र शांति का क्या प्रलाप यह सुन लेंगे ?
तेरा कर अपमान पहुँच कर अंतरिक्ष क्या रह लेंगे ?

माधव का रथ आज हस्तिनापुर में आने वाला है
धृतराष्ट्र ने विदुर मंत्रणा से नगरी सजवाया है
महाराज की यह अभिलाषा रथ गज को दें भेंट चढ़ा
विदुर बोलते वृथा कृष्ण के लिए शान्ति की भेंट चढ़ा।

मधुसुदन के लिए व्यवस्था नृपति ने समयोचित की
धृतराष्ट्र से पुनः विदुर कुन्ती से मिल कर बातें की
दुर्योधन ने कहा महोदय प्रीति भोज का अवसर है
ध्येय पूर्ण बिन राजदूत का भोजन रिपुगृह वर्जित है।

विदुर संग विश्राम रात्रि में प्रातः राज्य सभा बैठो
मधुसूदन को देख सपन में अनुशासन रीति आयी
कृष्ण प्रबोधन लगे नृपति ! गुरुजन स्वजनों का अन्त न हो
दो आधा साम्राज्य समर की बातें अब से और न हो।

क्या कौरव समान राजन ! पांडव तेरे ही लाल नहीं
ममता दिखलायी हैं तूने समय समय बेकार नहीं
क्या बिगड़ा है अब भी तेरी छाया में रह लेंगे
उचित अंश जो उनका है उसको लेकर हर्षित होंगे।

धृतराष्ट्र ने कहा कृष्ण मैं तुझको सहमता होता हूँ
दुर्योधन को समझा कर, कर पुण्यकार्य सुख सोता हूँ
सुनो सुयोधन ! उज्ज्वल वंश तुम्हारा वैभवशाली है
करो धर्म आचरण कर्म तेरा अनीति संचालित है।

तेरे कारण कहा कृष्ण ने वंश भयंकर खतरे में
करो शांति की बात न बनती बात घात की बनने में
तुम विवेक की नीति धर्म की बातें करने लग जाओ
रहे नृपति श्री धृतराष्ट्र मानेंगे पांडव यह मानो।

तुम्हीं बाद में राज भोगना उनकी चाह नहीं यह है
मैं जो कहता सुनो धैर्य से समय कठिन संकटमय है
बढ़ते जाओ अन्धकार मे मिले न त्राण बवंडर में
भाई को तुम भाई समझो आनंदित सब हों घर में

भीष्म-द्रोण ने भी दुर्योधन का समझाया ध्यान धरो
मधुसूदन की मान मंत्रणा दिल से दूर विकार करो
विदुर बोलते धृतराष्ट्र-गांधारी का बोलो क्या होगा ?
दुर्योधन ! तेरे चलते पीड़ित दम्पति-युगम होगा।

धृतराष्ट्र ने पुनः कहा रक्षा तेरी है तेरे हाथ
व्यर्थ समर की बात बोलता लोग जलेंगे तेरे साथ
भीष्म-द्रोण भावुक होकर उत्तम विवेक बतलाते हैं
अन्धकारमय आनेवाले समय साफ दिखलाते हैं।

सबकी बातें सुनता हुआ सुयोधन जलती आँखों से
बोल उठा हे कृष्ण ! पांडवों के साथी सब भांति से
गये राज्य जो हार दिलाने उसको चले धरम ऐसा ?
है धिक्कार स्वांग रचते, साधु-सज्जन, ऋषियों जैसा।

व्यर्थ बात मैं नहीं बढ़ाता, आधे की क्या करते बात
सूचि-विंदु सम भूमि देने की चर्चा है व्यर्थालाप
मैंने कोई नहीं किया अपराध गर्व से कहता हूँ
नतमस्तक हो जीने की मैं सदा भर्त्सना करता हूँ

हँसे कृष्ण, बोलो दुर्योधन कैसा था षडयन्त्र तुम्हारा
शकुनी सम मामासे मिलकर अनघ अधर्म कुकर्म तुम्हारा
चला दुःशासन संग सुयोधन सभा भवन का बिगड़ा रंग
कहा कृष्ण ने सज्जन वृन्द सुनो कैसा असमय है संग

तामस नहीं रहा जग में शिशुपाल कहाँ से कहाँ गया
वृष्णि यादव आज परस्पर अपनापन अनुराग हो गया
दुर्योधन बाधक है जग में शांति, धर्म, भलाई का
इसकी बलि न रोक सकेगा लाल किसी भी माई का।

व्यथित हृदय से धृतराष्ट्र ने गांधारी को बुलवाया
दुर्योधन को बड़े प्यार से प्रेम महत्ता बतलाया
सब जाता बेकार किंतु जब नाश सामने आता है
हर ली जाती मति अमंगल जब-जब होने आता है।

मधुसूदन को बंदी करने की भी एक योजना थी
दुर्योधन ने कठिन चेष्टा की सब व्यर्थ निरर्थक थी
विहँस पड़े केशव दिखलाया अपना उग्र स्वरूप विराट
भरी सभा में धृतराष्ट्र ने अनुकम्पा से देखी ठाठ।

धन्य हुआ है कृष्ण पुनः मेरी आँखें अंधी हों या
अब न देखना शेष रहा, जगती जो होना सब हो या
विश्व रूप दर्शन करने पर सभा भवन में एक लहर
भारत के इतिहास गगन में ग्रहण लगा रे क्रूर प्रहर ।

सभा भवन से चले कृष्ण कुन्ती ने कहा सुनो माधव
अवसर आया माँ ने जिस हेतु था गर्भ किया धारण
धर्मवीर क्षत्राणी की संतान समर में आती काम
केशव तुम्हीं सहायक मेरे पुत्रों के हो पूरण काम ।

मेरा शुभ आशीष कहो मेरे बेटों से जाकर तुम
समर ठानकर करो श्रेष्ठ उत्तम वीरोचित जो हो तुम
रथ की गति चली घोड़ों में था उमंग भगवान चले
राजनगरको त्याग समर साधन हित अंगम नाम चले ।





आश्वासन

समर टालने की अंतिम हो गयी चेष्टा असफल आज
महादुष्ट दुर्योधन ने अनभत्र कर दिया मंगल काज
कैसे मैं अपने पुत्रों को कहूँ न मांगो अपना राज
अंतः पीड़ा व्यथित कुन्ती बोली सम्भालती समुचित लाज।

क्षात्रधर्म पालित कुमार रण की विभीषिका से डर कर
कैसे बैठ सकेगा कुल की मर्यादा ऊँची खोकर
युद्ध हुआ तो अपने जन का खून बहेगा अपरंपार
सब को मार राज्य मिलने पर क्या भोगेगा यह संसार

एक नहीं इस ओर तीन ऐसे बलशाली योद्धा हैं
भीष्म द्रोण पुनि कर्ण कौरवों के पौरुष के पोषा हैं
द्रोण मान लूं शायद अपना शिष्य मान कर क्षमा करेगा
भीष्म पितामह दयावान होकर अधर्म रत नहीं रहेगा।

मगर सोचती हूँ यह कर्ण बड़ा ही निष्ठुर नायक है
दुर्योधन हित मेरे पुत्रों पर घातक संघारक है
चलूँ प्रार्थना कर के देखूँ बतला दूँगा सारा मर्म
भाई भाई पर दया करे तो टल सकता है घोर अधर्म।

गंगा तट पर शौर्य वीर्य आभा आभूषित था ध्यानस्थ
सूर्यदेव की पुण्य तपस्या उपासना में तल्लीन व्यस्त
हरित पार्श्व में अवस्थिता कुन्ती कर रही प्रतिक्षा है
गया ध्यान जब टूट अन्त में हृदय शान्ति की इच्छा है।

देखा पीछे कुन्ती मां इस विजन देश में आयी है
चकित देखता रहा देवकुल को ममता क्यों आयी है ?
मैं अधिरथ-राधा का सुत क्या समुचित सेवा कर सकता
हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ जो सम्भव होगा कर सकता।

हे कर्ण ! सजल कुन्ती बोली तुम राधा की संतान नहीं
तेरी मां मैं यहाँ खड़ी तव पिता सूर्य तज अन्य नहीं
भरे हृदय से रही सुनाती बीती कथा सहमती सी
पार्थ तुम्हारा अनुज मिलन हो उभय प्रकाशित आभासी

अर्जुन को ले साथ धरा पर अन्यायी का नाश करो
सुयश तेज ऐश्वर्य प्राप्त कर धरती का कल्याण करो
कृष्ण और बलराम सरीखे तुम दोनों का भाग्य फले
इस धरती पर परम तेज बल पौरुष का भंडार खुले।

ममता का आवेग विरत योगी के दिल में आता है
कलप रही आँखों के आगे स्नेह भरी नीज माता है
हृदय विदीर्ण हुआ मां का आँचल ने आज पुकारा है
जननी जननी ही है सम्मुख परम पुनीत दुलारा है।

पुरुष किन्तु ममता की डोरी सदा न थामे जीता है
निश्चित नीति धर्म प्रेरणा विमुख नहीं वह होता है
कहा कर्ण ने विनय पूर्ण वाणी में मां तेरा कहना
धर्म नीति अनुकुल नहीं सम्भव कैसे ऐसा करना।

एक क्षत्रिय बालक का शैशव होता कितना भरपूर
सरिता की धारा में डाल दिया वह गया अभागा दूर
आज क्षत्रिय होने की तुम मुझको याद दिलाती हो
प्रिय पाँच पुत्रों की रक्षा हित ममता सुलगाती हो।

समर भूमि को त्याग आज से मैं हो जाऊँ अर्जुन साथ
सारी दुनिया बोल उठेगी भय से भागा दल को त्याग
मेरे इस नश्वर शरीर में दुर्योधन का नमक भरा है।
अबतक जो विश्वास कर्ण पर किया प्रकाशित बिंब खड़ा है

समर वारिधि को तरने की नौका मुझे मानता है
कौरव का विश्वास अमिट क्या कभी भूल वह पाता है
मैंने ही दे उन्हें प्रेरणा समर हेतु तैयार किया है
ग्रीवा पर शत्रु की तलवारें आती हैं बतलाया है।

अवसर पर मैं छोड़ कौरवों को शत्रु से गले मिलूँ
माँ! बोलो कृतघ्न न कोई अन्य साथ जिसके जी लूँ
जिस दुर्योधन ने निभाई मैत्री भीगा पुनि प्यार दिया है
माँ मैं उसके बदले कुछकर सकूँ समय वह दीख पड़ा है

पर तुम्हें निराश करूँ कैसे तेरी आँखों में पानी है
धिक्कार मुझे कुछ नहीं करूँ तेरो हित भरी जवानी है
मेरा बल विक्रम, प्रताप, पांडव-प्रतिकूल लगेगा हो
समर भूमि में दुर्योधन हित मेरा खून बहेगा ही।

तुम्हें न मैं धोखा दे सकता, यह स्पष्ट सुनाता हूँ
रणभूमि में पांडव से लड़ना यह तुम्हें बताता हूँ
महासमर उपरांत जगत में हम दोनों में होगा एक
अर्जुन-कर्ण न दोनों होंगे, जीवित रहें जन और अनेक।

वचन तुम्हें यह देता हूँ मैं या तो मारा जाऊँगा
और नहीं तो अपने हाथों अर्जुन को स्वर्ग भिजाऊँगा
अन्य कोई पांडव रण में चाहे जो मेरे साथ करे
वार नहीं मैं सकता उसको चाहे जैसा वार करे।

पाँच पुत्र की माता तुमको लोग मानते आये हैं
हम दोनों में एक रहेगा गणना नहीं भुलायेंगे
माँ ने सोचा चार पुत्र तो महारथी से बचता है
धर्म निभाता वीरोचित साहसपूर्वक कुछ कहता है।

आँचलसे मुँह पोछ कर्णका छाती लगा दुलार किया
मंगल आशीर्वाद दिये कुन्ती ने फिर प्रस्थान किया
है एक नदी का दो कूल भावों की धारा से जुटता
माँ बेटेका शोषण विषाद आनन्द सहज मिलता रुकता।

*

पांडव-नायक

उपलव्य नगर भगवान बताया क्या हुआ अबतक
समर ही एक अब बाकी जिसे थे टालते अब तक
सुयोधन मूर्ख कैसा है बड़ों को कुछ नहीं सुनता
शराबी-सा नशे में व्यर्थ रहता सर सदा धुनता।

समर भूमि विकल प्यासी लहू की धार पीने को
अनय व्यभिचार, पाप, अनर्थ, व्याकुल आप मिटने को
धरम का कवच कर धारण हृदयमें आत्मबल ठाने
समर में कूद पड़ना है वृथा क्योंकर समय टालें।

युधिष्ठिर ने कहा अब शांति की चर्चा नहीं बाकी
अक्षौहिनी सात सेना है सम्भालो तेजमय साथी
द्रुपद, औ धृष्टद्युम्न, विराट सात्यकि शिखंडी जैसे
पड़े हैं भीम, चेकितान योद्धा हिमालय जैसे।

अडिग हर एक रह लेगा मगर चुनना प्रमुख उनमें
बताओ बन्धु हे सहदेव तेरी राय क्या इसमें
सुनो भ्राता, कहा सहदेव ने अब तक रहे रक्षक
हमारे पूज्य नृपति विराट नायक हों, सफल रक्षक।

द्रुपद नायक हमारे हों समर रण-नीति नायक जो
सुमति यह नकुलने दी है उचित उसके हृदय था जो
समर में धृष्टद्युम्न महान सेना प्रमुख हो जाएं।
सुनाया पार्थ ने तब द्रोण आदि मात खा जाएं

शिखंडी मार सकता भीष्म को यह भीम कहता है
बनाना उचित नायक हैं उसे यह जान पड़ता है
युधिष्ठिर देखकर श्रीकृष्ण को अनुनय सहित बोले
बनाएं जो उचित केशव समर में सुयश मिल जाय।

पांडव-कुल अवतंश पूछते रहे सम्मति लोगों की
अंतिम निर्णय के पहले अब बारी यदुकुल भूषण की
ध्यानावस्थित कृष्ण धरा की आशंकित पीड़ा को देख
अविचल रहे न डिगे मार्ग से युवराजों की क्षमता देख।

युधिष्ठिर को बताया कृष्ण ने सब योग्य सेनानी
कहा अर्जुन ने वह अनुकूल समुचित दीखता ज्ञानी
नियुक्ति हो गयी इस भांति सेना के शिरोमणि को
विकल कुरुक्षेत्र में गर्जन समर हित शंख की ध्वनि थी।

भुजाओं में प्रबल सामर्थ्य-संचित धृष्टद्युम्न चला।
धनुषटंकार वीरोचित समर हुँकार सुन चलता
सीहर-सी गयी धरा पर लाल लोहू की बहे धारा
यही स्वीकार नियति को, भयंकर शोर-गुल फैला।

लगे बजने नगाड़े-शंख ध्वनि जयघोष नभ गूँजा
हृदय से पांडवों का सैन्य दल प्रभु की करे पूजा
धरती का आह्लाद रोष में परिवर्तित होनेवाला है
शस्य श्यामला भूमि पर अब रक्त उछलने ही वाला है।

कौरव-नायक

सम्मानपूर्वक आज दुर्योधन पितामह से
निवेदन कर रहा गुरुदेव लें नेतृत्व दृढ़ता से
हमारे बीच आप महान सेनापति हमारे हों
समरमें शत्रुओं की हो पराजय विजयी हम सब हों।

पितामह भीष्म दृढ़ता से सुनाते देख दुर्योधन
कुरु संतान पांडव सन्तति प्रति साम्य मेरा मन
नहीं मैं चाहता था युद्ध निर्णय कर लिया तूने
सम्हालूँगा समर धर्म में साहस है प्रभु सूने।

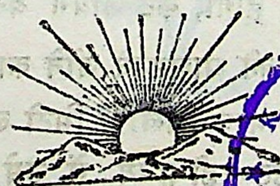
हजारों सूर-वीरों को समर में मैं सुला सकता
मगर मैं पांडवों की कभी भी हत्या न कर सकता
तुम्हीं हो मार सकते पांडवों को मैं न कर सकता
इसी दुष्कर्म का परित्याग बाकी से नहीं डरता।

सुनो कुछ और भी हूँ सोचता तुमको सुना देता
मेरे नेतृत्व का शत्रु सदा हो कर्ण है रहता
संभालें स्वयं वह नेतृत्व स्वेच्छा से समर बोलि
समर्थन पूर्ण है मेरा करो शुभ मंत्रणा उससे।

प्रबल उत्साह साहस वीरता का भाव भर दिल में
सुनाया कर्ण ने मुझको न जाना समर भूमि में
सम्भालें भीष्म सेना को लड़ें जबतक रहें जिन्दा
सिधारें स्वर्ग को तब समर में मेरा चले फ़ंदा।

समर में पार्थ होगा सामने तपती धरा पर सर
उछलता बगल में उसका सहम कर शान्त होगा धर
विजय उल्लास में हम कौरवों का विजय ध्वज लहरे
पराजित पांडवों के अंश में वनवास ही ठहरे।

सुयोधन ने पितामह भीष्म की शर्तों को स्वीकारा
हुए नायक पितामह सैन्य रण में वेग मय धारा
समर भूमि बहादुर वीर जन की अर्चना करती
निपंगु अधमरों की भावना तक को जगा देती।





हलधर-निर्णय

नील रेशमी बस्त्र, सिंह सम भुजा, उभरता वक्षस्थल
हुआ आगमन हलधर का उल्लास हर्षमय मरुस्थल
आया हूँ कुरुक्षेत्र, भरत के वंशज का विनाश होना है
मैत्री का असफल प्रयास, दानवता का नर्त्तन होना है।

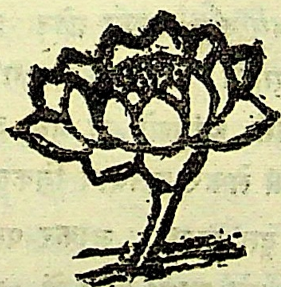
धर्मराज क्या देख रहे रे साफ़ दीखता खून उबलता
ध्वस्त और आहत जन का बेहोशी में भुजदंड तड़पता
कहा कृष्ण को बारंबर हमारे लिए बराबर दोनों
धृतराष्ट्र-पांडव के पुत्रों में अंतर क्या यह तो तोलो।

अभिमानी मुर्खों का यह झगड़ा कलंक मानवता पर
कृष्ण विमोहित अर्जुन हेतु ध्यान न देता समता पर
मैं विरोध क्या करूँ कृष्णका भीम सुयोधन शिष्य हमारे
कोई धराशायी होगा, कट जायेंगे बस अंग हमारे।

घृणित युद्ध की आशंकाने जीने का अरमान छीन लिया
मुझे बनाया मात्र भिखारी मिटी लालसा गरिमा ले ली
एक चाह उठ रही हृदय में उसे निभाने जाता हूँ
भगवत्-भजन भ्रमण तीर्थाटन समय बिताने जाता हूँ।

भावपूर्ण भाषा में जो कुछ कहा कृष्ण के भैया ने
उपवन में सन्नाटा-सा छा गया न कंपन किसलय में
हुआ आगमन अभिवादन सम्मान सहित सब धाये थे
रणभूमि में द्रुपद विराट सहस्र सुभट सब छाये थे।

उन्नत ललाट की आभा मरकत मणि-द्युतिसे बढ़कर
हाथ कमंडल ले घूमेगा, वानप्रस्थ आश्रम हलधर
जोवन का अरमान मनुज को प्रेरित करता जीनेको
मौन सभी जब तापस मग में चला हलाहल पीने को।



तटस्थता

भीष्मक विदर्भका राज्य सफलतापूर्वक रहा चलाता है
पाँच पुत्र धन-धान्यपूर्ण सब प्रजा हृदय लहराता है
देवलोक कन्या सदृश रुक्मिणी कुमारी गुणशीला
शोभाशील प्रबुद्ध वंशकी मृणालिनी का कुसुम खिला।

भीष्मक का अधिकार नहीं रुक्मा की चलती बनती थी
बहन व्यथा में गयी डूब पल-पल पीड़ा में पलती थी
सहन न होगा कभी कृष्ण को छोड़ दूसरा हाथ धरे
हृदय जिसे स्वीकार न करता वृथा मार्ग अवरोध बने।

नारी का निश्चय जब लज्जा छोड़ आवरण देता है
टूटे तारे के सदृश जीवन में गति भर लेता है
कौन रोकता गर्म आंसुओं से जब आह निकलती है
कोमलांगी नंगी लेकर तलवार निकल जब जाती है।

ब्राह्मण दूत द्वारका जाकर पत्र समर्पित करता है
सिहरण भर आता अंगों में, कृष्ण चेतना खोता है
नवोदिते स्मरण करो तुम मेरा काम नहीं आऊँ
पौरुष को धिक्कार झुका कर मस्तक दो क्षण जी पाऊँ।

तुम्हें किया स्वीकार शीघ्र आकर स्वीकार करो स्वामी
छेदी-राज शिशुपाल आ पड़े, भाग्य अस्त समझो स्व ।
कल ही अंतिम समय, पार्वती पूजन को मैं जाऊं।
मंदिर से अपहरण करो सर्वस्व प्राप्त कर जाऊंगी।

आ न सकोगे प्रिय, धरापर मेरा जीना होगा शेष
पुनर्जन्म मिलने की अभिलाषा में तन बदलेगा वेष
पढ़ा कृष्ण ने पत्र हुए आरुढ़ दौड़ता रथ का घोड़ा
हलधर ने संवाद सुना सेना समेत तत्क्षण दौड़ा।

गिरीजा मंदिर राजकुमारी परिचायिका-मंडली बीच
सिसक रही अनुराग-व्यथा-रंजित-धारा से आँचलखींच
देवी! मुरलीधर के चरणों की सेवा का अवसर दे
जन्म सफल हो कष्ट दूर, जगती पर क्लेश न शेष रहे

नवयौवन-अभियान, अंग में भरती गयी जवानी है
मुरलीधर का ध्यानधरे, प्रमुदित आह्लादित रहती है
पूजन के उपरान्त कोमलांगी की आँखों ने देखा
रथपर श्यामवर्ण यदुकुल कौरव ज्योत्सना प्रकट देखा।

ललक मारते राजकुमारी केशव की बाँहों के बीच
रथ का चक्का वेग गति से दौड़ रहा कौतूहल बीच
आँखें सब की रहीं देखती रुक्मा को संवाद मिला
सेनासहित शीघ्र चलआया, हलधर का अवरोध मिला

रुक्मा से बलराम युद्ध का एक प्रमुख अध्याय चला
हुआ पराजित रुक्मा किन्तु नगर न वापिस लौट सका
कुंडलपुर में नगर बसाकर अपना जीवन शेष बिताकर
रुक्मा ने यह बतादिया, हो सकता कथा सबकुछ खोकर



सोल्लास द्वारका धाम पहुँच बलराम सहित केशव आये
रुक्मिणी भाल रक्तिम ललाम सिन्दुर-सुहाग गौरव छाये
जो परमयोग का मंत्र जगत को बतलाता है श्रेयष्कर
गार्हस्थ्य बसाता है मोहक, संगिनी कोमलांगी पाकर।

कुछ समय बीतने पर रुक्मा अर्जुन से आकर कहता है
मैं आ जाऊँ लड़ने को जो, कौरव कैसे टिक सकता है
तुम कहोसाफ सबको करदूँ, उल्लास विजय फिर मिलनाहै
मेरे हाथों दुर्योधन के बन्धु-बान्धव को मरना है।

कह दिया धनंजय ने श्रीमन ! तेरी क्या मुझे जरुरत है
मैं स्वयं युद्ध लड़ सकता हूँ, तुम सम की कौन जरुरत है
अपमान समझ अपना रुक्मा दौड़ा मिलता दुर्योधन से
पांडव को कर दूँ साफ, युद्ध करने कह दो अपने दल से

दुर्योधन ने जब सुना, पांडव ने इसको ठुकराया है
कह दिया जरुरत नहीं, यहाँ अपने बलरण में लड़ना है
रुक्मा का अहं तड़पता है, कुंठित मन से है कांप रहा
दोनों ने है अपमान किया, इस चिन्ता से परितप्त रहा

करलिया स्वयं निर्णय लेकिन अबतो तटस्थ ही रहना है
जिसने अपमान किया मेरा, उससे हटकर ही रहना है
दोनों लड़ कर मिट जाएं दंभ हो जायगा यों चूर-चूर
अकुलाता-सा यह सोच क्षेत्र से गया शीघ्र ही भाग दूर

युद्ध-हित तत्पर सुयोधन के सखा सब सोचते हैं
भीष्म ने भूरी प्रशंसा आज की सब मानते हैं
आ पड़ी पर बीच में चर्चा अहंकारी युवक की
है उदण्ड महान होकर कर्ण, सम्मति एक सब की।

भीष्म कहते कर्ण को अपमान करना शोभता है
श्रेष्ठता की बात से व्यक्तित्व उसका रूठता है
ब्रह्म अस्त्र विरक्त संकट टालना कितना कठिन है
है पड़ा अभिशाप परशुराम का दुर्दिन जटिल है

समय पर की चूक से वह पार्थ से होगा पराजित
समय रहते चेतने की बात वह करता कदाचित
सुन रहा सब स्वयं दुर्योधन हृदय में मौन साधे
सोचता है इस समय पर व्यर्थ की क्यों बात काटे।

द्रोण बोले व्यर्थ का अभिमान रखता चल रहा है
समय पर वह चूक जायगा न इतना सोचता है
धैर्य धारण धीर कर नहीं पाए यह अभिमान समझो
व्यर्थ का अभिमान देता डुबाता है नाश समझो।

कर्ण कब तक धैर्य रखकर भीष्म की यह बात सुनता
उबलता सा, खौलता सा वचन हो निर्भीक कहता
भीष्म! हे श्रीमान मेरी भर्त्सना क्यों कर रहे हो
अब तलक जो कुछ किया, संतोष उससे कर रहो।



सामयिक पलायन

कितना सहा अब तक सुयोधन के हितों का ध्यान धर
पर-सुनाते तुम सुयोधन के लिए मैं हूँ अहितकर
तुमको पराजित समर में होना सुनिश्चित जान ले
मैं भगा दूँगा पांडवों को अन्त में यह मान लें।

हृदय से तुमने किया हित व्यर्थ ऐसा मानते हो
मात्र मेरे और इसके बीच कटुता ढालते हो
काश ! यह नर जान पाता कुटिल तुम कितने हृदय से
नमक है इस पार का पर प्यार अर्जुन हित हृदय से

सुभट नायक समर में सम्मान पाना चाहता हो
वीरता का धीरता का बल दिखाना चाहता हो
क्या अनर्गल व्यर्थ बकना क्षत्रिय को उचित हाय
चाहते तुम शौर्य मेरा छोड़ साहस टूट जाए।

उम्र कब पहचान धरती पर रही है वीरता की
तरुण दल ने क्या न होली है मचाई रक्त धन की
व्यर्थ ही तुम सोचते हो सूरमा नायक महान
काम ! हो पाता तुम्हें निज हीनता का स्वयं ज्ञान

आक्रोश भयानक आंखो में देदीप्यमान मुख-मंडल पर
है आज दौड़ता घृणा भाव है कितना पीड़ित सूर्यपुत्र
सुन लो दुर्योधन ! महावीर ! तुम अपने हित का कर [illegible]
किंचित इस भीष्म पितामह पर कर नहीं भरोसा भीषण रण

सुन दुर्योधन है भीष्म ध्येय बस आपस में ही भेद बढ़े
मेरा करता अपमान तुम्हारे हित की कैसे बात करे
साहस पर दे ठोकर मुझको वह रण से पीछे करता है
सेनापति क्या ऐसा होगा जो दल के टुकड़े करता है।

सिर्फ उम्र से भला राष्ट्र का कर्णधार कैसे होगा ?
अनुभव के बल साधारण नर नर-नायक कैसे होगा
तेज न तन में, ओज न मन में रण क्या कोई मेला है
जो चाहे कुछ ले खरीद जब तक थैली में धेला है।

तुमने इसको बना दिया दल का नायक अब क्या होगा
वीर सारथी के साहस पौरुष का यश यह ले लेगा
स्वयं न कुछ कर पाएगा यह समर सम्भाले योग्य नहीं
फहरायगा विजय पताका रे ऐसा सयोग नहीं।

[illegible]र मैं तो अपनी कहता हूँ जब तक यह नायक होगा
मेरे हाथों में न शस्त्र धनु-बाण सरीखे कुछ होगा
होने दे धराशायी इसको तब इन हाथों में धनुष बाण
पांडव क्या टिकने पाएगा सब ओर लहकता वह्निज्वाल

भीष्म देखते रहे धैर्य के साथ कहा हे कर्ण सुनो
सकट की यह घड़ी व्यर्थ इतना बक कर भी तुम जी लो
प्रतिमा दुषित कौरवों की रे तेरा कौन सुधार करे
किसकी तुम रक्षा कर सकते दुःख में यदि पुकार करे।

दुर्योधन आतंकित मन से भीष्म पितामह से कहता है
क्या न जानते दुर्योधन दोनों की ही आशा रखता है
आपस का संघर्ष आज क्या शोभा को हो सकती बात
पौ फूटते ही महासमर छोटी अवधि की शेष रात।

स्नेहपूर्ण आग्रह का कोई नहीं निकलता है निष्कर्ष
भीष्म रहेगा नायक तब रण के बाहर कर्ण सहर्ष
परम लिये विश्वास हृदय में कर्ण मनोबल बना रहा
शंखनाद सुनकर जन-नायक पार्श्व क्षेत्र में डटा रहा।

दश दिन बीत गया था तब तक कर्ण युद्ध के बाहर था
भीष्म बाण शय्या पर सोये नत-मस्तक हो बोला था
क्षमा करो गुरुदेव भीष्म ने दिया हृदय से था आशीष
तभी हाथ में धनुष बाण ले चला कर्ण था धुनता शीश।



संघर्ष

गीता-सम्वाद

जिस युद्ध की हम कर रहे चर्चा भयावह युद्ध था
कटु सत्य है यह हृदय सैनिक नायकों का शुद्ध था
थे हाथ में हथियार, दिल पर नियंत्रण था धर्म का
रक्षा करेंगे धर्म की, झंडा रहेगा धर्म का।

रवि अस्त होते शस्त्रओं पर वार करना बन्द था
सन्ध्या भजन, पूजन कथा सामान्य जीवन ढंग था
बस एक से ही लड़ सकने की बातें सोचता
जब शस्त्र जाय टूट शत्रु का न उस पर टूटता।

स्वयंदन सदा स्वयंदन प्रति, रथीरथ सदा खंडित करे
जो हो समर्पित क्षमा उस पर शीघ्र ही योद्धा करे
थी युद्ध की नियमावली जिसमे बंधे योद्धा सभी
सब त्यागकर नियमों का पालन ध्येय रखते थे सभी

उभय पक्ष आचार-संहिता का कर चुके प्रकाशन
सुभट वीर सम्मान सहित मानेंगे नैतिक भाषण
वह युद्ध क्या जब सारथी घबरा उठे चित्कार कर
क्या समर में देवत्व है, जब क्रूरता ही प्रखरतर !

रौद्र रूप श्री भीष्म कौरवों के दलके चालक प्रवीण
सामन्त कुमारोंको सम्बोधित करने लगे हृदय अतिदीन
क्षात्र धर्मकी मधुर प्रेरणा स्वर्गद्वार रण के उपरान्त
खुला रहेगा पूज्य पितर के प्रदर्शन होंगे दुःख का अंत

सुयश प्राप्त कर आर्यवंश की मर्यादा की रक्षा कर
शंखनाद उन्मुक्त हुआ जयघोष धर्म की रक्षा कर
रण में आती काम जवानी, करवट बदल न शय्यापर
क्षात्र युवकका कभी अन्त होता न प्रियाकी बाहोंपर

ताम्र वृक्ष के साथ चमकते पाँच सितारों का शुचि ध्वज
सेनापति ने लहराया पुनि द्रोण अश्वत्थामा का ध्वज
स्वयं सुयोधन ने जयद्रथ ने कृपाचार्य ने ध्वज लहराया
जय जवान का नारा लगता सैन्य मनोबल था हरषाया

देख कौरवों की तत्परता आयोजन की विभीषिका
धर्मराज आदेश दे रहे पार्थ सुअवसर सजने का
सेनाकी संख्या उधर अधिक रण कौशल इधर अनूठा हो
सबकुछ करना है साहस से निश्चय ना कभी अधूरा हो

दोनों दल का उत्साह देखकर मिटने का अरमान देख
अर्जुनका हृदय द्रवित होता लाखों नर-पुंगव अडिग दे
भगवान कृष्ण! क्या बहादुरी अपनोंका गला काट डाले
क्रंदन विधवाओं का सुनना है क्षात्र धर्म ऐसा कहले ।

सम्पत्ति हेतु साम्राज्य हेतु जन साधारण का खून बहे
सम्मान मिले झूठा इसके ही हित भाई पर वार करे
है अस्त-व्यस्त सब अंग शिथिलता अंगोंमें भर आयी है
हे देव ! दया कर बता मुझे यह कौन आपदा आयी है

हे अमित पार्थ ! तू सोच रहा तेरे मारे मर जाता है
जिसको न मार पाओ तुम क्या शाश्वत जगमें जी पाता है
जो कुछ होता बस मैं करता अपनेको तुम पहचान जरा
यह जीव अजर है अमर, मार सकता न इसे इतना तगड़ा

जो दिखलायी पड़ता शरीर, वह सत्य नहीं, ममता त्यागे
तंद्रित हो रहे, भ्रमित पथ से, महारात्रि नायक जागो
आलोकित जो सर्वत्र विश्वके कण-कणमें अभिव्याप्त सदा
वह स्वयं तुम्हारे सन्मुख मैं गांडीव उठा संघर्ष सजा ।

रे विश्व रूप दे दिव्य चक्षु भगवन् ने उसे दिखाया है
कर्त्तापन का अभिमान त्याग निज धर्म निभाने आया है
अपना स्वधर्म परित्याग करे, वह वृथा चाहकी ओर बढ़े
कर्त्तव्य करो निष्काम भयंकर क्षणमें अडिग महान रहे

अज्ञान हृदय से भाग रहा आलोक नवोदित आया है
उत्साह नया ले अर्जुन फिर साहस से आगे आया है
जीवन का मर्म भूलने पर मानव घबरा ही जाता है
पहचान स्वयं को जब लेता निष्कलुष शुद्ध हो जाता है

भगवत गीता का ज्ञान विश्व के महासमर में सुन लेना
अपने जीवन में कर प्रयोग साहस से सब कुछ कर देना
निष्काम कर्म की यह नीति हर युग की यही पुकार रही
बस अंतिम ध्येय सफल जीवन उत्सर्ग भावना जाग रही

आशीष

समर्पित कर चुके सब योग, बल पौरुष समर हेतु
तने हैं उभय पक्ष महान योद्धा रौद्र रण हेतु
कवच को त्याग, शस्त्रोंको हटा अति चिंत्य मन चलता
युधिष्ठिर शत्रु-दल की ओर संशय स्वजन को होता।

युधिष्ठिर जा रहे जिस ओर अग्नि की लपट सिमटी
हुआ विस्फोट किस क्षण कौन जाने क्रूरता भड़की
धनंजय देखकर अति व्यथित, रथ को छोड़ आते हैं
भला भ्राता समर तैनात शत्रु शिविर जाते हैं।

हृदय में भाव आता पार्थ के क्या शांति हित भ्राता
समर आह्‌वान कर सांध के चंगुल में फसे त्राता
सुनो को अनसुनो करके धरे धीरज बढ़े जाते
समर में आये जन के हृदय को शंकुल बना जाते।

निरंतर देखता वसुदेव है, नायक चला जाता
भला क्या बात दिलकी है न जिससे भिज्ञ वह रहता
सुनो हे पार्थ, गुरुजन नायकों की शुभ कृपा लेने
चला है धर्मराज महान द्रोणादि से मिल लेने।

भयंकर शत्रुओं का दल फड़कती भुजाएँ फ़ैला
कवच ओढ़े सम्भाले शस्त्र साहस शौर्य रण-लीला
पहुँचता देख कुन्ती के तनय को कह उठे तत्क्षण
लिया क्यों जन्म क्षत्रिय कुल समरसे भागता जब मन।

गया घबरा समर सेतु हमारे सैन्य-दल आगे
अभी आता है दुर्योधन से मिलने शिविर से आगे
क्षमा कर दो, दया कर दो, तरस आती है ऐसों पर
न जिससे शौर्य-वीर्य प्रवाह-शोणित क्लीव ऐसों पर

पहुँच सीधे पितामह चरण का हर्षित नमन करते
हमें आशीष दो युग-पुरुष अतिशय नमन हम करते
तुम्हें बल से पराजित कर सके, परिकल्पना किसकी ?
पछाड़े युद्ध में तुमको धरा संतान किस माँ की

परम सौभाग्यशाली युद्ध की अनुमति हमें दे दो
नमन सौ बार करता हूँ अभय, उत्साह तुम भर दो
भला किस योग्य हूँ जो समर में ताने चलूँ सीना
करे जो बैर तुमसे, है असम्भव अधम का जीना

द्रवित हो भीष्म बोले वत्स, तुम सच्चे भरत वंशी
निभ यो युद्ध की नियमावली, आचार शील सभी
हृदय को शान्ति मिलती है, धरम हर क्षण निभाते हो
विजय तुमको मिले हे वत्स हर सज्जन को भाते हो

बंधा हूँ बन्धनों में साथ- कौरव का ही देना है
समर में जूटना, लेकिन पराजित उसे होना है
हृदय हर्षित समर की लालसा भर कर बढ़ा आगे
युधिष्ठिर द्रोण के सम्मुख, मधुर वात्सल्य दिल जागे

विजय जयमाल तेरे सर समर में धैर्य से बढ़ना
मुझे तो समर में है कौरवों की ओर से लड़ना
पुनः श्री शल्य कृपाचार्य से आशीष लेने पर
धुरन्धर धर्म-नीति-निपुण-नायक शिविर सीमापर

नियति को मान्य जो कुछ था, वही आरम्भ होता है
धरा पर काल का अति क्रूर नर्त्तन, आज होता है
समर में भीष्म के संग पार्थ सात्यकि संग कृतवर्मा
वृहत् बाला से अभिमन्यु, युधिष्ठर सैन्य साथ खड़ा

जगत् गुरु द्रोण को श्री धृष्टद्युम्न समर में ललकारे
हजारों देखते ही देखते धनुवाण सम्भाले
समर नीति निभायी जा रही "शंकुल समर" आया
कटे नर-मुंड, रथ टूटे, समर में वीर काम आये

सम्भाला भीष्म ने दशदिन, पुनः श्री द्रोण थे नायक
समर नायक बना था कर्ण अन्तिम शल्य था नायक
धरम लीला अठारह दिवस का, संग्राम धरती पर
मनुज की लालसा पीड़क, प्रतारित नर प्रकंपित स्वर

समर आरम्भ की बेला उभय दल बीच में आकर
युधिष्ठिर घोषणा करते, अभी भी समय श्रेयष्कर
हमारे साथ आना चाहता, वह शीघ्र आ जाए
कुरुकुल युयुत्सु जयनाद करता पांडु-दल धाए

प्रथम दिवस

सबसे आगे चला दुःशासन कौरव सेना साथ लिये
पाण्डव दल की प्रथम पंक्ति में भीम हाथ में गदा लिये
शंखनाद, रण-घोष भयानक विविध नगाड़े ढोल बजे
घोड़े, हाथी, पैदल सेना, रथ पंक्ति आवद्ध सजे

नभमंडल में नागीन-जिह्वा, वह्निज्वाला था बाणों का
पिता पुत्र से, चचा भतीजे से जा जुझा उभय दल का
भूल गये सब सांसारिकता, अपनेपन की जली होलिका
धरती का सौन्दर्य बिखरता, क्रूर भाव पनपा जगतीका

प्रथम दिवस अपराह्ण हुए पाण्डव की सेना डोल उठी
भीष्म प्रलय की वर्षा करते, घबराये कुछ हुए दुःखी
अभिमन्यु सह सका न सीना तान सामने डटता है
जुटे देवगण समर देखने, कौन अन्त में हटता है

अभिमन्यु की पुण्य-पताका स्वर्णिम कर्णिकरा द्रुम छाप
कृत वर्मा आहत शर-पीड़ा शल्य पंच-शर का संताप
नौ बाणोंसे भीष्म प्रताड़ित, अभिमन्यु की यह ललकार
दुरमुख का रथ दिया तोड़, हे धन्य सुभद्रा नौनिहाल

कृपाचार्य को दण्डबिना नर–मुंडों से भर गया गगण
कहना पड़ गया पितामह को हे वीर पार्थ के रौद्रकिरण
पुष्पक विमान से पुष्पवृष्टि भीषम का ध्वज कट जाता है
सम्मिलित कौरवों का प्रकोप उस नव नक्षत्र पर आता है

रे परम तेज सामर्थ्यवान श्री भीष्म पूर्ण संबल संभाल
अविरल बाणों को वर्षाते धरती अम्बरको दिया ; चाल
आए विराट, उत्तर बालक की सहायता करने तत्पर
कैसे रहता बैठा मौके पर धृष्टद्युम्न अति प्रलयंकर

उत्तर से शल्य भिड़ा आकर, है स्वेत क्रोध से अति विह्वल
अब सात रथों के साथ स्वे । पर मँडराते से कौरव दल
दुर्योधन दल को पछाड़ रे भीष्म ध्वजा का भंजन कर
उत्तर के अग्रज ने रख ली कुललाज दुश्मनों से लड़कर

रथ के चक्के महासमर के प्रथम दिवस टूटे कितने
अगनित सैन्य खेत आए, घोड़े हाथी आहत कितने
अतिक्रुध पितामह के बाणों का आहत हुआ स्वेत लड़कर
रे स्वर्ग सिधारा, दुःशासन ने शंख बजाया हर्षित मे

प्रथम दिवस दुर्योधन का उल्लास उमड़ता जाता है
पांडव-दल आक्रान्त हृदय भरपूर व्यथा दे जाता है
भरत वंश की लाज युधिष्ठिर तुम्हें निभाना भय न करो
कहा कृष्ण ने सुनो पाण्डवों द्विगुनित साहस युद्ध करो

देवों का वरदान तुम्हें, इस ओर द्रुपद सात्यकि वीर
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, होना न तुम्हें किंचित अधीर
कितने साहस के साथ शिखंडी भीष्म देव पर टूटेगा
कौरव-दल को होना अनाथ, रे घड़ा पाप का फूटेगा

दुर्योधन का कटु अट्टहास तो उसको ही खाजाएगा
वह घोर पातकी बन्धु सहित इस धरती से उठ जायगा
कठिन-वृती अनवरत साधना-रत सदैव ही सफल हुआ
जो प्रमाद में गया डूब, वह जग में कभी न सफल हुआ

द्वितीय दिवस

प्रथम दिवस की देख पराजय पाण्डव दल नायक सतर्क हैं
धृष्टद्युम्न के परामर्श से सैन्य पंक्ति आबद्ध आज है
दुर्योधन ही सबसे आगे अपने दल में आज चला है
ऊँचे आसन पर हर्षित हो पूर्ण मनोबल से बोला है

निश्चत विजय हमारी साथी मरने की परवाह न कर
पाण्डव दल पर पड़ो टूट, संशय की किंचित बात न कर
भीष्म अग्नि बरसाते जाते क्षेत्र साफ होता जाता है
अर्जुन कहते सखा कृष्ण, दल आतंकित होता जाता है

जब तक भीष्म धराशायी हो धरती पर विश्राम न लें
किस साहस से सैन्य हमारा बढ़े, हृदय को चैन मिले
चलो पार्थ ! तब भीष्म देव से समर अभी ले लेना है
रथ का चक्का चला वेग से, शीघ्र वेध ही देना है

दुर्योधन की निपुण योजना, भीष्म कभी एकान्त न हों
सम्भव उन पर वार नही जब तक सब का प्राणान्त न हों
अर्जुन का चल रहा आक्रमण, भीष्म बचाते जाते हैं
समय बीतता जाता है नहीं भीष्म पकड़ में आते हैं

अर्जुन से लड़ सके, कौरवों की सेना में तीन रहे
भीष्म, दोर्ण या कर्ण सभी बलशाली गौरवशील रहे
पार्थ वेग से चला भीष्म पर, दुर्योधन उत्साह खो रहा
दिल से लड़ते नहीं भीष्म, अन्दर से यह आभास हो रहा

सुनों पितामह भीष्म तुम्हारे और द्रोणके रहते भी
क्या सारी सेना को अर्जुन–कृष्ण साफ कर देगा ही
तेरे ही कारण रण भूमि में न कर्ण का रण कौशल
क्या मैं कभी ठगा जाउँगा, तुमसे अधिक पार्थका बल ?

भीष्म बाण की वर्षा करते-अर्जुन वक्षस्थल विंधता है
देव गगण से दृष्टिपात कर मन ही मन हर्षित होता है
केशव की छाती तक में जब लगा बाण रक्तिम शुचि आभा
द्रुम पलाश में लदे फूल सेना प्रवाह की अविरल धारा

उधर दूसरी ओर द्रोण से धृष्टद्युम्न की बारी है
हुआ हताहत धृष्टद्युम्न, बाणों की वर्षा जारी है
रथ का चक्का रहा टूट, घोड़ों का दम घुट जाता है
सैनिक लाखों की संख्या में समर काम आ जाता है

धृष्टद्युम्न को देख प्रतारित भीम सेन आ लपटा है
बचा द्रोण के दांव पेंच से, जख्म भरा तन लगता है
दुर्योधन ने देख भीम को भेजी है कलिंग की सेना
भीम सेन उत्साहित होकर रहे वेध अगनित रिपु सेना

अभिमन्यु, सात्यकि भीम की सहायता हितदौड़ाआता
रथ आहत हो गया भीष्म का,वीर सात्यकि बाण चलाता
युद्ध क्षेत्र के एक किनारे भीष्म पितामह लौट रहे हैं
अभिमन्यु का साहस लखकर, पांडव वीर दहाड़ रहे हैं

आज कौरवों के दल का संहार भयानक होता है
दुर्योधन आतंकित होता दलपति साहस खोता है
लगे देखने पश्चिम की लोहित आभा, सूरज डूबे
हुआ स्थगित समर आज का, आहों में नायक डूबे

उधर धनंजय की सेना में अंगराई ले रहा जवान
वापिस हर्षित शिविर,हृदयमें सन्ध्या पूजाका है ध्यान
द्वितीय दिवस यह महासमरका वीर पांडवोंका दिन था
जो कौरव दल कल था पागल, वह शोक मग्न कातर अति था



तृतीय दिवस

गरुड़ चक्र आज सज रहा है भीष्म सैन्य दल
प्रथम कतार द्रोण हैं, विपुल अगाध आत्मबल
सतर्क पाण्डवों का दल, प्रचंड रूप ले चला
महासमर का तृतीय दिवस दहकती मेखला

सजा है अर्द्धचन्द्राकार पाण्डवों का सैन्य दल
प्रथम की दो कतार में, अजेय भीम पार्थ बल
समर का शंखनाद आज तीव्र रोषपूर्ण था
लहू की धार तेज थी, सुभट प्रतापपूर्ण था

धरा की कौन पूछता गगण ही लाल लाल था
महान् शक्तिशाली अस्त्र व्योम का प्रवाल था
भीषण विस्फोट क्रूर क्षेत्र, अम्बर देवों का अग्निकुंड
था फेंक रहा धरती पर नाशक घातक आयुध प्रलयझुंड

अभिमन्यु के रथपर सात्यकि छोड़ अपना रथ आया है
सहयोगपूर्ण रण कौशल से, शकुनीको मजा चखाया है
अर्जुन पर टिड्डी दर जैसा, कौरवकी सेना टूटी है
थे नहीं जानते लेकिन उन लोगोंकी किस्मत फूटी है

भीष्म द्रोणने एक साथ ही धर्मपुत्रको ललकारा है
नकुल और सहदेव भाईके साथ जुटे, प्रेरक नारा है
भीमसेन सुत घटोत्कच ने दुर्योधन पर किया आक्रमण
चकित देखकर पिता उग्रतर हृदय पुष्प तांडव नर्त्तन

दुर्योधन को किया भीम ने, आहत रथ पर उलट गया
भगी कौरवों की सेना, भीष्म द्रोण मन डोल गया
साहस देकर उन्हें सम्भाला, दुर्योधन फिर जाग उठा है
पीड़ित हृदय अपार भीष्म पर नेत्र लाल खोले बोला है

पाण्डव से है प्यार, मोह अर्जुन पर दिल से रखना है
तो क्या जीत सकूंगा रण में, व्यर्थ हमारा सपना है
क्यों न साफ कह देते तेरे रहते अर्जुन बढ़ जाता है
व्यर्थ खड़े इस पार मोह बस हाथ नहीं जब उठ पाता है

अब भी बचता समय पितामह और द्रोण यह साफ कहें
लड़ना उन्हें नहीं पाण्डव से, हों प्रसन्न रण त्याग रहें
दुर्योधन की घबराहट को भांप भीष्म मुस्काते हैं
क्या न कहा था मैंने रण की बात व्यर्थ सब लाते हैं

क्या मेरे कहने पर कोई कठिन युद्ध को टाल सका
किसका यौवन सदा साथ भुजबल कोदण्ड सम्भाल सका
इस शरीर से जो हो सकता उतना करना मेरा काम
कह कर भीष्म पितामह लपटे, व्यूह सम्भालें पहला काम

जलती अनल शिखा सदृश्य श्री भीष्म समर में दौड़ रहे
कृष्ण धनंजय कठिन प्रहर में ठिठक मौन हो व्यथित रहे
केशव ने दी तीव्र मंत्रणा भीष्म धनुष भंजन होता है
अर्जुन का उत्साह बढ़ा रे प्रमुदित गुरु का मन होता है

चतुर्थ दिवस

रवि का उदय धरा पर किरणों का साम्राज्य सघन है
भीष्म हिमगिरि तुल्य अडिग सब ओर सैन्य संचालन है
द्रोण सुयोधन मध्य भीष्म लगते देवेन्द्र पधारे हों
शंखनाद गुंजरित व्योम में अग्नि - लता अंगारे हों
अभिमन्यु को एक साथ ही महारथी दल घेर चुका
अर्जुन कैसे सके चूक बेटा रक्षा हित आन जुटा
धृष्टद्युम्न भारी सेना लेकर शत्रु पर करता वार
भीमसेन का गदा कौरवों के उपर जलता अंगार
दुर्योधन ने देख भयावह दृश्य क्रोध से चकनाचूर
होकर किया प्रहार हाथियों का भारी दल ले भरपूर
भीमसेन रथ छोड़ गदा से करता है प्रहार भारी
भगदड़ सी मच गयी हाथियों की बुद्धि ही गयी मारी
दुर्योधन का क्रोध हिमालय की ऊँची चोटी पर था
टूट पड़ा बेधड़क भीम पर पत्थर उपर पत्थर था
गदा भीम का चलता रहता हाथी मरे हजार हजार
समर क्षेत्र पर्वत के चट्टानों से भरा, करुण चित्कार
भीमसेन की छाती पर दुर्योधन का आ अटका बाण
बैठ गया रथ पर चलता है गदा मचलता रह रह प्राण
सुन विशोक ! स्थल कठोर रथ को सम्भालना धीरज धर
हैं विभिन्न दुर्योधन के भ्राता दृष्टि में इधर उधर

एक एक कर आठ सुयोधन के भाई को साफ किया
धन्य भीम ! तूने पौरुष का अविरल तेज प्रकाश दिया
दुर्योधन ने पूरे बल से भीमसेन की छाती पर
मार भयानक बाण किया आहत, इठलाता धरती पर

जयजयकार मचा, दुर्योधन का साहस बढ़ता जाता था
पिता सहायक घटोत्कच भी रण लीला रचता जाता था
कहा भीष्म ने आज निशाचर का बध सम्भव हो न सके
भगदड़ मची हमारी सेना, कल यह जिन्दा बच न सके

धरती पर लावण्य ढालती रवि किरणों का हुआ विलय
शिविर ओर सैनिक कतार में वेद मंत्र संचालित लय
मृतक बन्धुओं की भींगी स्मृति सुयोधन की आँखों में
पल पल भर आती, आक्रोश उबल पड़ता रह आँखों में

संजय ! नित दिन मुझे सुनाते शोक पराजय की गाथाएं
मेरी इन अंधी आँखों में गरम अश्रु के कण आ जाएं
धृतराष्ट्र ने कहा कष्ट की भी कोई सीमा होती है
मनुष्य के पौरुष प्रताप से बढ़ कर विधि निश्चय होती है

नम्र भाव से संजय कहता, महाराज ! सब तेरी भूल
महा अनय का कलश उठाया, किया भाग्य तू ने प्रतिकूल
जो कुछ तू ने किया न क्या उसका ही प्रतिफल आया है
शुभ संवाद कहाँ से लाउँ, कहीं न सुख की छाया है

सुनो सत्य को साहस करके हो कितना प्रतिकूल सखे
आज बुढ़ापे की लाचारी समय त्याग न भाग सके
नेत्रहीन नृप विकल हृदय से कर विलाप रो देता है
बिदुर बचन विकराल रूप ले प्रकट भान यह होता है



पंचम दिवस

जो जहाज से कूद पड़ा जलनिधि को तैर सके कैसे
महा विपति में डूब गया, सहने की ताकत हो कैसे
संजय ! मेरे इन बेटों को बस भीम सुलाता जायगा
भगदड़ मचती सेना में, नायक कब कला दिखाएगा ?
पीड़ित अति पीड़ित धृतराष्ट्र की व्यथा न नापी जा सकती
क्या नहीं योजना भीष्म द्रोण आदि की रक्षा कर सकती
दुर्योधन इस धराधाम से लड़ते लड़ते उठ जायगा
हाय बुढ़ापे का मेरा दिन किस उमीद में चल पाएगा
नृपति ! धैर्य से करो बात, आँसू क्या आता काम कभी
पांडव का है न्याय पक्ष है विजय चरण छूती उसकी
तेरे सब वीर बांकुड़े बेटे पराक्रमी बलशाली हैं
किन्तु अधर्म में लगे हुए, सब के सब अत्याचारी हैं
तुम अपनी ही तो करो बात तुमको कितना समझाया था
नीति-संचालक विदुर, द्रोण भीषम तक ने बतलाया था
था मेरा तो अनुरोध सदा राजन ! अधर्म पर पैर न दो
दुसचार की ओर चले जाते बच्चों को प्रश्रय न दो
कल था चौथा दिवस युद्ध का सन्ध्या हो जाने के बाद
दुर्योधन ने भीष्मदेव से पूछा था अति कातर गात
परम पितामह ! तेरे रहते हार रही क्यों मेरी सेना
द्रोण, कृपा, भगदत्त कर्ण अश्वत्थामा मतिवलहीना ?

क्या एक एक सब अजर अमर हैं आप नहीं पांडव आगे ?
कुल पांडव दल की मिली शक्ति क्या तुच्छ नहीं तेरे आगे ?
फिर भी कुन्ती के पुत्र पराजित करते मेरी सेना को
क्या मर्म बता हे भीष्मदेव क्या करना कौरव सेना को

सुन दुर्योधन ! साहसपूर्वक बतलाया भीष्म पितामह ने
क्या होता है शुभ अशुभ बताया अगनित बार तुझे मैंने
तू गुरुजनों की बात टालने में न कभी पीछे रहता
सब विज्ञजनों के परामर्श को काट अंधेरे में चलता

मैं फिर कहता हूं, पांडव जन को मित्र बनाना मत भूलो
श्रेष्ठ वंश के राजकुमारो, भारत की जय मत भूलो
कितनी बार कहा तुमको, तुमने ठुकराया जिद्द किया
जिसकी रक्षा करे कृष्ण, उस अर्जुन से रण-मोल लिया

नर नारायण एक ओर तुम उसे हराना चाह रहे
नाहक अपने को विपदा में, महा प्रलय में डाल रहे
तेरे सर पर महानाश का महाचक्र है नाच रहा
सुनते ही भागा दुर्योधन, सारा निशीथ था जाग रहा

शंखनाद के साथ युद्ध आरम्भ हुआ अवनी तल पर
भीष्मदेव ने कठिन बाण से बेध दिया अवनी अंबर
पार्थ धैर्य उत्साह साथ बाणों की वर्षा करता है
महा प्रलय के बीच पितामह स्वयं अरक्षित रहता है

दुर्योधन ने द्रोण गुरु को दुत्कारा है खीझ खीझकर
बन्द करो बकवास द्रोण ने कहा उसे सम्बोधित कर
जो कुछ बनता हम करते हैं, फिर भी आँख दिखाता है
पांडव का बल जान न पाता, वृथा ऐंठ दिखलाता है

द्रोण आक्रमण से घबराया वीर सात्यकि भागा था
महाबली तब भीम समर में बढ़कर आगे आया था
द्रोण, भीष्म फिर शल्य साथ ही भीमराज पर टूट पड़े
वीर शिखंडी धनुष बाण ले रण में आगे हुए खड़े

भीष्म महाबलशाली कैसे हाथ उठाए शिखंडी पर
लगे लौटने, पीछे मुड़ने, डगमगाए पगडंडी पर
दुर्योधन सात्यकि जूझते रहे, भगा फिर दुर्योधन
भूरिश्रवा पराजित पीछे लौट चला भारी अनमन

दक्ष सुपुत्र सात्यकि साथ रण में निजधर्म निभाते हैं
अर्जुन की जयकार पांडवों के शुभ आते जाते हैं
सन्ध्या आयी लोक लाज को लगे निभाने मिलजुल कर
भगा क्रूर व्यवहार धर्मरत ध्यान रक्त की वेदी पर



षष्ट दिवस

व्यूह नित्य रचते, सेना की गति, शत्रु की हालत देख
नाना विधि रचना की जाती आती जासी बाजी देखे
मकराकार आज की रचना पांडव दल की रही योजना
क्रौंच व्यूह कौरव दल साजे, शंखनाद की तीव्र गर्जना
रवि का उदय क्षितिज पर लाली फैलाता पूरब की ओर
रक्तधार अकुलाई धरा पर लपट, आक्रमण चारो ओर
द्रोणाचार्य प्रथम बेला में, आज सारथी खो बैठे हैं
घोड़ों की लगाम थामे, बाणों से आग लगा बैठे हैं
धुनी हुई रुई का पर्वत अग्नि की लहरों के बीच
भस्म हो रहा कितनी जल्दी, धन्य द्रोण धनु विद्याधीर
है खून खौलता उभय पक्ष अनुशासन का बंधन टूटा
बढ़कर हट कर, रे वचन तोड़, रिपु की जैसे तैसे कूटा
भीम खोजते धृतराष्ट्र के पुत्र सामने आ जाएं
एक नहीं, दश बीस साथ में परम धाम को चल जाएं
गजब हुआ संयोग भीम पर जुटा दुःशासन दुरमाता
दुर्विगाह, जय, जयतसेन, था चित्रा सेन आदि भ्राता
दुश्कर्ण, विकर्ण, सुदर्शन चारु चित्र सुवर्मा सब धाए
पड़ गया बीच में महावीर भुजदण्ड क्रोध से फैलाए
देवासुर संग्राम पड़ गया फीका भीम चला रथ से
होने लगे धाराशायी तक्षण कटु गदा आक्रमण से

कहाँ भीम, पूछा विशोक से धृष्टद्युम्न आगे आया
शिलाखंड सा हाथी के धर-मुंड धराशायी पाया
बढ़ता गया उसी मग में चल रहा भयंकर नर-संहार
खींचा कितने बाण भीम के उष्ण रक्त से अविरल धार

देख सहायक महावीर का साहस बढ़ता जाता था
गुप्त अस्त्र का कर प्रहार नायक ने धूम मचाया था
दोनों पर कर घोर आक्रमण, दुर्योधन की हुई ललकार
धर्मराज अभिमन्यु आदि जुटे, भीम के कई रथ पार

पांडव नायक कुशल सारथी घोड़ों संग खो देता है
द्रोण सरीखे पराक्रमी सबको विश्रांति देता है
धृष्टद्युम्न को अभिमन्यु के रथ का मिला सहारा था
कांप गयी पांडव की सेना, धन्य द्रोण जय नारा था

आज सुयोधन और भीम आ गये निकट लड़ते लड़ते
वाक् युद्ध छिड़ गया धनुष-संधान बाण तीखे चलते
दुर्योधन को लगा बाण बेहोश धरा पर लोट गया
कृपाचार्य ने अपने रथ में उठा लिया परितोष मिला

भीष्म तप्त स्थल पर रोक रहा आक्रमण भयानक था
तीव्रवेग उपरान्त पांडवों की गति का वह बाधक था
कटता गया हजारों की संख्या में रणवीरों का सर
नियम टूटने की करता परवाह कौन सब तितर बितर

सूरज डूबने लगा, लालिमा पुनः क्षितिज पर आयी थी
एक प्रहर बीती रात्रि. शमशीर नहीं थक पायी थी
युद्ध हुआ स्थगित युधिष्ठिर अकुलाता है भीम कहां ?
आश्वस्त हुआ जब महावीर आंखों के सम्मुख प्रकट वहाँ ?

सप्तम दिवस

दुर्योधन आहत पीड़ित आता अकुलाता भीष्म पास
नित युद्ध विफल हो जाय, मिट जाय व्यूह सब हो निराश
तुम रहे देख सब कुछ कटते जाते हैं लाखों वीर सखा
बस एकबात तुम बतलाते, मेरी किस्मत में यही लिखा

हे कुरुवंश अवतंश निराशा क्यों तेरे दिल में आती
क्या नहीं द्रोण शकुनि, विकर्ण श्री शल्य खड़े ताने छाती
देखो भगदत्त कैसे लड़ता, फिर मगध राज पुनि कृपाचार्य
रे जान हथेली पर लेकर, रण में कूदे सब सुभट आर्य

तुमको साहस से है लड़ना, साहस खोने की बात नहीं
कहते ऐसा दुर्योधन को श्री महारथी रुक गये नहीं
आदेश सैन्य को शीघ्र दिया, आरम्भ युद्ध को करना है
पुनि शंखनाद अति घोर हुआ, दुर्योधन के हित मरना है

इतने प्रतापशाली योद्धा, आयुध, रथ कौशल साधन से
देवों पर भी तुम विजय प्राप्त कर सकते कहा सुयोधन से
वृताकार संगठित भयंकर कौरव दल का रुप सजा
इन्द्र रुप छाती ताने, सेना के बीच सुयोधन था

पाण्डव सेना बज्र व्यूह में आज सजाई जाती है
भीष्म-पार्थ-संग्राम आग की लपट दहकती जाती है
द्रोण-बिराट, शिखंडी से अश्वत्थामा की बारी थी
दुर्योधन से धृष्टद्युम्न ठन गयी लड़ाई भारी थी

नकुल और सहदेव शल्य पर करते रहे प्रहार अनेक
युद्धामन्यु से अवन्ती-राजा रहे एक से डटते एक
कृतवर्मा, श्री चित्र सेन, दुरमासा और विकर्ण सहित
एक साथ श्री भीमसेन से जुटे, हृदय अरमान सहित

घटोत्कच भगदन्त से लड़ता, सात्यकि लड़े अलम्बसु से
भूरिश्रवा-धृष्टकेतु से द्रोण विराट सरीखे से
प्रथम दिवस ही उत्तर और स्वेत आ गये थे रण में काम
दो पुत्रों का शोक भूल, डटकर लड़ता विराट निष्काम

आज सातवां दिवस तीसरे पुत्र संग की बारी थी
द्रोण-पुत्र से भगा शिखंडी तेजपूर्ण तैयारी थी
रथ टूटा अति क्रूर शिखंडी ढाल और तलवार लिए
तीव्र बेग से बढ़ा द्रोण-सुत ने अति कठिन प्रहार किए

टूट गयी शमसीर, शिखंडी फिर भी रहा चलाता है
आहत होकर वीर सात्यकि के रथ पर चढ़ जाता है
साहस छोड़ अलम्बसु भागा करता है सात्यकि प्रहार
मरा अश्व दुर्योधन का पर नहीं मानता अपनी हार

दुर्योधन शकुनि के रथ पर, घावों से विक्षिप्त शरीर
वर्मा का हो रहा आक्रमण भीम रोकता अनुपम वीर
शकुनि के रथ भगा भीम उल्लसित भयंकर रुप बना
अवन्ती के अनुविन्द, विन्द पुनि युद्ध मन्यु उद्विग्न मना

घटोत्कच पर भगदत्त के सारे आक्रमण व्यर्थ होते
शल्य आक्रमण क्रूर भानजे पर साहस से हैं करते
अश्व नकुल के स्वर्ग सिधारे है सहदेव शल्य पर टूटा
रथ है भाग रहा अब पीछे, तभी शल्य का पल्ला छूटा

मद्र-नृपति को देख भागते कौरव दल का ध्वस्त मनोबल
श्रुतायु पर धर्मराज का वज्र आक्रमण होता प्रतिपल
बढ़ा शत्रु का वेग भयानक धर्मराज आक्रान्त हुए
बेसुध होकर बाण चलाते, कौरव सुभट अशान्त हुए

चेतिकान अरु कृपा छोड़ रथ धरती पर ही लड़ते हैं
चेतिकान को भीम, कृपा को शकुनि लेकर चलते हैं
भूरिश्रवा हुआ घायल अंगों में बाण छ्यानवे था
धृष्टकेतु फिर भी करता स्वीकार पराजय, पौरुष था

दुर्योधन के तीन भाइयों ने अभिमन्यु को जा छेड़ा
जीवन दान दिया, चाचा की अभिलाषा पर हाथ न फेरा
भीष्म स्वयं बालक पर धाए पार्थ-सारथी पहुंच गया है
पांचों पांडव जुटे साथ, रणविभा-अस्त तक पहुंच गया है

रक्तिम विभा सन्ध्या-प्रांगन में लोहित तन खेमे की ओर
औषध सेवा, शल्य-चिकित्सा सन्ध्या वेदमंत्र घनघोर
रण की चर्चा, ईर्ष्या का लवलेश नहीं मिलता हैं
धर्मवीर की रण नीति में बैर नहीं मिलना हैं

भीम कौरवों को मारेगा, परम पवित्र प्रतिज्ञा है
अभिमन्यु अवरोध न करता, युवा वर्ग की प्रज्ञा है
समर भयानक हो, लाखों सर नित्य पांडवोके कट जाएं
भीष्म किन्तु पांडव कुमार की स्वयं न हत्या कर पाएं



अष्टम दिवस

आज आठवां दिवस युद्ध का कूर्म-व्यूह कौरव दल का
चिकटक इसके उत्तर में सैन्य खड़ा पांडव दल का
आज युद्ध के प्रथम प्रहर में कौरव-बन्धु आठ उठ गए
दुर्योधन प्रतिशोधन्नग्नि में जलते जलते आग हो गए
अर्जुन-पुत्र इरावन शत्रु के हाथों का हुआ शिकार
हृदय-विदीर्ण नाग कन्या का, पुत्र शोक का भारी भार
दुर्योधन ने राक्षस मित्र अलम्बसु को ललकारा था
इरावन को मार कौरवों का साहस तन आया था
पुत्र-शोक में स्वयं पार्थ अति दीन भाव से कहता है
मधुसूदन तुम बतलाओ क्या शेष देखना बचता है
धर्मराज ने इसी लिए बस पाँच गाँव पर कर संतोष
अवसर दिया सुयोधन को, कर सका न पापी पर सन्तोष
कह न सके जग कायर, भीरु भाग गया रण छोड़ हताश
इसी लिए गांडीव हाथ में, बची और क्या मंगल आश
निरय समर में आर्य सुभट की भरी जवानी कटती है
विधवाओं का क्रन्दन होता, ममता सहमी रहती है
धन का लोभ राज्य की लिप्सा, झूठे गौरव का अभिमान
बना रहा हम सब को पागल, सबको उलटा होता भ
पाप-यज्ञ के सभी पुरोहित कैसा मंत्रोचारण है
नित्याहुति पड़ती जाती, क्या अधम यज्ञ का कारण है

घटोत्कच ले प्रल कारी रुप कौरवों को ललकार
बढ़ता है आगे सुयोधन प्रथम पंक्ति में आँखें फाड़
दुर्योधन ने घटोत्कच पर किया प्रहार अनेको बार
बंग-नरेश मदद में, दुर्योधन की रहता है तैयार
घटोत्कच का शस्त्र अग्नि बरसाता वढ़ता आता है
वंग नरेश काट उसको देता, हाथी मर जाता है
दुर्योधन की बची जान, हाथी प्रहार से स्वर्ग गया
भीमसेन आ गये सहायक, पुत्र अकड़कर और तन गया
सोलह भाई आज सुयोधन के आ गये समर में काम
कांप रहा रह रह दुर्योधन, कितनी क्रूर आज की शाम
कल तक भाई के कंधे से कंधा मिला उछलता था
आज धरा पर गया लोट, बह रहा रुधिर दिन ढलता था



नवम् दिवस

आठ दिवस संघर्ष क्रूर, यह नौवें दिन का ब्रह्म मुहूर्त
दुर्योधन भीषम के आगे, दाव पेंच में लिपटा धूर्त
धैर्य त्याग कर कटु वचन अटपटे बोलता पागल सा
धीरज धारण कर प्रतापशाली सह लेता हिमगिरी सा

दुर्योधन ! इस महा यज्ञ में अपनी आहुति देता
सर्वोत्तम जो हो सकता, तेरे हित निर्भय हो करता
फिरभी तुम बिन ध्यान दिए क्या उचित क्या अनुचित है
तीखे वचन बोल जाते यह धर्म-विरत अति अनुचित है

जितना हो सामर्थ्य तुम्हारा, उसका पूर्ण प्रदर्शन हो
धैर्य पूर्ण बढ़ते जाने का निश्चय सुखद कठिन तर हो
क्या होगा यह भूल क्षत्रिय धर्म सफल हो जायगा
आर्य धर्म शुचि ध्वज अभिनन्दित नभ चुम्बित हो जायगा

इतना तो तुम जान रहे मैं नहीं शिखंडी से लड़ता
पांडव पर हथियार चलाने में विद्रोह हृदय करता
बस इसके आगे जो भी सम्भव हो निश्चय करना है
ध्यान धरो क्या कभी क्षत्रिय घर के अन्दर मरता है

दुर्योधन ने हिम्मत बांधी, प्रिय दुःशासन को समझाया
पूर्ण शक्ति का आज प्रदर्शन, समझो शुभ अवसर है आया
मुझे पूर्ण विश्वास पितामह सच्चे दिल से साथ हमारे
नहीं शिखंडी अवसर पाए हों ऐसे शुभ यत्न हमारे

हुआ युद्ध आरम्भ अलम्वसु अभिमन्यु से भाग रहा
अर्जुन कारण आज द्रोण से, बाणों से नभ लाल होरहा
द्रोण-पुत्र साहसी सात्यकि से बेतरह निपटता है
पांचो पांडव का प्रहार शान्तनु कुमार पर गिरता है

भीष्म भयानक रौद्र रुप लेकर अग्नि बरसाते हैं
पांडव-बन्धु महा अनल से, पीछे हटते जाते हैं
भगदड़ मची पांडवों की सेना में कृष्ण सम्भलते हैं
सुनो पार्थ साहस से लेना काम, वीर कब डरते हैं

आज पितामह पर करना है अतिशय घातक क्रूर प्रहार
बस दावानल हुआ शान्त समझो नौका तट के उस पार
प्रलयंकारी रुप भीष्म का करुणा से दिल भरा हुआ
पार्थ समर कब रुकने वाला, अंतरतम उद्बोध हुआ

सुनो विश्व-नायक प्राणों के प्राण पितामह की हत्या
अपने हाथों करुँ, युग-पुरुष के जीवन धन की हत्या
आते ही विचार मन में, सौ कोस हृदय हट जाता है
श्रेयष्कर इससे वनवास प्रत्यक्ष समझ में आता है

केशव ! फिर भी मुझे पालना है आदेश तुम्हारा आज
चलो बढ़ाओ रथ जीवन का सज जाए ऐसा भी साज
आओ कृष्ण तुम्हारा भी हो जाए साक्षात्कार अभी
अहा भीष्म के वाण चले, है अंधकार घनघोर सभी

रथ का घोड़ा दीख न पड़ता, धुआँ भयानक छाया है
बढ़ता हुआ कृष्ण, संकट के महाजाल फंस जाता है
केशव ने जब लिया भांप अर्जुन गुरु से है सहम रहा
तीव्र वेग से वार न करता, संशय से सस्मित रहता

स्वयं छोड़ रथ दौड़ पड़े केशव, तब भीष्म प्रसन्न हुए
अर्जुन मैं ही कत्ल करुंगा, कहते केशव कूद पड़े
क्यों अर्जुन क्या तुम्हें शोभता यहां अंग ढीला करना
मैं न सहूंगा, यह है अवसर, क्यों चिन्ता पीछे करना

कमल नयन मैं धन्य हुआ, तेरे हाथों यह तन छूटे
मुझे परम मिल जाए धाम, जगती के सब बंधन टूटे
कैसा अनन्त वह लोक जगत तो उसके आगे झूठा है
विनती करते भीष्म मनुज प्रभु से काहे को रुठा है

देख अकचका पार्थ कूदकर रथ से नीचे आता है
धनुर्धारी अर्जुन के आलिंगन में जग का त्राता है
तुम्हें तोड़ना उचित नहीं पावन जग विदित प्रतिज्ञा को
हाथ न तेरे शस्त्र समर में, यह दिखला देना जग को

मेरे हाथों महा समर में प्रतिद्वन्दी का पूर्ण विनाश
चलो सम्भालो घोड़ों को तू करो वीर मेरा विश्वास
मेरे वाणों से आहत हो भीष्म पितामह का अवसान
तुम देखो अपनी आँखों से, जग के सखा प्रिय भगवान

रथ पर लौट गये केशव, कर में शोभित सुन्दर डोरी
फिर से सम्भालने रण-लीला कैसी मनुष्य की मति भोरी
अर्जुन का सामर्थ्य आज के रण का उच्च पताका था
सूर्य अस्त होने की बारी, शिविर सुभट को जाना था

भक्त प्रतिज्ञा कर बैठा था, भगवन अस्त्र न आज धरे
शान्तनु-सुत, सुरसरि का बेटा, जग कह वृथा पुकार करे
वचन न टलने पाया, प्रभु ने अपना प्रण ही तोड़ दिया
चक्र सुदर्शन लेकर दौड़े अहंकार निर्मूल किया







दशम दिवस

महा समर के दशवें दिन साहस से भरा शिखंडी है
ब ी योजना अर्जुन पीछे, आगे वीर शिखंडी है
बाण भीष्म के हृदय बीच लोहू की धार छलकती है
आँखों से अंगार क्रोध से धड़कन नयी उमड़ती है

कौन जानता आँखों की जलती ज्वाला में जले शिखंडी
आया भाव मगर जन्मा यह स्त्री रुप अब वीर शिखंडी
मान हुआ इस पराक्रमी योद्धा को मौत चली आती है
अर्जुन का गांडीव प्रबल, बाणों की शुभ वर्षा होती है

मृदु मुस्कान भरे अधरों पर कहा भीष्म ने सुनो दुःशासन
अर्जुन के ये बाण, बनाते अंगों को निष्प्राण दुःशासन
देख केकड़ों के छोटे बच्चे मां की छाती को छेद
कर देते निष्प्राण अंग में प्रतिपल बाण रहा है वेध

बाण भीष्म का चला, पार्थ ने टुकड़ा उसका तीन किया
महा भीष्म के ढाल बाण से खंडित, भीषण युद्ध किया
बाणों की अविरल वर्षा गांडीव रहा बरसाता है
सारा अंग बाण से बोझिल, भीष्म धरा गिर जाता है

देवों ने नभ से फूलों की वर्षा की, मधु चली बयार
जलद बरस रो पड़े, गंध से भरा समर प्रांगण सोभार
सुरसरि की संतान पिता हित अरमानों की होली खेल
भरी जवानी त्याग तपस्या लीन, वासना पीड़ा झेल

महा भीष्म रण क्षेत्र प्रतारित कौरव दल के निकले प्राण
अब तक पांडव दलकी जिन लपटों से सहमी रहती जान
हुए आज आक्रान्त न धरती पर तन उनका लोट रहा
आलोड़ित बाणों की शय्या पर जन नायक पड़ा रहा

उभय दलों के परम प्रतापी योद्धा दौड़े युद्ध रुका
कौन नृपति जगती पर जिसका मस्तक आकर नहीं झुका
सर को मिलें सहारा सुनते राजकुमार नरम तकिया
लेकर आते सभी, भीष्म ने सब को अस्वीकार किया

पार्थ ! वीर उपयुक्त सहारा सर को देना आयुष्मान
धनुषबाण संधान ती ! मस्तक में आकर लगता वाण
मेरा मन निश्चिन्त हुआ, आनन्द हृदय में छाया है
जबतक सूर्य न उत्तरार्द्ध आए, बाणों की शय्या है

पार्थ ! प्यास लगती है, होता तीव्र भयंकर धनुटंकार
धरती से जल की धारा बह चली तृप्ति अति उत्तम धार
गंगा उतरी पवित्र जल की धार धरा पर फैला धर्म
सबके सब इस महा समाधि के कारण अविचल निष्कर्म

सुनो धैर्य से कहा भीष्म ने दुर्योधन ! कैसा अर्जुन है
भूतल-अंत: शीतल जल ला सकने की क्षमता जिसमें है
कौन जगत अन्यत्र कुशल जो कर सकता ऐसा सत्कर्म
ऐसे अर्जुन से तेरा भ्रातृत्व अति उत्तम शुचिधर्म

अगती छोड़ चला जाता हूं, दुर्योधन संघर्ष न कर
पांडव जन से हृदय मिलाकर परम मैत्री निश्चय लेकर
हो अनर्थ का नाश आज से वसुधा पर भ्रातृत्व फले
कटुता, पीड़ा, कलुष भावना, मोह साथ ही आज जले

श्रुति-सम्मत शुभ धर्म सुयोधन को देता अतिशय पीड़ा
टूट गया सौभाग्य देश का, लगा भाग्य में घुन, कीड़ा
परम शान्त आश्वस्त धरा पर रहते धरती से उपर
पड़े वीर पुरुषार्थ पुंज जय विजय पराजय से उपर

देख दृश्य आँखों में भर भर पानी लौट रहे सामन्त
परम प्रतापी, युद्ध पिपासु, ढीले गात किए मनु सन्त
कुरुक्षेत्र में आज रक्त का अर्पण हुआ गरम इतना
मत पूछो इस महा समर में कौन काम होगा कितना

राजवंश के परम पितामह, राधा की संतान कर्ण हूं
था जिसपर आक्रोश देव का, चरणों में विनीत अर्पित हूं
अभिवादन उपरान्त कर्ण जब खड़ा हुआ सर पर था हाथ
कुन्ती तनय भ्रमित क्यों अब तक पराक्रमी पौरुष है साथ

मेरा क्या विरोध तुमसे था, सूर्यपुत्र तुम परम प्रतापी
दानवीर, त्यागी दिल में बस एक बात ही कभी न भाती
व्यर्थ पांडवों से तेरा मन कोसों भागा रहता है
पांडव-जन तेरे विरोध कटु भाव नहीं मन रखता है

मेरा यह अवसान धन्य, बस एक बात की देरी है
हृदय मिलाकर रहो पांडवों से, महानता तेरी है
परम लालसा वत्स सुनो बन्धु संग बन्धु हो जी लो
सफल जन्म मेरा हो जाये, मैत्री सुधा अभय पी लो

निःसन्देह कुन्ती का बेटा, नमक सुयोधन का खाया है
द्रवित हुआ कह रहा कर्ण, कोमल भ्रातृत्व निभाया है
मेरा होता परम धर्म, दुर्योधन हित आ जाऊँ काम
आज पांडवों से मिलना अनुचित होगा, पुनि दुष्परिणाम

क्रूर वचन का लिया सहारा, परम पितामह क्षमा करो
दुर्योधन के लिए आत्म बलिदान करूँ, आशीष करो
हृदय भाव पहचान भीष्मने कहा, वत्स जो उचित लगे
उसे करो सोत्साह, धर्मरत रहो पाप दिल में न जगे



एकादश दिवस

मिटा सफल नेतृत्व भीष्म का, कौरव दल के उखड़े पांव
सुभट कर्ण अब समर बीच आयेगा मन में उन्नत भाव
दश दिन का विश्राम समर है आज मुझे ललकार रहा
भुजदण्डों को चढ़ा कर्ण, शोणित सरिता में कूद रहा
वीर कर्ण ने कभी कहा था, भीष्म सफल हो जाएं तो
दुर्योधन सम्राट बनेगा, विजयश्री मिल जाए तो
और मुझे बनवासी होकर, शेष बिताना होगा जीवन
परम शान्ति से जंगल में रह लूँगा अनुपम तापस जीवन
और स्वर्ग को भीष्म सिधारें, तब संग्राम सम्भालूँगा
जिसे मानते थे अजेय, उसको रण बीच नचाऊँगा
महारथी नहीं माना तूने, भ्रम होगा तेरा तब दूर
दुर्योधन जय माल पहन कर कहलाएगा विक्रम शूर
शुभ आशीष कर्ण को मिलता, वह हो सकता नेता रण का
दुर्योधन का द्वन्द मिटा, भय भगा जगा पौरुष मन का
स्वयं कर्ण पतवार सम्भालें नौका मेरी होगी पार
इन भावों में भरा सुयोधन, आग्रह विनय अनेक प्रकार
दुर्योधन के साथ कर्ण की, अभिमंत्रणा चला करती है
महा भीष्म के बाद कौन यह मुख्य बात अटकी रहती है
कहता कर्ण हमारे दल में दलपति होने की क्षमता
एक नहीं कितने रखते हैं, प्रश्न असाध्य नहीं रहता

शौर्य वीर्य, पांडित्य, कुशलता रखते कितने वीर हमारे
जो भी नायक बन जायगा, समर विजय है साथ हमारे
बन जायगा एक दूसरा मगर सोचने लग सकता है
सबके गुरुश्री द्रोण सम्भालें,तब यह भाव न जग सकता है
समर साथ जितने मेरे हैं, उनमें सबसे श्रेष्ठ महान
महा द्रोण को मर्यादित करना, शुभ अवसर की पहचान
प्रमुदित मन से दुर्योधन ने परामर्श को स्वीकारा है
दोनों समर योजना करते चले, हृदय में ओज भरा है
नतमस्तक हो दुर्योधन ने गुरु द्रोण से किया विनय
सेना नायक बनें, सम्भालें युद्ध-योजना शीघ्र विजय
राजकुमारों ने हर्षित मन शिविर क्षेत्र जय घोष किया
बजे बिगुल नाना प्रकार के, गुरु ने सूत्र सम्भाल लिया
चक्रव्यूह की सफल योजना, कर्ण आज से लड़ता है
सफल रहे नेतृत्व सैन्य दल, समर बीच कब डरता है ?
पाँच दिनों तक गुरु द्रोण ने समर सम्भाला इन्द्र समान
भीम, सात्यकि, पार्थ, द्रुपद से स्वयं समर में बज्र समान
पांडव दल पर महाकाल बन द्रोण आक्रमण करता था
साहस बढ़ता गया सुयोधन का, प्रमुदित मन रहता था
कर्ण हथेली जान लिए, दुर्योधन से भी आगे था
रक्तधार परितृप्त धरा पर धर्म-युद्ध उद्वेलित था

द्रोण कौरवों के दलनायक दुर्योधन उनसे मिलता है
संग कर्ण है, दुःशासन है, परियोजना निमित्त कहता है
श्रेष्ठ ! पूज्य ! गुरुदेव! युधिष्ठिर को बन्दी कर लेना है
अन्य कार्य समयानुकूल, अविलम्ब इसे कर लेना है

हुई प्रसन्नता द्रोण हृदय में, वत्स ! न उसकी हत्या हो
कैसा है सुविचार तुम्हारा, क्षात्रधर्म की रक्षा हो
है अजातशत्रु, जग में फिर उसका शत्रु कौन रहे
तेरी इच्छा समर जीतने पर सब मैत्रीपूर्ण रहे

राज्य उसे तुम लौटा दोगे, परम शान्ति छा जाएगी
भारत भूमि भ्रातृभाव से अभिसिंचित लहराएगी
शुभ दिन हेतु शुभ विचार कुरुवंश कुमार सुनाते हो
क्षत, विक्षत हृदय में स्नेहिल सरस भाव उपजाते हो

क्षमा करें गुरुदेव मंत्रणा मेरी अजब निराली है
आए युधिष्ठिर हाथ, द्युत में फिर तो मेरी बारी है
पुनः पांडवों को बनवासी होकर समय बिताना है
दावपेंच के साथ शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेना है

मन ही मन अभिशाप द्रोण ने दिया दुष्ट कब भला बने
होगा दुष्परिणाम, हृदय में जबतक कलुषित भाव पले
गुप्तचरों ने शीघ्र सूचना दे दी. पाण्डव हुए सतर्क
द्रोण न बन्दी करने पायें, धर्मराज को पार्थ सतर्क

प्रथम दिवस नेतृत्व द्रोण का फैलाता अग्नि का ज्वाल
समर भूमि में रुधिर दौड़ता, बाणों से नभ पूरा लाल
धृष्टद्युम्न का तोड़ मोरचा, द्रोण निकलते जाते हैं
शकुनि से सहदेव बेतरह यदा कदा भिड़ जाते हैं

भीम विम्बिसाती दोनों की भीषण हुई लड़ाई है
कृपाचार्य से धृष्टकेतु की आज खूब बन पायी है
शल्य भीम से भाग चला है, द्रोण युधिष्ठिर पर धाए हैं
अर्जुन का जब हुआ आगमन, द्रोण तभी तो रुक पाए हैं

चलता है गांडीव अनगिनत, बाणों से नभ धधक उठा
द्रोण वेग से प्रत्युत्तर में शस्त्र युद्ध प्राबल्य जुटा
रक्तिम आभा देख उदिची, शिविर सैन्य दल चलता है
केशव पार्थ मंत्रणा करते, शिविर ओर रथ बढ़ता है

आज एकादश दिवस युद्ध का प्रलयंकारी भीषण रुप
नभ मंडल की व्याप्त लालिमा, शस्त्रों का विकराल स्वरुप
ढलती हुई जवानी का जब तेज रंग में चढ़ जाता है
तरुणाई का ओज सहम कर साहस खोकर सो जाता है





द्वादश दिवस

जीवित न पकड़े गये युधिष्ठिर, द्रोण चेष्टा हुई बेकार
कहते द्रोण सुयोधन सुन लो, हटा पार्थ को किसी प्रकार
निकट न होगा वीर धनंजय, धर्मराज पकड़ा जायेगा
समर भूमि में एक अलौकिक, रण कौशल पुनि छा जायेगा

हर्षित हो त्रिगर्त नृपति देता है आश्वासन ऐसा
आज पार्थ को ललकारूँगा दूर ले चलूँगा ऐसा
नहीं सहायक हो सकता वह, धर्मराज घिर जायेगा
गुरु द्रोण आशीष मुझे दो, कार्य सफल हो जायेगा

अर्जुन का अवसान कौन रोकेगा, नृपति गरज पड़े
उसकी हत्या करके ही, वापस आएंगे, अडिग रहें
ललकारा जब समर बीच, बढ़ रहा सुशर्मा है आगे
अर्जुन अनुमति मांग रहा, क्या कभी समर से हम भागे

अनुज ! द्रोण की क्रूर योजना मुझे कैद कर लेना है
ध्यान धरोगे तुम इसका भी, समर कुशलता से लड़ना है
सत्यजीत ! तुम धर्मराज की रक्षा करना साहस से
भैया की अनुमति मिली, चल पड़ा पार्थ विद्युत गति से

घमासान संघर्ष, पार्थ घिर जाता तीव्र प्रहारों में
परिचालित गांडीव, वायु मंडल रक्तिम अंगारों में
लाल लाल सब ओर क्षत्रियों का बहता लोहू धरती पर
ऋतु वसन्त में द्रुम पलास का पुष्पित फैला हो धरती पर

रौद्र रुप ललकार भयंकर, क्षात्र धर्म की होली है
काँप गया गिरिराज, प्रकंपित नभ, वसुन्धरा डोली है
धर्मराज की ओर, देख कर अवसर, द्रोण बढ़े जाते हैं
धृष्टद्युम्न साहस पूर्वक प्रत्युत्तर में तनते जाते हैं

मार्ग हुआ अवरुद्ध, समर में द्रोण नहीं रुक पाता है
एक एक कर पांडव दल का, नायक आता जाता है
धरा प्रकंपित करने वाली धनुटंकारों का अभियान
द्रोण निभाते निर्भयता पूर्वक, आन्दोलित इन्द्र समान

बारहवां यह दिवस युद्ध का, सत्यजीत रण काम आ गया
वृक, पांचालकुमार, आदि का समर बीच अवसान हो गया
लोट गया, केतमा, वाशुधन, पांडव के स्तम्भ हिल रहे
युधामन्यु, सात्यकि, शिखंडी, एक-एक कर सभी हट रहे

द्रुपद पुत्र पंचालय रण में, द्रोण सरीखे पर बढ़ते हैं
हुआ समर आक्रांत, धरा पर हो अचेत तक्षण गिरते हैं
प्रमुदित मन दुर्योधन कहता कर्ण देख क्या होने वाला
पांडव का हिल गया शिविर, है कौन समर में टिकने वाला

भ्रमित न हो कुरुराज! कर्ण ने कहा समर क्या इतना सस्ता
पांडव दल का नाश न इतनी जल्दी, जैसे उल्का चलता
नहीं करेंगे कभी समर्पण, तुमने उनको जहर दिया
लाक्षागृह में जिन्दे जी जलवाने का भी यत्न किया

जूए में गये हार, हुए बनवासी फिर भी मिटे नहीं
आफत के दिन में भी साहस खोकर पीछे हटे नहीं
चलते रहे बराबर मिलकर, कभी समय तो आयगा
कौन जानता था सोया सौभाग्य जाग फिर जायगा

देख दूर की ओर दृष्टि फैला कर भीम सात्यकि को
युद्धामन्यु को नकुल उत्तमौजा, विराट पुनि शिखंडी को
बढ़ता आता क्षात्रधर्म परिपोषक द्रुपद विराट आदि
सबकी दृष्टि टंगी द्रोण पर, सुभट वीर नायक आदि

कोई अकेला आकर निश्चय नहीं द्रोण से लड़ सकता है
किन्तु मित्र सम्मिलित गीदड़ों से हाथी भी मर सकता है
सेनापति को कभी अकेला क्षेत्र छोड़ना ठीक नहीं
मित्र चलो अतिशीघ्र समय को व्यर्थ बिताना ठीक नहीं

असफल हुए प्रयास द्रोण के बन्दी हुआ न राजकुमार
दुर्योधन हाथी दल ले कर रहा भीम पर क्रूर प्रहार
म्लेच्छराज श्री अंग भीम पर टूट पड़ा हाथी पर बैठ
आहत हुए भीम बाणों से सम्भल न पाया, सका न बैठ

धराशायी हो गया अंग, घोड़े हाथी हैं दौड़ रहे
टकरा कर रौंदा कर, सैनिक मरे रौद्र रव गूंज रहे
भगदत प्रगज्योतिष का राजा शोर मचाता बढ़ता है
हाथी का दल बढ़ा, समर समुचित प्रयोग वह करता है

एरावत सवार जैसे हो इन्द्र प्रकंपित कर देता है
सुपत्रिका आरुढ़ समर भगदत्त आंधी फैला देता है
हुआ आक्रमण वेग पूर्ण जब सुपत्रिका ने दाँत गड़ाए
रथ का चक्का गया टूट, रथ छोड़ भीम आगे धाए
विरथ भीम बाणों की वर्षा हाथी पर करता जाता है
मचा शोर मर गया भीम जब सूढ़-पकड़ में आ जाता है
परम साहसी ने अपने को बचा लिया रण कौशल से
धरती पर है पड़ा भीम चींपे हाथी निज पैरों से
"भीम समर में काम आ गया" धर्मराज सुन अकुलाए
सेना बढ़ती पूर्ण वेग से, भगदत्त भाग न अब पाए
धराशायी उसको कर देना पांडव दल की हुई पुकार
दौड़ा हाथी सैन्य रौंदता, निकल भीम दौड़ा तन झाड़
दौड़ सात्यकि को अपना रथ भगना पड़ा समर घनघोर
भगदत्त के हाथी के चलते, पांडव दल अति व्याकुल, शोर
भीम सेन रथ पर पुनि आए, पार्थ द्रोण की ओर चले
शीघ्र सुशर्मा ने ललकारा, कायर रण क्यों छोड़ चले
शत्रु की ललकार विमुख होना क्या शोभा देता है
उत्तर दिया शृंखला टूटी, संशय मन में होता है
मन में रहा विचार पार्थ के उपर तब तक बाण चला
पीछे से आते बाणों पर बाण चला, पुनि पार्थ चला

लौट रहा दल सहित सुशर्मा अर्जुन आगे बढ़ता है
पार्थ आ गया देख पांडवों का दल डटने लगता है
भगदत्त का हो रहा आक्रमण, अर्जुन बचता जाता है
एक बाण मस्तक मणि मंडित मुकुट मध्य लग जाता है
मुकुट सम्भाला वीर धनञ्जय ने, ललकारा भगदत्त को
अंतिम दृष्टि डाल धरा पर, तुम्हें पहुँचना सुरपुर को
भगदत्त की आंखों के उपर मांसल चमड़ा झुलता था
खींच लगा उन्नत ललाट से बांध युक्ति से रखता था
काफी दिन संसार देख कर लम्बी आयु तक जीकर
भगदत्त निभा रहा उन्नत आदर्श धर्म अवनि तल पर
मंत्र योग से चला वाण, भगदत्त ने अंतिम बाजी ली
बचा पार्थ को अपने उपर केशव ने उसको ले ली
विष्णु का शुभ मंत्र प्रभावित करता बना मनोहर हार
केशव की ग्रीवा में शोभित स्वर्णिम किरण समुज्वल हार
मस्तक पर गांडीव सुचालित बाण लगा हाथी को जब
लगा लोटने साहस खो बैठा, भगदत्त समर में तब
समर वेग बढ़ता जाता था, वाण भयानक छाती पर
लगा वीर भगदत्त, धरा पर गया लोट, धड़ हाथी पर
वृषा, अचल, शकुनि के भ्राता लगे जूझने अर्जुन से
दोनों आए काम समर में, शकुनि तप्त, विकल दुःख से

प्रलय ज्वाल सा पांडव दल, कौरव-नायक पर टूट पड़ा
डूबा जब तक सूर्य नहीं था, खून खौलता गर्म रहा
क्षितिज पार रवि अस्त, द्रोण ने युद्ध स्थगन का आदेश
दिया चल पड़े शिविर ओर, कौरव अकुलाते हृदय क्लेष

उस ओर पांडवों के दल में, उल्लास उमड़ता जाता था
प्रिय जनों का अभिनन्दन, आनन्द भींगता जाता था
महासमर का दिन बारहवाँ इसी तरह से हुआ समाप्त
कांप रही थी धरती, कटुता से, नभ मंडल था परिव्याप्त



त्रयोदश दिवस

पूर्व दिशा नभलोहित फैला, क्षितिज द्वार पर रक्तिम आभ
पीड़ित धरती को धीरज देने आयगा, अब अभिताभ
ब्रह्म जागरण की बेला में दुर्योधन नायक के द्वार
नमन किया, आवेश पूर्ण निकली मुँह से जलती फटकार

कल समीप आ गया युधिष्ठिर, फिर भी बन्दी नहीं हुआ
पूर्ण प्रतिज्ञा करने का संकल्प आप ने छोड़ दिया
ऐसे अपमानों को सहने की क्षमता क्या तुम्हें शोभती
बल विक्रम सम्राट पांडवों की नौका किसके बल चलती ?

राजवंश-अवतंश शोभता तुम्हें अनर्गल बातें करना ?
कहा द्रोण ने, अडिग सर्वदा मुझे समर में निश्चय रहना
अर्जुन जब तक बना सहायक, धर्मराज को बन्दी करना
कठिन कार्य है मैं कहता हूं, फिरभी निर्भय होकर लड़ना

तेरहवां यह दिवस युद्ध का समसप्तक अर्जुन के साथ
जूझ गया संघर्ष भयानक, अस्त्र शस्त्र दोनों के हाथ
नहीं धनञ्जय देख सामने, द्रोण युधिष्ठिर पर बढ़ता है
एक साथ ही भीम सात्यकि, धृष्टद्युम्न उनसे लड़ता है

चला रहे अति शस्त्र भयानक द्रोण प्रताड़ित हो न सके
घटोत्कच श्री द्रुपद उत्तमौजाविराट सब रहे टिके
एक साथ ही सबका लड़ना, नहीं द्रोण को झुका सका
महाकाल बन ब्राह्मण लपका, कोई उसे न डिगा सका

अभिमन्यु अल्पायु, न यौवन अभी भींगने पाया है
सोलह मधुर वसन्त तेज मुखड़े पर रक्तिम आभा है
ललचाई आँखों से जिसको देख उत्तरा जीती है
वत्स हेतु नित माँ की ममता, सतत प्रेमबस पलती है
किसलय का चांचल्य, सजाना इसको कौन न चाहेगा
समर भूमि के महा यज्ञ से पर क्यों पैर हटायेगा
सुनो वत्स ! कह रहा युधिष्ठिर, पिता समर में दूर गया
अन्य जनों को द्रोण न टिकने देता, दल बल टूट गया
उछल पड़ा नवयुवक समर में क्या देखूँ तैयारी है
ज्ञान मिला था मुझे गर्भ में, बस उसकी ही बारी है
चक्रव्यूह को तोड़ सकूँगा, यह विश्वास दिलाता हूं
पर उसके आगे क्या करना, जान नहीं यह पाया हूं
धन्य धन्य कह दिया चचा ने समर तुम्हारे हाथ रहेगा
व्यूह जहाँ टूटा देखोगे, पांडव का दल कूद पड़ेगा
नहीं निकलना तुमने सीखा, यह चिन्ता की बात नहीं
हम तत्पर हर वक्त साथ हैं, शत्रु का कल्याण नहीं
भीमसेन ने कहा पुत्र ! तेरी रक्षा में सभी खड़े
तेरे बिना व्यूह रचना, भेदन न किसी को दीख पड़े
मंगल हो शुभ यज्ञ तुम्हारा धर्मराज का यह आशीष
पितु और केशव का धर के ध्यान नमाया सविनय शीश

चलो सुमित्रे ! गुरु द्रोण का ध्वज लहराता है उस ओर
रथ ले चला सारथी विद्युत गति से, मचा भयंकर शोर
पांडव कुल के शुभ नक्षत्र तुमको चाचा का यह आदेश
कठिन मिला है, भगवन शक्ति दे, फैले यश सारा देश

सुनो सुमित्रे ! रक्त धमनियों में है पिता धनंजय का
मामा केशव के पौरुष का भान बचा क्या अग जग का
आंधी-सा आ गया सामने, भय से कातर कौरव दल
कितनी जल्दी व्यूह टूटता, द्रोण अचम्भित, युवा सफल

लोट गये अनगिनत सैन्य, हाथी घोड़ों की लाश पड़ी
रथ, भाले, बरछे, बाणों, धनु, ढाल, चक्र की ढेर पड़ी
द्रोण अश्वत्थामा, शकुनि, पुनि कृपाचार्य अरु कर्ण समान
एक साथ कूदे तरुणाई की ज्वाला में सभी महान

टिक न सका कोई, टकरा कर घायल हो सब भाग चले
प्रेम युक्त वात्सल्य जलधि सींचित आचार्य निमिष खिले
दुर्योधन सुन रहा, द्रोण कहते सुन कृपा ! अलौकिक वीर
ईर्ष्या पीड़ित सुयोधन कहता, देखे ऐसे लाखों वीर

पक्षपात का भाव गुरु हाथों में लाता कंपन है
कल था पीता दूध, आज वीरों में श्रेष्ठ धुरन्धर है ?
सह न सका अपमान दुःशासन अभिमन्यु पर टूटा है
हुआ शीघ्र आक्रान्त, मृत्यु- मुख से स्वभाग्य से छूटा है

कर्ण बाण अब भी बरसाता, अभिमन्यु का तीव्र प्रहार
धनुष हुआ खंडित, राधेय मानता है तब अपनी हार
ग्रीष्म काल के सूखे बन में लपटी हो अग्नि की ज्वाला
अभिमन्यु से त्रस्त शत्रु दल रहा न एक मनोबल वाला
बढ़ता रहा निरन्तर, अभिमन्यु यद्यपि अकेला है
चाचा, सखा, दूर, भावों से भरा युवक अलबेला है
धन्य सुभद्रे दूध, तुम्हारी मां का सम्मानित है आज
रहे देखते सुभट जुटे, भागे, चल बसे अनेकों आज
पांडव बढ़ना चाह रहे, अभिमन्यु सबसे आगे था
सिंधुराज जयद्रथ ने रोका, युद्ध क्रूरता-प्रेरक था
घिरता गया अकेला बालक, कौरव दल के घेरे में
कर प्रयास सब हारे पांडव, रुके मार्ग अवरोधों में
धर्मराज ने बाण चलाया, सैन्धव का धनु टूट गया
लिया दूसरा धनुष, भीम का बाण भयानक छूट गया
चक्के पर लग गया, सम्भल कर फिर भी उसने वार किया
रथ का घोड़ा मरा भीम का, सात्यकि रथ में बैठ गया
सैंधव का बल विक्रम रण में आज देखने में आया है
सबसे हट कर आज अकेला अभिमन्यु उपर छाया है
नरमुन्डों से भरा समर, लथपथ लोहू है छलक रहा
अभिमन्यु के हाथों अगनित योद्धा रण में लोट रहा

दुर्योधन का पुत्र लक्ष्मण अभिमन्यु पर धाता है
बाण भयंकर बरसाता, आगे निर्भय बढ़ जाता है
परम तेज परिपूर्ण सुकोमल सुन्दर मुखड़ा खिलता था
विधि का क्रूर विधान रक्त के पैनाले में बहता था

धराशायी कर दिया सुयोधन के फौलादी बेटे को
अभिमन्यु का बढ़ा हौसला द्विगनित बल अलबेले को
पापी ! नरक मिले तुमको, तूने यह अत्याचार किया
दुःखी हृदय से क्रोधी दुर्योधन ने कतिपय वार किया

एक साथ ही द्रोण, कृपा, कृतबर्मा, कर्ण अश्वत्थामा
दुर्योधन के साथ वृहत बाला सब ने सांकल थामा
टूट पड़ा सब रौद्र रुप ले, किधर छोकड़ा भागेगा
धरती पर दो रौंद इसे, फिर कौन सामने आएगा

रण-लीला सम्राट द्रोण, युग युग का अनुभव हृदय भरा
सदा भांप लेता शत्रु की कौन चाल परितप्त बरा
सुनो, द्रोण ने कहा कर्ण ! रथ के घोड़ो की ले लो जान
इसे निपंगु बना चलाओ पीछे से असंख्य कटु बाण

सूर्यपुत्र ने वही किया, घोड़े संग गया सारथी भी
धरती पर अवतरित रत्न के हाथ ढाल तलवार रही
क्षात्र धर्म अवतार धरा-पर पैर न लक्षित होता है
विद्युत गति योद्धा कटते, अम्बर भीषण रव होता है

द्रोण-धनु-सर चला, टूट गयी बालक की तलवार
कर्ण बाण आक्रान्त युवक की ढाल, अनेको वार
झुका सुभद्रा तनय, उठाता टूटे रथ का चक्का
लगा रौंदने शत्रु दल को, सुभट सहम हक्का बक्का

आँधी तूफानों में धूल धूसरित मुखरा निखर पड़ा
रथ का चक्का चूर चूर हो गया, शत्रु दल टूट नया
मल्ल युद्ध पर आ उतरा, दुःशासन-तनय गदा लेकर
गदा चोट आहत अभिमन्यु,स्वर्ग सिधारा जय कह कर

कहता संजय धृतराष्ट्र से अभिमन्यु के शव के पास
नाच रही थी तेरी संतानों की टोली भर उल्लास
नभ में विचरित विहंगमों का स्वर रुदन क्रन्दन मय था
"अनुचित है यह बन्द करो" स्पष्ट बोध होता यह था

शंखनाद घनघोर, विजय उल्लास कौरवों के दल में
धृतराष्ट्र का पुत्र युयुत्सु, रमा नहीं जंगलपन में
शर्म नहीं आती करते दुष्कर्म मनाते उत्सव हैं
भूल गये सब नीति शास्त्र, राक्षसी वृति पर उतरे हैं

मद में पागल कौन सुनेगा, आज युयुत्सु का उपदेश
शस्त्र त्याग, रण छोड़ रहा है, कंपित उद्वेलित यह देश
सुनता कौन धर्म की बातें, झूठी मर्यादा में भूल
जन मानस अघ-निधि आप्लावित, होता जिससे दाहक शूल

धर्मराज की करुण वेदना, हृदय व्याप्त दुख पीड़ा जागी
लगे सूखने सपने सुन्दर, उत्कंठा अभिलाषा भागी
अभिमन्यु सो गया धरा पर, अब न जागने पाएगा
द्रोण, अश्वत्थामा, दुर्योधन को न जला अब पाएगा
भाग गया भय से दुःशासन, ऐसा पराक्रमी युवराज
क्या संवाद पार्थ को दूंगा निःसंतान सुभद्रा आज
कौन सन्त्वना देने जायगा, विराट की कन्या को
लगा चीर में दावानल कैसे समझाऊंगा उसको
कितना कठोर कटु सत्य लालसा से विवेक मर जाता है
मैंने ही ले ली जान, विजय अभिलाषा में, रण जाता है
जब नहीं पार्थ था निकट, युवक की रक्षा मेरे सर पर थी
जो हुआ कांपता तन उससे, कैसी विकराल घड़ी वह थी
शिविर शोक संतप्त व्यथित सन्नाटा छाया रहता है
मौन सुभट जन का धरती से तन लपटाया रहता है
व्यास देव आ रहे प्रताड़ित क्रन्दन पूर्ण सिविर शिहरा
धर्मराज का मौन टूटता, चरणों में मस्तक लोटा
धर्मधुरन्धर धर्मराज को बेसुध देख, व्यास जी बोले
संकट हो महान सर पर फिर भी न धर्म का खंभा डोले
सुनो युधिष्ठिर ब्रह्मा को संसार बनाने पर चिन्ता
बहुत हुई घनघोर, बढ़ेंगे, लोग लड़ेंगे यह चिन्ता

मच गया सर्वत्र क्रूर कोलाहल यह मन में आता
यह विचार बन बह्निज्वाल जगती को क्षार बना देता
रुद्र आगमन हुआ, नियम बन गया, मृत्यु का सृजन करो
घटती बढ़ती जन संख्या के बीच संतुलन भाव भरो

अत: मृत्यु का चरण अडिग,अवतरित धरा पर जो होगा
सदा न रहने पाएगा, अंतिम परिणाम निधन होगा
जो जगत त्याग कर चलें,न उनकी चिन्ता शोभा देती है
हो जहां दीखती हरियाली, समझो बस रेती रेती है

स्थितप्रज्ञ महान नीति निधि व्यास वचन कह चले गये
कृष्ण पार्थ समसप्तक को कर के समाप्त है लौट रहे
सुनो सखा, कह रहा धनंजय, मन अकुलाता है मेरा
अनभल धर्मराज पर बीता, मन को संशय ने घेरा

पूर्ण सुरक्षित धर्मराज, तेरे बन्धु भी अन्य सभी
कृष्ण पूर्ण आश्वासन देते, सन्ध्या की शुभ घड़ी अभी
रुके मार्ग में प्राणायाम, प्रार्थना की विधि पूरी की
आगे बढ़े निकट आने पर, पार्थ चेतना अविकल थी

हे जनार्दन शिविर क्षेत्र में कैसा अशुभ अमंगल गीत
सुभट देखते मुझे, झुका लेते दृष्टि भारी भयभीत
अभिमन्यु उल्लास सहित है कहाँ दौड़ता आता आज
मेरे बन्धु पर कोई छा गयी विपत्ति योगीराज

शोक-व्यथा अभिषिक्त शिविर में हुआ आगमन अर्जुन का
मिला शोक संताप भयानक, हिला पराक्रम धरती का
मैंने बतलाया न उसे था चक्रव्यूह से बाहर आना
संभव था लेकिन निर्भय हो, व्यूह भेद आगे बढ़ जाना
प्रिय पुत्र यम का आतिथ्य मिला तुमको, सब वीर पड़े
सब का साहस गया टूट, तू आगे शत्रु पर टूटे
कौन सुभद्रा को समझाए, कोमल लतिका सरिस उत्तरा
क्या सुन धीरज धरे द्रौपदी, धरती पर दुर्भाग्य आ गिरा
प्रिय पार्थ क्षत्रिय धर्म से तुम्हें न विचलित होना है
जन्म कथा पर हर्ष वृथा, बेकार निधन पर रोना है
शस्त्र हाथ में लिया, मृत्यु बन सहधर्मिनी विचरती है
लहराते हाथों से माल्यार्पण जाने कब करती है
साहस करो, न अन्यों के दिल में घबराहट रहने दो
कहा कृष्ण ने क्षात्र धर्म को उच्चासन पर रहने दो
धर्मराज ने कहा, पुत्र को मैंने आगे भेज दिया
वही तोड़ सकता था व्यूह, इसी लालच यह क्लेश लिया
घेर लिया सबने पापी जयद्रथ का क्रूर प्रहार हुआ
पाण्डव-कुल-अवतंश विभा का असमय निर्मम अन्त हुआ
धरती पर मुर्च्छित अचेत हो वीर धनंजय गिर जाता है
गयी चेतना जाग उठी उत्साहित हो कुछ कह जाता है

शपथ पूर्ण कहता हूं, सुन लो सभी सूर्य अवसान न होगा
उसके पहले समर भूमि में जयद्रथ का कल भेदन होगा
द्रोण कृपा भी अगर बीच में आने का साहस कर लेंगे
जगती से उनका भी उठना. आर्य सुभट कल ही देखेंगे

कठिन प्रतिज्ञा लेता है, गांडीव प्रत्यंचा भीषण रव
पाँच जन्य केशव का बजता, हुआ स्फुरण शुभ अभिनव
भीमसेन ने कहा प्रत्यंचा की टंकार, शंख का स्वर
निश्चित धृतराष्ट्र की संतानों को देगा डुबो समर

सनसनी पूर्ण संवाद, शत्रुओं के खेमे में सावधान
कल की सन्ध्या से पहले जयद्रथ की हत्या का आह्वान
सिन्धुराज श्री वृहतक्षेत्र के घर जब जनमा राजकुमार
हुई भविष्यवाणी यह नायक, समर जायगा स्वर्ग सिधार

सिंधुराज आक्रोश - प्रतारित मंत्रोचारण करता है
सर गिरायगा जो धरती पर स्वयं नहीं जी सकता है
ऐसे हत्यारे का सर हो चूर चूर मिट जायगा
है अभिशाप मार मेरे बेटे को जी नहीं पायेगा

बचपन मिटता गया जवानी अंग अंग है दौड़ रही
बेटे की यह देख दशा राजा के मन यह बात जगी
छोड़ दिया धनधान्य नगर युवराज नृपति बन आया है
जीवन का अवशेष तपस्या में नृप स्वयं बिताया है

समतल भूमि में जाकर राजा कर रहा तपस्या है
कालान्तर में कुरुक्षेत्र वह ही स्थल बन आया है
एक किनारे ध्यानावस्थित योगी कठिन तपस्या रत
और दूसरी ओर क्षेत्र संहार, प्रलय मानव तन हत
पार्थ प्रतिज्ञा करता है, कुरुराज ! सुनो संशय होता
रण छोड़ सिन्धु नगरी जाकर आश्वस्त रहूं समुचित लगता
दुर्योधन ने कहा समर में साथ तुम्हारे सब होंगे
कर्ण, शल्य, जय, भोज, सुबाहु, द्रोण अनेक सुभट होंगे
कल अपने दल बल समेत बस एक काम ही मुझको करना
तुम पर संकट आ न सके, तत्परता से सब कुछ करना
भय से कंपित सिंधु राज युवराज द्रोण के निकट गया
मुझे, पार्थ को दोनों को शिक्षा दी, क्या अब तक पाया
जयद्रथ ! सुनो समान भाव से मैं था दोनों को गढ़ता
अभ्यास और अनुशासन से अर्जुन श्रेयष्कर है लगता
फिर भी चिन्ता करो नहीं, हम सब कल तेरी रक्षा में
जुटे रहेंगे, देखें, क्या करता है पार्थ परीक्षा में



भीम--द्रोण

वृताकार आवद्ध द्रोण की कौरव सेना सजी गयी
आगे शत्रु का दल आए, पीछे सेना भरी गयी
उससे पीछे चक्रव्यूह में सजा गया बलवानों का दल
सभी पंक्तियों के पीछे, जयद्रथ का वृहद भयानक दल

अग्रभाग छव कोस भयानक कौरव दल ऐसा सजता है
वृताकार के मुख्य सिंहासन पर आरुढ़ द्रोण कहता है
देख सुयोधन ! सेना का कितना बलवान मनोबल आज
हर्षित नयन, नृपति का पुलकित हृदय, मिल गया त्रिभुवनराज

दुरमर्षन कौरव कुमार रथ सज सहस्त्र अश्व सौ तीन
दश हजार सेना, सौ हाथी, पन्द्रह सौ धनुधारी वीर
अग्र भाग आकर करता है, शंखनाद उत्साह भरा
कहाँ धनंजय, आगे आना, रक्त खोजती तप्त धरा

बहुत प्रशंसा करते हैं सब लोग, समय अब आया है
चलो पार्थ मिट्टी घट सा, चट्टानों से टकराना है
चूर-चूर हो जायगा तू, समर बीच सब देखे आज
कुरु वंश को ललकारा है, फल उसका भोगो तुम आज

प्रत्युत्तर में देवदत्त का स्वर नभ भेदी गूँज रहा
केशव ने रथ बढ़ा दिया, हाथी चिघ्घार प्रचंड रहा
दुरमर्षन की सेना भागी जैसे कुहरा भाग रहा
बन प्रचंड झोंका गांडीव सुभट की ग्रीवा काट रहा

दुःशासन अति पराक्रमी, है महा दुष्ट यह सर्व विदित
अर्जुन के सम्मुख दहाड़ता आया अतिशय क्रोध पीड़ित
भाग चला अर्जुन के आगे आज न उसकी चल पायी
पार्थ रौंदता गया सैन्य दल दृष्टि द्रोण उपर आयी

सविनय कहता पार्थ पुत्र का बदला आज चुकाना है
दो आशीष मुझे गुरुवर ! निज वचन अवश्य निभाना है
द्रोण प्रदीप्त प्रसन्न मुखर वात्सल्य पूर्ण वाणी बोले
मुझे पराजित करके ही कोई चाहे आगे बढ़ ले

तक्षण किया प्रहार गुरु ने, अर्जुन बाण चलाता है
कृष्ण और अर्जुन दोनों रण में आहत हो जाता है
द्रोण धनुष की कटी प्रत्यंचा, अर्जुन साध रहा संधान
कटी प्रत्यंचा अर्जुन धनु की, गुरु द्रोण के लगते बाण

दृश्य भयानक, उभय पक्ष उल्लास उमड़ता रह रह कर
गुरु शिष्य का रण कौशल, आलोड़ित वसुधा के तल पर
विहंसित गुरु बाणों की वर्षा अगनित करता जाता है
हटते हुए पार्थ को, रथ को, अंधकार बहलाता है

यह ब्राह्मण आक्रान्त न होता, छोड़ो अब इससे लड़ना
कहते केशव, पार्थ मार्ग से समुचित है आगे बढ़ना
रुको ! द्रोण ने कहा, पराजित मुझे किए बिन बढ़ते हो
नाथ ! गुरु ! तुम शत्रु नहीं, तुम पिता तुल्य क्या कहते हो?

तुम्हें पराजित करने का सपना, सपना ही सदा रहेगा
दे ! कृपा, आशीष तुम्हारा हो, सेवक निश्चिन्त रहेगा
भोज सैन्य से पार पार्थ, श्रुतयुद्ध, कृतवर्मा मिलते
उसी किनारे सुदक्षिणा भी दल बल साज वरस पड़ते
परनाशा को कठिन तपस्या से वरदान स्वरुप मिला
गदा, पुत्र की सहायता में रण में आखिर नहीं हिला
नियम एक था, नहीं लड़े उस पर नहीं गदा चलाना है
श्रुतयुद्ध ने केशव पर ही चला दिया, अब मरना है
गदा लौट आकर परनाशा के सुपुत्र को लगता है
आहत होकर धराशायी, निष्प्राण शीघ्र हो जाता है
कितने योद्धा मिले बीच में सबसे लड़ता साहस से
बढ़ता अर्जुन गया, मिले जयद्रथ, बढ़ता इस साहस से
[illegible]न्यु को शान्त, अश्रुतायु को स्वर्ग भेज अर्जुन
लड़ता गया रक्त रंजित, धरती पर चलता है अर्जुन
अभिमन्यु की हत्या का प्रतिशोध नहीं जब तक होता
चैन कहाँ, इस मानस में, प्रतिपल आक्रोश प्रबल होता
संजय सुना रहा अविरल गति अर्जुन बढ़ता जाता है
धृतराष्ट्र मूर्च्छित हो जाता, भावों से भर आता है
संजय ! मेरी एक न मानी दुर्योधन ने, भारी भूल
कृष्ण-पार्थ के संधि मार्ग से हटता गया, सदा प्रतिकूल

कहा बराबर मैंने दुर्योधन : भाई है गले लगा
आती हुई विपत्ति से बच रहो, न मन में वैर जगा
कर्ण, दुःशासन की मंत्रणा उसे लगती थी श्रेयष्कर
द्रोण, भीष्म सब समझाते थे, टाल युद्ध अति प्रलयंकर

बढ़ती गयी लालसा दुर्योधन की, दुःखद समय आया
नर नारी आबाल वृद्ध आक्रान्त, प्रलय नंगा आया
घृणा भरे भावों से उसने चाहा, सब पर परम विजय
देख रहा मैं नाच रहा कैसे वसुधा पर बेसुध भय

दुःख सरिता अभिषिक्त निम्मजित, धृतराष्ट्र अकुलाता है
समय बीत जाने पर चिन्ता करना निष्फल जाता है
तीव्र वेग से भाग गया जल, रिक्त हुई सरिता की गोद
बांध बाँधने तब तुम आए, रहे कंटीली मिट्टी खोद

तेरी दृष्टि महान बताओ क्यों न पांडवोंको रोका था?
जुए पर आसीन झूठ वैभव में डूबे, सब धोखा था
जो हो,उसके बाद समय पर रोक न पाए दुर्योधन को
समर बीच जब होड़ लगी है, बोध रहे दुर्योधन को

धर्म युद्ध में मानव तन की शुद्ध होलिका जलती आज
बढ़ते हुए मनोबल पर अवरोध न देना समुचित काज
समय बीत जो गया, भूल कर समर मंत्रणा करनी है
जान हथेली पर ले चलनेवालों की जय कहनी है

ठीक समय पर नहीं निभाया था कर्त्तव्य मानता अब
जो होना होगा, सब होगा, कौन बनाए बिगड़ी अब
कहते चलो प्रिय संजय, कानों को चोट लगे लगने दो
समर बीच भल-अनभल जो हो तू कटु मधु सम्मिलित रहने दो

सुनो नृपति ! देखा अर्जुन बढ़ता जाता निज लक्ष्य ओर
अति त्रस्त प्रताड़ित दुर्योधन कंपित स्वर करता वृथा शोर
द्रोण ! गुरु ! क्या था मेरा अपराध तुम्हारे रहते भी
अर्जुन व्यूह तोड़ बढ़ता, आयुध नाना विधि रहते भी

होता विश्वास अटल तुम भी हो साथ पांडवों का देते
रोका जयद्रथ को वृथा भले निज घर उसको जाने देते
तुम न रोक अर्जुन को सकते, क्या यह सम्भव लगता है ?
तेरा स्थल पार कर गया, लोगों को भय लगता है

छोड़ो सारी वृहद योजना, सैंधव निकट पहुँचना है
रक्षा उसकी कर लेना ही, सफल आज की रचना है
जो ले जान हथेली पर, मेरे हित रण में आता है
उसकी रक्षा में सब कुछ अर्पित, सुचि धर्म सुहाता है

द्रोण व्यथित विह्वल मुद्रा में कहते मुझे न होता क्रोध
जो कुछ तुम कहते उससे जगता न हृदय में है प्रतिशोध
पुत्र तुल्य तुम वत्स, एक मानो यह मेरी बात अभी
अर्जुन दूर, सामने है यह धर्मराज, संयोग सभी

क्षेत्र छोड़कर अभी यहां से मेरा हटना ठीक न होगा
कर लूँ कैद युधिष्ठिर को, यों विचलित होना ठीक न होगा
पहनो मेरा कवच मनोबल ऊँचा ले आगे चल जा
हर प्रकार से रक्षा तेरी करे पार्थ से तू भिड़ जा

दुर्योधन आश्वस्त हुआ, प्रमुदित मन तन पर कवच डाल
ले कुशल वीर योद्धाओं को, चल पड़ा पवन से तीव्र चाल
मन में प्रतिपल आक्रोश उमड़ता, अंगों में बल देता हैं
है दाँत पीसता, भौंहे चमकाता, संशय तज देता है

खोल दिया रथ से घोड़ों को उन्हे मिला विश्राम
विन्दा, अनुविन्दा को अर्जुन ने भेजा सुरधाम
रथ को पुनः खोल केशव ने घोड़ों को विश्राम दिया
पूर्व योजना के अनुकूल जुटे, फिर से प्रस्थान किया

देख धनंजय; दुर्योधन पीछे से आता तेजी से
रण कौशल, धनुवाण-विज्ञ हटता न डांट फटकारों से
कितना कष्ट दिया, इस मानव ने आया है शुभ अवसर
केशव की गति धीम, धरा पर चलता रहता महासमर

हो निर्भीक सुयोधन आया, अर्जुन ! तू है पराक्रमी
अवसर तू ने नहीं दिया, बल विक्रम देखूं भला अभी
नहीं बोल कर शान्त हुआ, करने लग गया प्रहार प्रबल
प्रत्युत्तर में अर्जुन का गांडीव, बाण फैला अविरल

पार्थ ! महा आश्चर्य सुयोधन को न बाण बिंध पाता है
क्या तेरा प्रभात्र फीका, गांडीव विफल हो जाता है
हृदय भेद कर पार उतरता, वैसा बाण सहज छूकर
धरती लेता चूम, कहा केशव ने पूर्ण निरीक्षण कर

मृदु मुस्कान सहित अर्जुन ने कहा, द्रोण का कवच पहन
इठलाता है क्रूर, नहीं फिर भी कर सकता बाण सहन
नहीं पहनना आया इसको, ओढ़ लिया जैसे तैसे
अभी दिखाता हूं कौतूक, देखो भागेगा यह कैसे

तीव्र बाण की वर्षा से, घोड़ा, रथ, धनुष सभी टूटा
दुर्योधन भयभीत हुआ, सारथी-संग तक्षण छूटा
सूचि-सम पतले वाणों का है होता रहा प्रहार अनेक
कवच बीच के अगनित छिद्रों से चुभ गया न चलती एक

चला सुयोधन पांचजन्य के हृदय विदारक स्वर को सुन
कौरव दल होता सतर्क, लग गये सजाने योद्धा चुन
भूरिश्रवा, कर्ण, चल जयद्रथ, कृपा, अश्वत्थामा, वृषसेन
एक साथ ही चले योजनावद्ध, पार्थ कैसे ले चैन

दुर्योधन बढ़ रहा पार्थ की ओर पांडवों ने देखा
बढ़े द्रोण की ओर, घेरने का पूरा प्रयत्न किया
धृष्टद्युम्न का कबूतरी रंग का घोड़ा भरता है टाप
अखरोटी घोड़े के रथ पर द्रोण रहे संयम से भांप

सन्ध्या का हो रहा आगमन, नभ में चित्र रंग भरते हैं
दोनों दलनायक के घोड़े, गगन-घटा जैसे लगते हैं
बढ़े न द्रोण पार्थ के पीछे, इसकी थी पूरी तैयारी
घातक था संघर्ष, जानता कोई नहीं किसकी है बारी
अस्त्र शस्त्र का पूर्ण प्रदर्शन, प्रतिपल बढ़ता है संघर्ष
क्षात्र-धर्म रण-कौशल पाकर पा लेता कैसा उत्कर्ष
पूर्ण वेग से चला बाण, पांडव का नायक क्या बचता
समय साथ दे रहा, सात्यकि के बाणों से बाण कटा
द्रोण चाहते जम कर हो मेरे संग युद्ध, चलूँ आगे
साहस पूर्वक बढ़ा सात्यकि, कितने सैन्य दहल भागे
धृष्टद्युम्न को अवसर पाकर, सुभट जनों ने हटा दिया
विषधर सा गुरु द्रोण, क्रोध विह्वल, भीषण फुफकार दिया
कहा सात्यकि ने अपने रथ चालक को रथ बढ़े उधर
ब्राह्मण हो संघर्ष खोजता, मतवाला, अजगर, विषधर
कितना दंभी, क्रूर सुयोधन इसके बल पर उछल रहा
देखे यह सात्यकि कौन है, गर्वोन्नत हो झूम रहा
स्फटिक रंग के घोड़ों का रथ द्रोण ओर मुड़ जाता है
सूर्य छिप गया बाणों से, नभ अंधकार छा जाता है
लपलपाती नागिन जिह्वा सी, बाणों की बौछार चली
हुए हताहत अगनित योद्धा, उष्ण रक्त की धार चली

जुटे देवता, विद्याधर, गंधर्व, यक्ष, नभ प्रलय देखने
कटीं प्रत्यंचाएं ब्राह्मण की, सात्यकि के कौतुक कितने
जितना चलता बाण द्रोण का, प्रत्युतर सब का तैयार
हृदय मानता वयोवृद्ध का, हुई समर में मेरी हार
वीर सात्यकि अमर भूमि का राम धनंजय, भीष्म समान
निज अनुरुप धनुर्धारी को देख गुरु देदीप्यमान
बाण अग्नेय द्रोण का चलता, वरुण अस्त्र से कट जाता है
धीरे धीरे श्रमित सात्यकि, कौरव दल हर्षित होता है
धर्मराज ने देख लिया, सात्यकि द्रोण के पंजे में
चले सभी अविलम्ब बचा तब वीर द्रोण के फंदे से
पाञ्चजन्य की ध्वनि, न अर्जुन के धनु की टंकार मगर.
धर्मराज चिंता निमग्न, घिर गया पार्थ, शत्रु विषधर
घिरा शत्रुओं के पंजे में पार्थ, हृदय संशय होता है
लिया कृष्ण ने शस्त्र, न अर्जुन रहा, जलन भीषण होता है
वीर सात्यकि ! उधर देख नभ में प्रलयंकर भीषण धूल
अस्ताचल पर अभी अर्य्यमा जाने की कर सके न भूल
धर्मपुत्र ! निष्कलुष ! पार्थ हित देव जनों से लड़ सकता हूं
हो तेरा आदेश प्राण की आहुति तक दे सकता हूं
कृष्णार्जुन का था लेकिन आदेश, द्रोण को छोड़ नहीं
तेरे सिवा समर में उसका लोहा ले वह अन्य नहीं

धर्मराज पर टूट पड़ेगा, मुझे न पाए निकट अगर
बन्दी बना न ले भ्राता को, रह रह होता मन में डर
सैंधव का वध करने के उपरान्त लौट जब आऊंगा
करता हूं विश्वास द्रोण से लड़ता तुमको पाऊंगा
धर्मराज ! फिर कौन धनंजय की गर्दन जो काट सके
कहां पिपिलिका की ताकत, हिमगिरि की चोटी लांघ सके
पुन: करो मन में विचार क्या उचित छोड़ कर जाना है
मेरे लिए समान जीवित रहना, रण में मर जाना है
वीर सात्यकि ! भीम आदि सब मेरी रक्षा कर लेंगे
मेरी चिंता छोड़, पार्थ बच जाए, समर हम लड़ लेंगे
धर्मराज का मिला उसे आदेश, सात्यकि चलता है
भीम ! युधिष्ठिर तेरी रक्षा में, साग्रह वह कहता है
चला सात्यकि उधर देख कर द्रोण उगलने आग लगे
लगे तोड़ने व्यूह पांडवों का, बरसाने बाण लगे
तनिक नहीं विश्राम चाहिए, गरम हो गया लोहा लाल
रौद्र रुप धर द्रोण मचलते, जाने किसके सर पर काल
पुनि पुनि सुनता पाञ्चजन्य का स्वर, गांडीव मौन लेकिन
गया सात्यकि सम समर्थ योद्धा, सम्बाद नहीं लेकिन
हुआ युधिष्ठिर मन अधीर, हे भीम ! पार्थ की रक्षा कर
देख पार्थ को अपनी आँखों से ऊंचा सिंह गर्जन कर

कभी न थे तुम इतने व्याकुल, धीरज धरना भूल गये
कहा भीम ने, साहसपूर्वक रण में लड़ना भूल गये
सुनो वीर पाँचाल ! द्रोण का होता अथक प्रयास सदा
नृपति को बन्दी कर लेना, नहीं भूलता यदा कदा

इनकी रक्षा परम धर्म था, पर आदेश मिला मुझको
राजा की रक्षा तेरे हाथों में, जला शत्रु दल को
हो निश्चिन्त बढ़ो आगे, जब तक मुझको जिन्दा रहना
तब तक कोई करे यत्न लाखों, सपना बन्दी करना

धृतराष्ट्र के पुत्र ग्यारह स्वर्ग सिधारे भीम प्रहार
ठहरो कहा द्रोण ने डटकर, वृताकार का अग्रिम द्वार
बढ़ना आगे पूर्ण असम्भव, बिना पराजित मुझे किए
अर्जुन की मत करो बात, वह बढ़ा न बिन अनुमति लिए

कभी पूज्य थे, पिता तुल्य थे, गुरु सम्मानित था करता
ब्राह्मण हो तुम शत्रु हमारे, भीम नहीं तुमसे डरता
और पार्थ पौरुष बल से लड़ बढ़ा समर में आगे था
देख बुढ़ापे की तेरी काया बचनों से विनम्र था

जो हो, देखो खड़ा तुम्हारा शत्रु सम्भालो अपने को
गदा चला कर रथ को तोड़ा, द्रोण बचाते अपने को
आठ रथों की छोड़ द्रोण की नौवें रथ की बारी थी
व्यर्थ न बकता भीम, भयंकर गदा चोट दे डाली थी

भोज सैन्य दल नष्ट हुआ, बढ़ गया भीम साहस करता
देखी अपनी आँखों से, अर्जुन सैंधव से रण करता
गर्जन जोरों का किया, कृष्ण अर्जुन उल्लसित हुए दिल से
स्वर सुनते साहस जागा, निश्चित युधिष्ठिर संशय से

होता है विश्वास पार्थ की आज प्रतिज्ञा होगी पूर्ण
समझेगा दुर्योधन भी, होगा उसका मद स्वतः चूर्ण
कितने योद्धाओं का रण की विभीषिका में अन्त हुआ
शान्ति दूत केशव की बातें, टाल न जग ने भला किया

महाभीष्म तक की बलि देखी धरती क्या तू खोज रही
शायद दुर्योधन मैत्री की करे बात, हो भूल सही
कितने भाई मिटे सुयोधन के, दुर्दिन कैसा आया
भगवन हो शुभ भाव हृदय में, कलुष-विमुख होवे काया

एक ओर तो धर्मराज के मन में शान्ति भाव भरा
और दूसरी ओर समर में, अगनित योद्धा मरा पड़ा
है प्रत्येक पल इस धरती पर, खून दौड़ता गरम गरम
शान्ति पाठ तो ढोंग रह गया, वेदोच्चारण निरस नरम

चौदहवें दिन समर क्षेत्र में भूरिश्रवा सात्यकि से
भीम कर्ण के साथ जुटा है, अर्जुन जयद्रथ सम रिपु से
धर्मराज ले कुशल सुभट को, द्रोण सरीखे से डटते हैं
"जीते जी क्या पीठ दिखाना" कहते महा सुभट बढ़ते हैं

दुर्योधन ने किया आक्रमण, सैंधव की रक्षा खातिर
कुन्ती-तनय-प्रहार न सह पाया कुरु नायक पीछे फिर
विकलित हृदय सुयोधन कहता गुरु द्रोण क्या उत्तर दूँ
अर्जुन, भीम, सात्यकि तुमसे पराक्रमी यह बतला दूँ
प्रश्नों का ताँता लगता है, द्रोण युद्ध-विद्या आचार्य
फिर क्यों दल की महादुर्दशा, क्या बतलाऊँ उनको आर्य
संशय मेरा सत्य निकलता; तुम धोखा दे रहे हमें
तितर बटेर झपेटा मारे, बाज ऊँघता मिला हमें
निश्चल हृदय द्रोण समझाते, व्यर्थ सोचते पीछे ओर
टूट गया वह क्या जुट सकता, सब की आंखे तेरी ओर
समर सामने अभी पड़ा है, घिरा हुआ पांडव सब ओर
सिन्धुराज की कर सहायता, अर्जुन केन्द्रित है उस ओर
अभी युधिष्ठिर पांचालों को छोड़ अगर मैं उधर चला
जुट जाएं सब सिंधुराज पर, फिर कैसे हो कहो भला
जस तस साहस ले दुर्योधन सिन्धुराज की ओर चला
मन में संशय आ जाने पर, समर बीच कब हुआ भला
बढ़ते हुए भीम को बाणों की वर्षा से रोक रहा
वीर कर्ण पूरे साहस से कठिन समर में जूझ रहा
विहंस रहा राधेय, कमल- मुख-मंडल प्रमुदित दीप्तिमान
मत हटो भीम ! डट कर देखो, क्या हुआ तुम्हारा स्वाभिमान

उद्वेलित भीम व्यंग वाणी आक्रान्त पार्थ की रक्षा में
हर कदम बढ़ाता व्यग्र हृदय, योद्धा कब रहा प्रतीक्षा में
फूलों से लाल अशोक वृक्ष, लोहू की लाली सना भीम
अंगारों का हो दीपोत्सव, उन्माद उभय दल का असीम
रथ टूट गया, हो गया कर्ण असहाय, दूसरा रथ लेकर
कर रहा भयंकर युद्ध, भीम आश्वस्त सांस लंबी लेकर
गया टूटता एक एक कर रथ न कर्ण पीछे हटता है
गिरा सारथी, धनुष हुआ खंडित न वीर साहस खोता है
दुर्जय को आदेश सुयोधन का मिलता, बढ़ जाता है
अनुज-सुयोधन कर्ण सहायक समर भूमि तन जाता है
भीम बाण आहत दुर्जय, कुरुक्षेत्र सर्प सा लोट रहा
हुआ स्वर्ग आरोहन पौरुष पुंज, कर्ण है बोल रहा
मृत्यु गोद में गिरा कर्ण का सफल सारथी, रथ टूटा
दुर्मुख धृतराष्ट्र का एक पुत्र पुनि भीम निकट जूटा
नौ सफल वाण की चोट प्रताड़ित दुर्मुख समर काम आया
कर्ण देखता रहा, सुयोधन का भ्राता प्रभु को भाया
भीम भयानक क्रूर प्रहारों से आहत कर देता है
कर्ण समर में हुआ पराजित, शिथिल अंग हो जाता है
भर उत्साह शंख ध्वनि करता, भीम मनाता है उल्लास
आहत कर्ण लौट आता, क्यों सहे शत्रु का अट्टहास

जयद्रथ वध

संजय ! धृतराष्ट्र कहता है कर्ण साथ है दुर्योधन का
रोक न पाता भीम सरीखे को, संशय ब्रढ़ता मन का
शलभ दीप की शिखा चूमते करते जीवन का उत्सर्ग
एक एक कर प्रिय पुत्र मेरे जा रहे अकारण स्वर्ग

दुर्योधन हैं भ्रमित कर्ण उसका अजेय हैं महारथी
समर विजय सन्देह नहीं, जब तक सम्बल है महाव्रती
पवन पुत्र बढ़ रहा समर में, यम अनुरुप शक्तिशाली
मिटी वंश संचित मर्यादा, मिटा बंश गौरवशाली

राजन ! सुनो तुम्हारे दिल में घृणा भयानक भरी रही
दुर्योधन की उदण्डता, गुदगुदी हृदय की बनी रही
महाभीष्म जैसे भविष्य - ज्ञाता कीं बातें ठुकरा कर
अपने सर पर युद्ध लिया है नृपति ! धर्म को विलगा कर

वृथा कर्ण को दोषी कहने का करते हो दुःसाहस
समर बीच जो जान हथेली पर ले लड़े पूर्ण साहस
युद्ध क्षेत्र में सुभट बांकुड़े निभा रहे जो अपना धर्म
कर न भर्त्सना उनकी वे अनभिज्ञ नहीं क्या उनका कर्म

सुनो नृपति इस समर क्षेत्र में पांच पुत्र तेरे धाए
एक साथ विकराल रुप ले, भीम सेन पर चढ़ आए
साहस बढ़ा कर्ण का, अग्नि लगी कौंधने चारो ओर
गगन लाल हो लहक उठा, तप गया समर का कोर कोर

दुर्माता, दुर्माशा, दुर्धारा, जय पुनि दुःस्साह सभी
एक साथ भिड़ गये भीम से, अडिग समर में रहा सभी
कर्ण देखता रहा, तुम्हारे पंच पुत्र हो धराशायी
कैसे विशाल नख्वर जैसे, ले रहा भीम था अंगड़ाई
क्रोधी कर्ण खून से लथपथ मिट्टी रौंद भीम से लड़ता
गदा युद्ध में परम प्रतापी उभय पक्ष का टक्कर होता
दुर्योधन अपनी आंखों था देख रहा क्या होता है
है शोक न करने का अवसर, संघर्ष निरन्तर होता है
सप्त बन्धुओं की टोली को भेज रहा फिर दुर्योधन
श्रेष्ठ कर्ण की कर सहायता, द्रवित हो रहा उसका मन
चित्र, सरासन, चित्रावरमन, चारुचित्र, चित्राक्ष चले
चित्र युद्ध, उपचित्र सभी सोल्लाहस क्षेत्र को लांघ चले
लाल लाल आँखों का सपना भीम न टिकने पाएगा
आहत हो चिघ्घार करेगा, धराशायी हो जाएगा
बढ़ते हुए हौसले से हो रहा आक्रमण चारो ओर
सब की आँखे लगी भीम पर वह्नि-ज्वाल फेनिल सब ओर
एक एक कर सातो भाई, दुर्योधन का विदा हुआ
दृश्य देख केशव, अर्जुन, सात्यकि हर्ष अतिरेक हुआ
भूरिश्रवा, कृपा, सैंधव, अश्वत्थामा आदि सब वीर
हुए चकित, धरती पर आया, पवन पुत्र है अतुलित वीर

दुर्योधन जल रहा, क्रोध का दावानल कितना भीषण
कौन ठिकाना महाकर्ण को भीम उठा ले, संशय मन
पुनः नृपति के सात पुत्र का चला एक दल साहस कर
हुआ भीम के हाथों सब का अन्त, समर अति प्रलयंकर

आज सुयोधन के भाई में अंतिम आहत हुआ विकर्ण
निश्छल, सुन्दर, धर्मनीति पर चलने वाला, स्वर्णिम वर्ण
देख लिया जब धराशायी, हो गया द्रवित था भीम स्वयं
न्याय तुम्हारा पक्ष प्रबल था, लक्षित हुआ न कभी अहं

धर्म युद्ध आह्वान कर क्षत्रिय घर में कै सो सकता
थे कितने निष्कलुष बन्धु ! विस्मरण न तेरा हो सकता
महाभीष्म सा धर्मधुरन्धर पूर्ण निष्कलुष तुम जैसा
इस धरती से उठ जाता है, हाय युद्ध निर्मम कैसा

सभी हताहत होकर दुर्योधन के भाई चले जाते हैं
कर्ण न अपने को सम्भाल पाता, अवयव यों हिल जाते हैं
आँखों को ले मूंद चाहता यह संसार न दीख पड़े
है धिक्कार लौट जाऊँ, सम्भले डट कर हो गये खड़े

अधरों की मुस्कान क्रोध की ज्वाला बन कर फूट रही
करु भीम को खंडित पल पल मनोभावना कौंध रही
सम्भाषण का मुकुल तुमुल गर्जन का वृहद् प्रसून बना
धर्मराज निज बन्धु के गर्जन की ध्वनि अति मुग्ध मना

अश्व हुआ आहत, रथ टूटा भीम चलाता है भाला
रथारुढ़ श्रीं कर्ण रोकता, बाणों से चमकी चपला
ढाल लिए तलवार हाथ में, भीम गरजता बढ़ता है
बाणों की बौछार भयंकर, शस्त्र टूट कर गिरता है
कूद पड़ा यह महावली, बच गया कर्ण तिरछा होकर
आहत हो गिरता धरती पर, टला बज्र निष्फल होकर
त्याग कर्ण का रथ, धरती पर भीमसेन है मचल रहा
मृतक हाथियों के अंगों से, कर्ण-आक्रमण रोक रहा
मिला हाथ को टूटा चक्का, मृतक अश्व हाथी का अंग
लड़ता रहा अनवरत कितनी ार कर्ण है होता तंग
हो निरस्त्र जब भीम समर में फीका लगने लगता है
कर्ण व्यंग बाणों से आहत, क्रूर प्रमुदित मन होता है
महा मूर्ख ! क्या युद्ध करेगा, बन में जा विश्राम करो
भरो पेट खा कन्द मूल तन हाथी जैसा मोट करो
जब आता आक्रोश, भाव जगता जिन्दा खा जाऊँगा
मां कुन्ती को दिया वचन, है भीम अबध्य निभाऊँगा
महा भीम पर अट्टाहस अर्जुन ने सर संधान किया
कर्ण रोकता बड़ी चपलता से, कौतूहल एक हुआ
सिर्फ एक पांडव को मारुँगा, यह कर्ण निभाएगा
कुन्ती को कह दिया पार्थ ही मेरे हाथों जाएगा

वीर सात्यकि शत्रु व्यूह को तोड़ सवेग चला आगे
कहा कृष्ण ने पार्थ ! साहसी कैसा ? देख शत्रु भागे
अर्जुन कहता धर्मराज ने इसे भेज कर गलती की
द्रोण दहाड़ रहे होंगे, क्या अनभल हो न समीक्षा की
अविवाहिता देवकी केशव की माँ का सौन्दर्य महान
सोमदत्त, सिन्नी लड़ते थे, मिले रूपसी यह अरमान
सोमदत्त हो गया पराजित, सिन्नी संग चली बाला
वाशुदेव ने भरी मांग, भर सका न घाव समर बाला
समर बीच सात्यकि पौत्र सिन्नी का पांडव की आशा
भूरिश्रवा पुत्र बलशाली सोमदत्त की अभिलाषा
देख सामने धर्मक्षेत्र में, भूरिश्रवा गरजता है
सम्भल सात्यकि अभिमानी, जीवन का अंत झलकता है
देखो तुम मेरा अन्त, सात्यकि बोला व्यर्थ न बात करो
हो सामर्थ्य दिखा कौशल बातों का युद्ध न व्यर्थ करो
जुटे समर में उभय पक्ष की, जमी शत्रुता जाग उठी
रथ टूटा धनु खंडित है, शमसीर हाथ में चमक उठी
सैंधव-वध का लक्ष्य आज का पार्थ निरन्तर लगा हुआ
केशव बतलाते अर्जुन, सात्यकि प्रताड़ित व्यथित हुआ
तक्षण देखा वीर सात्यकि को प्रतिद्वन्दी ने पटका
पूरे बल से उठा धरा पर धराशायी करके अड़का

मचा शोर कौरव दल में सात्यकि धरा को छोड़ चला
ले तलवार हाथ में शत्रु लात गात पर दिए खड़ा
संशय होता मुझे, न उसने समर हेतु ललकारा है
सैंधव का प्रतिपल कौतूक, दो क्षण भी रोक न पाया है
व्यर्थ सोचना पार्थ ! सात्यकि समर काम आ जाए तो
तेरे हित तेरे रहते संसार छोड़ चल जाए तो
क्या होगा यह उचित ? मैत्री का क्या ऐसा बदला होगा ?
किसके लिए कौन जगती में समर भूमि प्रेरित होगा
अर्जुन का गांडीव चला, कट गया हाथ तलवार लिए
भूरिश्रवा धराशायी, नयनों से अर्जुन को देखे
कुन्ती-तनय ! वीरता का कैसा हो रहा प्रदर्शन है ?
बिना सूचना हो प्रहार, नग्नता धर्म-श्रुति भक्षण है
धर्मराज को क्या कह दोगे, तुम्हें इन्द्र ने बतलाया
द्रोण, कृपा ने क्या अनुशासन की रीति था समझाया
आर्य रक्त तेरे तन में, इस पर अब संशय होता है
वासुदेव-कुल-भूषण का, आचार प्रदर्शित होता है
भूरिश्रवा ! भयानक पीड़ा में मस्तिष्क सहायक हो
कहा पार्थ ने तभी मनुजता प्रतिज्वलित फलदायक हो
विश्व-विभूषित कृष्ण सखा को तुम अपशब्द सुनाते हो
जो गढ़ता इतिहास, प्रेरणा उससे ले नहीं पाते हो

भूमि पर निःशस्त्र पड़ा उस पर तलवार चलाते हो
परम मित्र को मरने देता, यह उपदेश सुनाते हो
श्रान्त सात्यकि मेरी रक्षा हित दौड़ा अधीर आता था
ऐसे अवसर पर तुमको उससे लड़ना शोभा देता था
सूर्योदय की प्रथम किरण सम शुचि अभिमन्यु को घेरा
था निरस्त्र कितनी निर्ममता से उस पर डाला फेरा
धराशायी कर उसे कौरवों ने उल्लास मनाया था
कितना तुम उछले थे, कौतूक कितना क्रूर मचाया था
श्रमित, शान्त हो गया वाम कर से वाणों का बना चुका
आसन, हो आरुढ़ सोमदत्त पुत्र ध्यान में लीन पड़ा
लगे कौरवों के नायक अपशब्द प्रकट करने अतिक्रूर
पार्थ बोलता मित्र सूरता परम धर्म तत्पर भरपूर
भूरिश्रवा ! सुनो भावों में भरा पार्थ बतलाता है
कितने परम हितैषी की तूने की रक्षा, लगता है ?
अतः दोष देना मुझको इस हित, शोभा की बात नहीं
बल प्रयोग अपराध समर, यह क्षात्र धर्म स्वीकार नहीं
अब तक था बेहोश, सात्यकि की चेतना जाग उठी
ध्यानावस्थित रिपु-ग्रीवा शमसीर धार थी जा बैठी
यह जघन्य अपराध सात्यकि ! तू ने अच्छा नहीं किया
लगे बोलने सुभट वीर, रण नीति का परित्याग किया

सीने पर दे लात मुझे तलवार धार से टुकड़ा कर
अकड़ बोलते वीर बांकुड़ा, गिरे हुए की हत्या कर
उसके हेतु उचित नीति, जिस हालत में वह मिल जाए
करो बेधड़क वार, धरा से ऐसा पापी टल जाए

प्रतिशोधी सात्यकि बैताता, रे अधर्म मत इसको मान
नियम तोड़ हथियार उठाने पर फूले जिसका अभिमान
उस हत्यारे की हत्या, जिस तिस प्रकार से होने दो
धरा प्रकंपित, दुश्चरित्र जन-रिक्त मही को होने दो

सुन लेते सब लोग, सात्यकि का उत्तर उपयुक्त नहीं
भूरिश्रवा धन्य, रण में भी प्रभु-उपासना विरत नहीं
आवागमन सतत प्रतिपल पर प्रभु किसके दिल बसता है
जगती का अपनत्व त्याग मन परम पिता कब रमता है

दुर्योधन आह्लादित मन कहता कर्ण ! निर्णायक अवसर
सूर्य अस्त उपरान्त जीवित सैंधव, आँख उसके उपर
हुई पार्थ से भूल पांडवों का विनाश इस क्षण होगा
भावावेश प्रतिज्ञा कर डाली, रे वचन विफल होगा

जब होगा सूर्यास्त कर्ण ! अर्जुन निज चिता सजाएगा
एक छत्र साम्राज्य प्रिय फिर कौन सामने आएगा
इस अवसर की पूर्ण सफलता का, शुभ श्रेय तुझे प्रियवर
शल्य, कृपा, अश्वत्थामा कितने लगते सब प्रलयंकर

नृपति ! तुम्हारी सेवा में सब कुछ अर्पण करना स्वीकार
भीमसेन के हथियारों से, क्षत विक्षत अभी तैयार
पाँचजन्य के तीव्र वेग से ऋषभ स्वरों का गर्जन सुन
शीघ्र दाहका रथ ले आया, हुआ सात्यकि तब आरुढ़
केशव का प्रवीण रथ चालक, चला दाहका रथ के साथ
साहसपूर्वक जुटा सात्यकि, क्रोधी कर्ण सुभट के साथ
कर्ण विरथी हो गया सुयोधन का रथ देता शरण उसे
देव लोक वासी धरती पर समर देखते शुचि मन से
सुनो नृपति, संजय कहता है पार्थ, कृष्ण सात्यकि समान
धनुर्विद्या सिरमौर जगत में अन्य नहीं, तू ऐसा मान
सव्य-सची धनु संचालन में एक हाथ से लेता काम
समर आग से लाल हो गया; सब के मुँह पर उसका नाम
तोड़ व्यूह की क्लिष्ट योजना पार्थ सामने सैंधव के
लपट आग की उभय पक्ष में, क्रोधित भुजा सहज फड़के
तपती गयी युद्ध की धरती ढलता सूर्य गया उस ओर
लाल रंग पश्चिम दिशि फैला, हर्षित सुभट सुयोधन ओर
काल न रुकता मानव अपनी क्रिया कलाप रहे करता
या निस्तेज अकिंचन होकर, क्रिया विहीन सफर करता
अर्जुन का क्या वचन सूर्य के साथ डूबने वाला है
समय अल्प बच रहा, अर्य्यमा अभी डूबने वाला है

फैल गया जब अंधकार, सबने समझा सूर्यास्त हुआ
कौरव दल उल्लसित, व्यंग बाणों का तीक्ष्ण प्रहार हुआ
अहंकार का भव्य प्रदर्शन, समर भूमि होने वाला
सैंधव सीना तान चलेगा, दुर्योधन हो मतवाला

अस्ताचल की ओर देखता, सूर्य दिखायी नहीं पड़ा
हर्षित हृदय सांस ली लम्बी, जयद्रथ तन कर हुआ खड़ा
दुर्योधन की मनोकामना, मन ही मन अकुलाती है
अर्जुन चिता सजाये अपनी, कैसी शुभ घड़ी आती है

अर्जुन ! कहता कृष्ण देखता पश्चिम ओर विहसता सा
हंसता है जयद्रथ, फूला कितना अन्दर से खिलता सा
शुभ अवसर गांडीव चला कर, शत्रु का संहार करो
मेरी ही यह कृति कालिमा, संशय का परित्याग करो

बाण भयंकर चला, कटी ग्रीवा, सैंधव का सर उड़ता
बाणों के प्रहार से चलता वृहद्रथ गोदी गिरता
सन्ध्या करता हुआ पिता का ध्यान टूटता, बेटे का
सर गोदी में पड़ा, सैंकड़ों टुकड़े तापस के सरका

एक साथ ही पिता पुत्र संसार छोड़ कर विदा हुए
उनके हाथों धरती पर था सर आया, यह जान गये
सूर्य विहंसता दीख पड़ा, पश्चिम की ओर अन्धेरा दूर
भगवन कृपा मिली अर्जुन को, यश जीवन से कैसे दूर

युद्ध अभी चल रहा, आज घनघोर व्यथा कौरव दल में
केशव पार्थ, युद्धामन्यु सब शंख ध्वनि करते नभ में
वीर सात्यकि, भीम उत्तमौजा का शंख गरजता है
जयद्रथ का वध हुग्रा, हर्ष पांडव दल मुक्त छलकता है

पार्थ तुम्हें मिल गयी सफलता, धर्मराज साहस लेकर
बढ़े द्रोण की ओर वेग से, वीर सुभट बढ़ते डटकर
अस्त हुआ सूरज किन्तु रण की विभीषिका रुकी नहीं
खंडित नीति शास्त्र, शत्रु मर्दन की लिप्सा मिटी नहीं

नित्य प्रति आक्रोश हृदय का तीखा होता जाता है
विजय मिले या मिले पराजय, मन अकुलाता जाता है
जिसे सफलता मिली, वृहद्तर जय की परियोजना करे
असफल हुआ, हृदय प्रतिशोधों की कल्पना हजार करे



कर्णावसान

चौदहवें दिन महासमर का युद्ध नहीं स्थगित हुआ
सूर्य अस्त हो गया, क्षेत्र में दावानल नहीं धीम हुआ
बजते रहे नगाड़े, शंखों का स्वर सदा गूँजता है
अंधकार को दूर भगाता, व्यापक दीपक जलता है

घटोत्कच का भव्य प्रदर्शन, रिपुदल कांप रहा, परिशान
दुर्योधन ने कहा, कर्ण ! तेरे हाथों इसका अवसान
राक्षस कुल की सेना ने अति क्रूर बाण से वेधा था
स्वयं कर्ण आक्रोश दबाए, अवसर हेतु चलता था

था अमोध जो अस्त्र, कर्ण उसको सम्भालता अर्जुन हित
घटोत्कच घातक प्रति पल, संबल खोते सब कौरव हित
धैर्य टूटता गया, कर्ण की स्थिरता टूटी इस बार
चला बाण, आहत घटोत्कच,, धराशायी, मिश्रित जयकार

घटोत्कच अवसान पांडवों को देता पीड़ा भारी
अर्जुन संकट टला, सान्त्वना की बातें बारी बारी
महा अनल परिज्वलित कौरवों को अवसर मिलता थोड़ा
अस्त्र हाथ से गया, नायकों के दिल को इसने घेरा

द्रोण प्रलय की सृष्टि करते, धर्मयुद्ध में पाना पार
इनसे पूर्ण असम्भव जानो, कहा कृष्ण ने अंतिम बार
सुनो पार्थ ! इनको अपने बेटे की मृत्यु का सम्वाद
मिले त्याग देंगे अपना सामर्थ्य, हिलेगा अविचल गात

कौन कहेगा, यह झूठा सम्बाद पार्थ सकुचाता है
धर्मराज ने कहा, सहज यह कर्ण समझ में आता है
देवों के हित महा रुद्र ने विष का प्याला पान किया
बाली पर राघव ने छिप कर, प्रिय सखा हित वार किया
भीम-गदा आक्रान्त, अश्वत्थामा-हाथी मर जाता है
"मरा अश्वत्थामा" भ्रान्ति-संवाद शीघ्र छा जाता हैं
कहो युधिष्ठिर क्या मेरा सुत निश्चित स्वर्ग सिधार गया
धर्मराज ते कहा, गुरु है सत्य, जगत से चला गया
क्या त्रिलोक साम्राज्य युधिष्ठिर को असत्य के बल लेना
नहीं कभी ऐसा हो सकता, द्रोण जानते थे इतना
धर्मराज कह रहा अश्वत्थामा जगती से हुआ बिदा
"मनुज नहीं हाथी" धीमा स्वर धर्मनाश की यह विपदा
धृतराष्ट्र ! संसार भोगने का अभिलाषी होने से
धर्मराज भी धरतीं पर आ गिरे, धर्म तज जीने से
संजय कहता, विजय लालसा उन्हें पराजित कर पायी
वसुधा ममतामयी, सफलता देवलोक फैला पायी
हुआ पूर्ण विश्वास द्रोण को पुत्र त्याग संसार गया
जीवन का रस अकस्मात, भावों से पूर्ण विरक्त हुआ
भीमसेन ने कहा त्याग कर ब्राह्मण धर्म अनर्थ किया
कितने अगनित सुभट वीर को, असमय तुमने बिदा किया

कहो धर्म ब्राह्मण का यह, हत्या प्रतिपल करता जाए
नीति-श्लोक दुहराय प्रति पल, निर्मम हो लड़ता जाए
जन्मजात तज धर्म विप्र ! तू ने अपराध अनर्थ किया
द्रोण व्यंग बाणों से आहत, शस्त्र धरा पर फेंक दिया
रथ पर आसन लगा द्रोण, ध्यानस्थ लगे संध्या करने
धृष्टद्युम्न ने गर्दन काटी, लगा रक्त लोहित चलने
ले नंगी तलवार खून से लाल सफलता पर इठला
धृष्टद्युम्न था रहा ऐंठ, जनमत कहता था नहीं भला
स्वर्गारोहण हुआ द्रोण का, रण-नीति सिमटी जाती थी
विजय लालसा में नैतिकता, दुबलाती, मरती जाती थी
धर्मयुद्ध का शंखनाद, शुचि ओज पूर्ण आह्वान हुआ
रण में नीति, नियम, धर्म का हनन, दमन, अतिक्रमण हुआ
कर्ण शल्य-चालित रथ पर आरुढ़ कौरवों का नायक
द्रोण स्वर्ग आरोहण के उपरान्त, समर का संचालक
ज्योतिष विद सम्मति शुभ पाकर अर्जुन चला कर्ण की ओर
अवसर देख दुःशासन की छाती पर भीम, भयंकर शोर
राक्षस! पशु! निर्मम ! अपराधी! नीच! पतित ! तेरा यह हाथ
जिसने पकड़ा चिकुर द्रौपदी कैसे देगा तेरा साथ
हो कोई बलवान सहायक उसे बुला देखूँ उसको
छाती फाड़ रक्त पीने लग गये भीम चींपे उसको

दुष्ट दुःशासन का धड़ से कर विलग हाथ को तोड़ मरोड़
फेंक बीच में दिया, जुटे थे जहाँ सभी अपना जी तोड़
तेरह वर्ष पूर्व मेरे मन में अभिलाषा थी जागी
पूर्ण हुई, बस एक बच रहा, दुष्ट सुयोधन बड़भागी
हृदय विदारक दृश्य कर्ण भय से आतंकित होता है
सुनो वीर, साहस जीवन सारथी शल्य यह कहता है
समर दुःशासन नहीं सवों की दृष्टि तुम्हारी ओर लगी
दुर्योधन का घबराया दिल, चिंता प्रतिपल जाग रही
शल्य सम्भालो रथ अर्जुन से सीधा अभी समर होगा
कर्ण क्रोध सरिता आप्लावित जल कर शत्रु भस्म होगा
हुआ समर घनघोर, भयानक दृश्य धरा पर छाया है
करो शान्त संग्राम अश्वत्थामा के मन यह आया है
प्रकट किया, मन-भाव, सुयोधन लगा गरजने, सुना नहीं ?
रक्तपान करता राक्षस क्या कहता था क्या सुना नहीं ?
अब किससे मैत्री ? सेना का पुनर्गठन स्थापन हो
क्षात्र धर्म आह्वान, रुद्र का परम तेज मय नर्त्तन हो
नागिन सी जिह्वा फैलाता ब्राण पार्थ को ज़ाता वेध
केशव जग आधार जानते कब क्या होगा सारा भेद
कीचड़ बीच पाँच अंगुल रथ के चक्के को डुबो दिया
मुकुट गिरा अर्जुन का प्रेरित क्रोध विवश पुनि पार्थ हुआ

चला पार्थ का बाण, ठीक अवसर पर चक्का कीचड़ में
लगा कर्ण जाकर सुधारने, धैर्य टूटता दुर्दिन में
रथ का चक्का फंसा बीच में, धर्मनीति का ध्यान धरो
डट कर कहता कर्ण, पार्थ ! तज शर्म न निर्मम वार करो
कह न सका कुछ पार्थ कृष्ण के मुख से निकले वचन अमोल
कर्ण ! धर्म की बात सुनाता, कैसा धर्म जरा यह बोल
कितना सुन्दर धर्म द्रौपदी का अपमान सभा के बीच
जुआ खेलने को अभिप्रेरित किसने किया बताओ नीच
धर्म नहीं बतलाता था पांडव को देना राज्य कभी
रे भीमसेन को जहर पिलाना समझा उत्तम धर्म कभी
कभी धर्म का रुप पांडवों को लाक्षा गृह जलवाना
कितना उत्तम धर्म निहत्थे अभिमन्यु को मरवाना
पाँचाली जब सभा मंच में रोयी थी तब याद करो
धर्म बताया था तूने, पति गये छोड़, अन्यान्य वरो
जिस जिह्वा से पतित अमानुष शब्द निकलता था अब तक
उससे धर्म सरीखे सुन्दर शब्द निकल सकता कब तक
शर्मिन्दा हो, नमित नयन से रथ निकालना चाह रहा
बाण एक मारा उस क्षण भी, पार्थ बचा, मन सोच रहा
परशुराम का मंत्र पढ़ रहा, कर्ण न हुआ प्रभाव कभी
सारी कोशिश हुई विफल, हिल सका न चक्का मगर कभी

अर्जुन ! चिंता व्यर्थ शत्रु पर साहसपूर्वक वार करो
कहा कृष्ण ने उचित समय पर धनु सायक संधान करो
हुआ धनुष-टंकार मचलता बाण वेग पूर्वक जाकर
काट दिया सर को धड़ से, राधेय पड़ा धरती गिर कर

अर्जुन सहम रहा था, हिलता गात, शत्रु की लाचारी पर
कृष्ण बढ़े आगे ललकारा, उचित समय तत्पर डटकर
दीन-हीन शत्रु नतमस्तक दीख पड़े फिर भी शत्रु है
तुम्हें सफलता निस्सन्देह, तू उसका मित्र नहीं, शत्रु है

नहीं किया अपराध पार्थ ने इसे सिद्ध कर देने को
दिया उचित आदेश कृष्ण ने, विजय प्राप्त कर लेने को
निःसंकोच बढ़ो आगे, शत्रु पर ममता धर्म नहीं
पापी की हत्या बिन जगती से मिट सके अधर्म नहीं



गदा युद्ध

कर्ण हताहत हुआ, सुयोधन हृदय-हीन हो जीता है
कटुता, प्रतिद्वन्दिता, विवशता गरल विलखता पीता है
एक एक कर समर क्षेत्र से गये स्वर्ग धरती के लाल
कृपाचार्य कहते दुर्योधन ! करो संधि, टूटे यह जाल
कृपाचार्य ! यह हो सकता था, समय आज पर नहीं रहा
प्रियजनों को स्वर्ग भेज क्या मेरे हाथों बचा रहा
जान बचाने को संधि कर राज्य भोगने लग जाऊँ
कण कण का अभिशाप सहज किस साहस से मैं कर पाऊँ
शल्य बने नायक कौरव दल के, रण रंग नहीं बदला
धर्मराज उत्तेजित धन में मचल पड़ी मानो चपला
जोरों का संघर्ष उत्तरोत्तर घनघोर बढ़ा जाता
धर्मराज का भाला जाकर शल्य हृदय में बिंध जाता
शल्य हताहत हुए, स्वर्ग आरोहन गौरवपूर्ण हुआ
कौरव दल साहस विहीन, उद्वेलित नृपति तनय हुआ
बलशाली भाई कौरव के भीमसेन से टकराकर
धराशायी हो गये, बच रहा एक सुयोधन धरती पर
धृतराष्ट्र सुन रहे, समर में दुर्योधन ही बचता है
घायल है, घबराता सा, उद्विग्न मना सा चलता है
संजय कहता सुनो ! बचे जो सैन्य भागते दीख पड़े
कौरव दल नायक विहीन, चित्कार चतुर्दिक दीख पड़े

भाग रहा है अभी अकेला, दुर्योधन पानी की ओर
हेल गया सरिता में सब कुछ त्याग, गदा को सका न छोड़
धर्मराज पींछा करते बंधुबांधव संग पहुँच गये
हृदय भाव भंजित, जगती पर अब तक क्या क्या देख गये

सुनो सुयोधन ! करके सब अपने हाथों से सत्यानाश
चाह रहा तुम जान बचाना, हृदय न तेरे पौरुष आश
छिपे रहोगे ? कब तक तुमको छिपा जलाशय पाएगा
अहंकार क्या हुआ, कहो बेशर्म, कहां रह पाएगा

लिया क्षात्र कुल जन्म तुम्हें क्या यही शोभती कायरता
धर्मराज ललकार रहे, कैसी विपदा थी, कातरता
सुनो युधिष्ठिर ! मरने का भय मुझे नहीं हो सकता है
किसके हेतु युद्ध करुँ मानस को चिंतित करता है

नहीं भाग कर जान बचाने दुर्योधन आया इस ओर
शान्त कर रहा धधक रहा जो जख्म, अग्नि का बढ़ता जोर
छिप कर जी लेने की बात सुनाते, शर्म नहीं आती
देख न क्या दुर्योधन को दुश्मन की फटती है छाती

जगत चाहिए मुझे नहीं, संसार तुम्हे मैं सौंप रहा
राज्य करो, भोगो धरती, लिप्सा दिल से मैं छोड़ रहा
राज्य, वृथा इसकी चिन्ता, किसके हित राज्य सम्भालूँगा
कौन बचा, जिसके हित हाथों से हथियार चलाऊँगा

धर्मराज ने कहा मृदुलता इतनी आज दिखाते हो
सूचि के अग्रिम भाग न धरती, कहो भूल क्यों जाते हो
मांगा था दो शान्ति भीख संसार प्रीति समता का है
विषका प्याला पिला, सबों को मार, भजन करता अब है
मुझे दिखाते राज्य, राज्य के लिए न पांडव लड़ता है
स्मरण करो पांचाली का अपमान, हृदय क्या कहता है
घृणित किया अपराध, मृत्यु का दण्ड तुम्हे शोभा देती
खोज कोन है साथ, अहं सब चूर, प्रेरणा क्या मिलती
संजय कहता धर्मराज की बाते सुनकर क्रूर कठोर
गदा हाथ में लिए सुयोधन सरिता के उपर उस ओर
एक एक कर चलो, युधिष्ठिर घायल दुर्योधन कहता है
तुम पांचों के लिए हाथ में गदा, गरज नायक तनता है
घायल हूं, तुम पाँच साथ लड़ना चाहो यह ठीक नहीं
एक एक कर आते जाओ, करो समर में देर नहीं
धर्मराज ने कहा, कहो अभिमन्यु को कैसे घेरा
हम पांडव सन्तान, नहीं कर सकते, सब तेरा फेरा
पहनो अपना कवच, युद्ध हम पांचों में जिससे करना
बतलाओ, हमने न कभी सीखा रण में पीछे हटना
गदा युद्ध में भीम छोड़ कर और किसे ललकारुँगा
चलो भीम ! अंतिम इच्छा अपनी पूरी कर पाऊँगा

कहना मुश्किल कौन पराजित, किसे विजय मिल वाली
लोहे का टकराव, छिटकती अग्निलता जलने वाली
दर्शक-दीर्घा कृष्ण सुनाते पार्थ, भीम को वचन निभाना
सुना भीम ने आन्दोलित मन, दावपेंच से गदा चलाना
गदा चोट भारी दुर्योधन की जंघा पर लगी अभी
कटि प्रदेश नीचे प्रहार होता न गदा से सुना कभी
हो आरुढ़ धराशायी दुर्योधन के घायल शरीर पर
लगा नाचने भीम पराजित पराक्रमी लथपथ धरती पर
धर्मराज ने कहा भाई है दुर्योधन, है राजकुमार
सर पर इसके चरण बिठाना उचित नहीं, नीति अनुसार
चलो सम्भालें रथ हम अपना, इसे विलट कर मरने दो
कहा कृष्ण ने पांडव जन से, इसको सजा भुगतने दो
सबको जला आग में अब तक अहंकार से जीता था
शीघ्र अन्त हो जायगा, भीतर पीड़ा में पलता था
आँखों में अंगार लिए दुर्योधन गुर्राता इस वार
सुनो कृष्ण ! अन्याय क्रूरता से रिपु विजय, हमारी हार
धर्म नीति, आचार सहित क्या द्रोण पराजित हो जाता
भीष्म, कर्ण को पांडव रण अपना आखेट बना सकता
शर्म तुम्हें आती है बोलो, कितने तुम निर्लज्ज कहो
महा सुभट वीरों का कर प्राणान्त, अकड़ते व्यर्थ अहो

दंभ स्वार्थ वस तूने कितना अनय, पतित अपराध किया
किसे बताते तू दोषी, दो क्षण दिल में न विचार किया
कर कुकर्म यश प्राप्त तुम्हें करने की दिल में चाह रही
अंतिम समय विचार, बचा क्या, घृणा व्यर्थ खलबला रही
स्वर्ग लोक निज भाई बन्धुओं से मिलने मैं चलता हूं
क्षत्रिय उचित समर की इच्छा रखता था पुनि कहता हूं
लिया राज-कुल धर्म, मरण का वरण करु रण में सौभाग्य
सड़ो, गलो, भोगो दुनिया में, गिनो क्या लिखा तेरे भाग्य
और भीम की बात, पैर मेरे मस्तक पर रखता है
घायल टूटा पैर, गिरा हूं, पतित तभी तो धरता है
नहीं सोच का विषय शीघ्र ही गिद्ध और कौए आकर
मृतक पड़े तन पर मचलेंगे, हर्षित मांस नोच खाकर
दुर्योधन गरजा धरती पर, हुई पुष्प वर्षा नभ से
अंग अंग क्षत्रित्व भरा, पौरुष था छिटक रहा तन से
राज्य प्राप्ति हेतु नाना विधि छल प्रपंच से लेता काम
भरा ओज परिपूर्ण अंग झुकने का लेता कभी न नाम
गदा-क्रूर-टंकार श्रवण कर गर्भपात हो जाता था
गदा साथ में भिन भिन करती मक्खी भगा न पाता था
समय, बदलता भाग्य, पता क्या किसे कहाँ ले जायगा
पौरुष का विकराल रूप, कब मिट्टी में मिल जायगा

धर्मयुद्ध जीवन अवधि की अंतिम सांसें लेता था
जन परिजन वियोग जनमानस को चिंतित कर देता था
निज आँखों से देख न पाऊँ नर संहार, पाप पीड़ा
देशाटन का हलधर ने था लिया इसी हेतु बीड़ा

दैव योग तीर्थाटन के उपरान्त क्षेत्र में आए तब
दुर्योधन की जंघा पर गिर रही गदा थी भारी जब
रोक न पाए मन, भावना, पतित भीम क्या कर डाला ?
कटि-प्रदेश नीचे प्रहार, कैसा अनर्थ यह कर डाला ?

उद्वेलित आक्रोश भुजाओं में था उष्ण रक्त बहता
हल सम्भाल हाथों में, विह्वल हलधर भीम ओर बढ़ता
कृष्ण ! तुम्हें शोभा देता, चुपचाप अनर्थ करो देखा
क्षात्र धर्म अभिशप्त, पार कर गये आचरण की रेखा

केशव ने पहचान लिया, भैया का क्रोध भयावह है
टूट पड़े तो अनभल होगा, अनुपम पराक्रमी बल है
सम्भल जरा सुन लीजे भ्राता, उचित कार्य क्या हो सकता
दुष्ट दुष्टता करता जाय, सज्जन कैसे बच सकता

पांडव निकट कुटुम्ब मित्रता इनसे हमें निभानी है
दुर्योधन का अनय, जगत में जलती एक कहानी है
पांचाली अपमान देख कर भीम ठान बैठा मन में
चाह रहे अबला बैठाना जंघे पर, तोड़ूगा रण में

भरी सभा में कठिन प्रतिज्ञा भीमसेन ने जब ली थी
सभी जानते थे, जंघे पर गदा बरसने वाली थी
भंग प्रतिज्ञा करके जीना कहो उचित क्या होता है ?
जो कुछ किया कौरवों ने आँखों से ओझल होता है ?
पूर्ण विवेचण, विश्लेषण बिन निर्णय उचित न हो सकता
करें पांडवों पर आक्रोश, उचित यह कैसे हो सकता
कलियुग का आगमन हो रहा, अब अतीत के नियम सभी
नए नए संदर्भों में गूंथे जाएंगे कभी कभी
भला कर्ण को पीछे से हथियार चला अभिमन्यु पर
निर्दयता से दल बल लेकर करना वार निहत्थे पर
क्या न सिखाया था दुर्योधन ने, कैसा दुष्कर्मी है
स्वार्थ त्याग क्या कभी सोचता, दंभी और अधर्मी है
तेरह वर्ष शान्त अपने को रक्खा भीम प्रतापी ने
सहता रहता यातना क्या-क्या किया न अत्याचारी ने
दुर्योधन था जान रहा, है अडिग प्रतिज्ञा उस पर भी
ललकारा था भीमसेन को, था न हृदय अनजान कभी
अपनी परम पुनीत प्रतिज्ञा, इसने यदि निभायी हैं
क्षात्र धर्म अनुकूल आचरण कज्जल शुद्ध बधाई है
केशव कहते गये नहीं बलराम प्रभावित हो पाए
अनुचित है, यह है अधर्म, कहना न भूल इसको पाए

बढ़ता गया क्रोध, बोले दुर्योधन स्वर्ग सिधारेगा
और भीम व्यक्तित्व बेच कर अपमानित हो जाएगा
केशव तुम मुझको समझाते रण नीति को त्याग समर
वीर युद्ध करने लग जाए, सुयश पाए हो जाय अमर

रे सम्भाल अपना सुन्दर उपदेश, पांडवों को सिखलाना
मैं चलता हूं कृष्ण ! द्वारका, सह्य नहीं आगे रुक जाना
चले गये बलराम, देखते रहे सुभट निश्छल कैसा
अपने और पराये का है भेद घृणित माना ऐसा

धर्मराज ने कहा पैर पर मस्तक रखना अनुचित है
समर-क्षेत्र की मान्यताओं का अतिक्रमण नहीं समुचित है
भरत-वंश का सुयश मेटने लगा मुझे होता है भान
किया कौरवों ने हमको पथ भ्रष्ट, धरा सर पर अपमान

कितना दुःख अफसोस भरा आक्रोश वृकोदर के दिल में
जान सके ऐसा विरला ही मिले निखिल अवनि तल में
दुर्योधन का स्वार्थ उसे ले डूबा कौन बचा पाता
व्यर्थ करें हम इसकी चिन्ता, कौन रहेगा पछताता

वीर धनञ्जय शान्त, भीम का कार्य न था स्वीकार उसे
अन्य बोलते रहे, यथा विधि जो कहते बनता जिससे
कहा कृष्ण ने चलो यहाँ से, मरनासन्न पड़ा है वह
हम क्यों निन्दा करें, संगति का फल भोग रहा है वह

पड़ा हुआ अति पीड़ित सुयोधन सुनकर केशव की यह बात
हाथों के बल चाह रहा उठना, थोड़ा उठ पायागात
कृष्ण ! दास के वंशज तेरा बाप दास था कामस का
तुम्हें नहीं अधिकार मिले संग सुभट नृपति संतानों का

कितना तू बेशर्म दिखाता अपनी जंघा अर्जुन को
देख रहा था उसकाया था उस अधर्म हित दुष्ट भीम को
हृदय न तेरे दया, शर्म के लिए नहीं स्थान वहाँ
किस अनीति से भीष्म प्रताड़ित हुए छिपे पर पाप कहाँ

अबला पर हथियार चलाना, परम वीर को मान्य नहीं
चला शिखंडी देह भांजवा, समर उन्हें स्वीकार नहीं
त्याग दिए हथियार, बताओ क्या न योजना तेरी थी ?
धर्मपुत्र के झूठ बोलने को न मंत्रणा तेरी थी ?

द्रोण करें विश्वास, और तुम छल प्रपंच के विश्वासी
ध्यानावस्थित आर्य सुभट के साथ अनय की थी फांसी
घटोत्कच पर बाण चले वह जो अर्जुन हित संचित था
कितने तुम हो कुटिल समर योद्धा अधर्म से वंचित था

जिस प्रकार सात्यकि नीच की भूरिश्रवा अपंगु पर
चली नीच तलवार तुम्हारी कुटिल मन्त्रणा को लेकर
दिन में अन्धकार फैला कर सिन्धुराज की ले ली जान
अधम ! नीच ! सम्भाल कभी तो अपने को ले तू पहचान

सह न सका पीड़ा, हाथों का हटता गया सहारा था
धराशायी पुनि हुआ, जगत उसके आगे अंधियारा था
गांधारी सुत ! वृथा दोष मेरे सर मढ़ना चाह रहे
अंतिम क्षण अवसाद, कहो क्या बदला लेना चाह रहे

कहा कृष्ण ने भीष्म द्रोण पुनि कर्ण मरे तेरे कारण
कितना कष्ट दिया पांडव को, चीर हरण तेरे कारण
धर्म क्षेत्र में मरे स्वर्ग तुमको मिलना है ध्यान करो
मन से कुटिल भावनाओं को हटा, प्रभु का ध्यान धरो

कृष्ण ! स्वर्ग का द्वार खुला है, मैं जाता हूं, रहो यहां
बन्धु-बान्धवों की पीड़ामें व्यथित कष्ट में सहो यहां
आजीवन निज चरण नमित मुकुटों पर, धरती आया हूं
वेद पढ़ा, है दान दिया, आनन्द वरस नहलाया हूं

मधुर वाद्य-स्वर गीत नृत्य-स्वर गंधर्वों का गुंजन उठा
नभपरिज्वलित, विभा विकसित, धरतीसे पौरुषपूर्ण उठा
वासुदेव, पांडव स्तम्भित, भाग्यवान था दुर्योधन
शौर्य वीर्य का परम उपासक, धन्य तुम्हारा यौवन धन

पराक्रमी था, धर्मयुद्ध में नहीं पराजित हो पाता
कहा कृष्ण ने सुनो पार्थ ! क्या कोई इसे डिगा पाता
छल प्रपंच का एक सहारा, नीति धर्म से होकर दूर
हम पछाड़ पाए शत्रु को, हुआ गर्व तब उसका चूर

मणि-मुक्ता

सुना अश्वत्थामा ने, त्यागा धर्म नियम पाँडव जन ने
युद्ध नीति परित्याग प्रताड़ित किया सुयोधन, राक्षस ने
अनय हुआ था, पिता समर में जब ध्यानस्थ अवस्था में
आहत हुए पतित पांडव गर्वित दुर्नीति व्यवस्था में
दुर्योधन के निकट पहुंच कर, आँखों से अश्रुकण ढाल
कठिन प्रतिज्ञा ली, दुर्योधन की ग्रीवा में बाहे डाल
सखे ! निशा अवसान न होगा, सूर्योदय का भान नहीं
जब तक दुष्ट पांडवों की ले लूँ मैं निश्चित जान नहीं
मरनासन्न सुयोधन सुनता, हर्षित गद गद होता है
नायक दल का हुआ अश्वत्थामा, प्रतिघोषित होता है
सारी शुभ मंगलकारी आकाक्षाएं हैं तेरे साथ
सुयश प्राप्त तुम करो वीर, शत्रु विनाश है तेरे हाथ
कृपा, कृतवर्मा संग ठहरा वट छाया, थी काली रात
विचलित हृदय अश्वत्थामा, बन जाए कैसे बिगड़ी बात
कौवों का दल बैठ डाल पर करता था कैसा विश्राम
उल्लू ने आ चोट मार कर, भेज दिया उसको सुरधाम
जगो कृपा, प्रियवर, यह सोने चैन प्रहर की रात नहीं
सोए पांडव का रक्षक कोई जग में इस काल नहीं
उल्लू मुझे प्रशिक्षण देता, दुष्ट पांडवों का कर नाश
उस पर दया वृथा, अनीति से जो करता है सत्यानाश

सुनो अश्वत्थामा, क्षत्रित्व हमारा है परिधान सदा
सुयश प्राप्त कर दुर्योधन लेने वाला है शीघ्र बिदा
क्यों निशीथ में सोए जन पर हाथ उठाना हम सीखें
गांधारी से, नृपति, विदुर से क्यों न मंत्रणा हम ले लें

जो कुछ सम्भव था करने में हम सब पीछे नहीं रहे
दुर्योधन उपरान्त युद्ध में कौन कहो जो अडिग रहे
जैसा हो आदेश नृपति का हम सुकर्मरत होंगे ही
व्यर्थ धर्म परित्याग पतित जन जैसा हम भी करें कभी

तुम मुझको उपदेश सुनाते कृपाचार्य पर कर आक्रोश
लगा बोलने द्रोण-पुत्र था मतवाला पूरा बेहोश
कृपा ! पिता की निर्मम हत्या, दुर्योधन पर क्रूर प्रहार
बाकी कौन कुकर्म बचा क्या अन्य अमानुषिक अत्याचार

बिना लिए प्रतिशोध पिता का, दुर्योधन की हत्या का
जीवन यह बेकार व्यर्थ उपदेश निपंगु निर्बल का
जो कुछ सोच रहा करने को, बचा वही सत्कर्म अहो
मेरा दृढ़ संकल्प सफलता की अभिलाषा मात्र कहो

इस निशीथ की घोर कालिमा में बस शिविर पहुंचना है
जहाँ सोए पांडव हत्यारे, शीघ्र अन्त कर देना है
धृतद्युम्न निद्रा निमग्न धरती को त्याग आज देगा
जैसा जिसने किया उचित फल उसे आज नियति देगा

सुनो द्रोण के वीर पुत्र तेरा सम्मान धरा कैसा ?
रे चरित्र में लगे दाग, फिर सफल हुआ जीवन कैसा ?
कितना उज्ज्वल कलुष-विहीन तुम्हारा जीवन जगती पर
क्या तुम सोच रहे नायक, कैसे जी लोगे धरती पर

कृपाचार्य कह रहे अश्रुओं की धारा बह जाती है
क्या मनुष्य कब कर बैठे, नहीं बात समझ में आती है
द्रोण पुत्र पर सुनने को तैयार नहीं अकुलाता था
बता कृपा निःशस्त्र पिता की हत्या कैसे भाता था

"कहाँ धर्म" की खोज वृथा, क्या नहीं कर्ण के साथ हुआ
भजो मंत्र तुम सुबह शाम, मत देख अनीति अधर्म हुआ
कीट, मकोड़े, अधम, पातकी सब होना स्वीकार करुंगा
नहीं हाथ पर हाथ धरे प्रतिपल रोता तन त्याग करुँगा

मिले जन्म चांडाल-वंश, हो नरक भाग्य में रहने दो
रोक नहीं पर कृपा धर्म की झूठी गाथा रहने दो
अब विलम्ब क्या देख सामने रथ मेरा तैयार प्रिय
व्यथा पूर्ण मानस में टिकती कहाँ धर्म की बात प्रिय

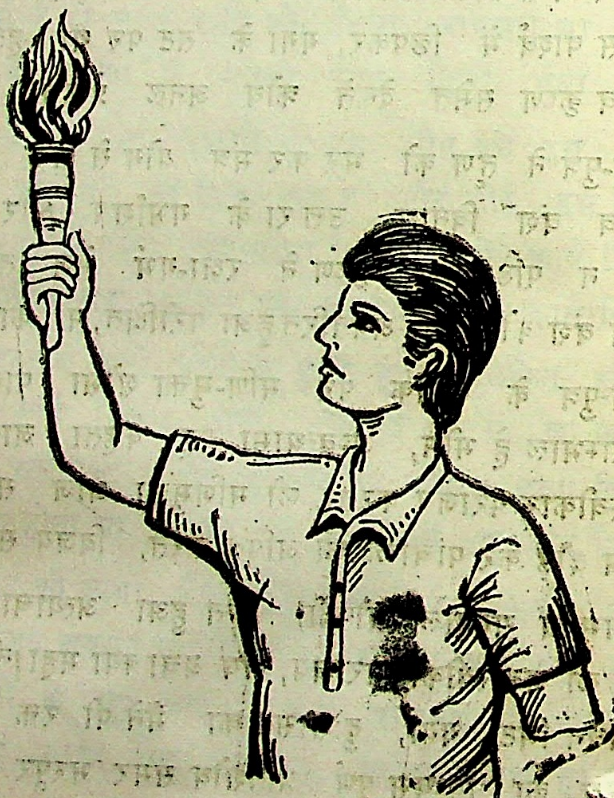
रुको, बढ़ो मत आगे, बोले कृपा कृतवर्मा दोनों
जो करना हो उसमें होंगे साथ तुम्हारे हम दोनों
धर्म नष्ट हो, मिटे लोक परलोक अश्वत्थामा फिर भी
कहाँ अकेला रहूं, किया अब तक दल एक बना कर ही

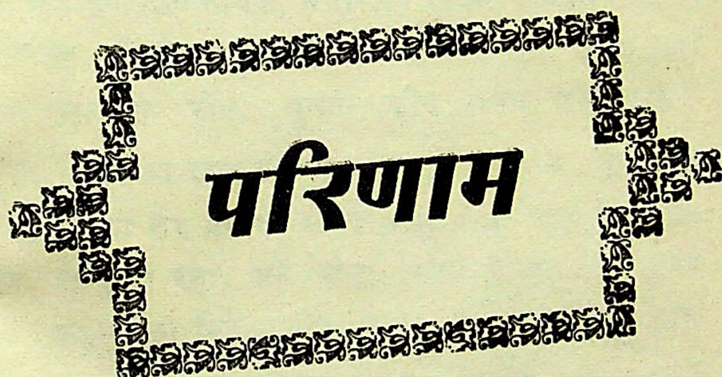
रथ का चक्का चला, अश्वत्थामा शत्रु के शिविर गया
सोए धृष्टद्युम्न की छाती पर कूदा, हा हन्त हुआ
सम्भल सके इसके पहले दी लात मार ऐसी तगड़ी
समर क्षेत्र सम्मानित योद्धा की काया बेजान पड़ी
एक एक कर पाँचाली के पांचो पुत्र शहीद हुए
सोए शिविर निहत्थे कोमल शिशु कटुता आखेट हुए
तीनों नायक एक एक कर हत्या करते जाते थे
निद्रित वेसुध पड़े निहत्थे जगत छोड़ चल जाते थे
क्षात्र धर्म अवतरित बांकुड़े अंधकार में मचल रहे
हुए पांच पांडव समाप्त, यह ज्ञान हृदय अति मुदित हुए
चलते समय धधकती ज्वाला फेंक शिविर को जला दिया
लगे भागने वीर बांकुड़े, किसने यह दुष्कर्म किया ?
सुभट भागते इधर उधर, उनकी भी हत्या होती थी
द्रोण पुत्र के हाथ तेज शमसीर चमकती इस क्षण थी
महा अनय इस धर्म युद्ध में प्रतिपल बढ़ता जाता था
समर नीति का नहीं, लाभ हानि का समझा जाता था
कहा अश्वत्थामा ने प्रमुदित चलो पांडवों का विध्वंश
तप्त धारा पर अत्याचारी का मिट गया अभागा वंश
दौड़ चलें हम दुर्योधन को शुभ सम्वाद सुनाना है
हर्षित मनसे वीर सुयोधन को परलोक पिठाना है

पड़ा हुआ साम्राज्य, धरा पर पड़ा सुयोधन घाव भरा
प्रतिपल हृदय प्रताड़ित द्विगनित गति से,हृदय न चैन जरा
प्रिय सुयोधन ! जीवन का अरमान पूर्ण हो गया सुनो
एक एक कर पांडव जन का नाश हुआ, सम्वाद सुनो
मृत्यु-शय्या पर पड़ा, नेत्र अपलक के खुले निमेष अभी
सुना पाँडवों का विनाश, बच रहा न वंश, विनाश सभी
शत्रु-सैन्य का नाश, रात्रि को किया आक्रमण था मैंने
कहा अश्वत्थामा ने, सबको साफ किया भैया मैंने
सात वंश न रहा पांडवों का हम तीन बचे इस ओर
कृपा, कृतवर्मा मेरे बिन अब न और कोई इस ओर
धीमे स्वर में कहा अश्वत्थामा ! तुमने जो कार्य किया
कर्ण, भीष्म तक नहीं कर सके, धन्य वीर शुभ कार्य किया
शुभ सम्वाद मिला, भावों से हुआ हृदय पुलकित भ्राता
कहता स्वर्ग सिधार गया, सन्नाटा क्षण में छा जाता
अंतिम समय मुदित मन दुर्योधन का घायल हृदय खिला
जितना होना था विनाश, हो गया, उसे सुरधाम मिला
धर्मराज की व्यथा, सैन्य का कैसा निर्मम अन्त हुआ
पूर्ण विजय अवसर पर नियति का अभिनय अति क्रूर हुआ
पांचाली के पुत्र, कर्ण के क्रूर आक्रमण के उपरान्त
बचे रहे, उनका ऐसा अवसान, भयंकर क्षण हा हन्त

टिड्डी दल सा महाप्रतापी वीरों का अवसान हुआ
महा सिन्धु तरने वाली नौका का ताल विनाश हुआ
नयनों में भर नीर द्रौपदी कहती सुनो धर्म अवतार
पापी मिटे अश्वत्थामा, हो भस्म अंग हो क्षार क्षार
चले खोजने पांडव, पापी हत्यारा जाये जिस ओर
जीवन अन्त निकट उसका, भागे, छिपता जाय जिस ओर
व्यास पार्श्व में छिपकर, गंगा के तट पर था हत्यारा
पांडव कृष्ण समेत देखते क्रोध अनल प्रेरित, हारा
द्रोण-पुत्र ने तृण को भर कर मंत्र योग से फेंक दिया
पांडव वंश विनाश, उत्तरा के गर्भाशय ओर चला
मिटे न पांडव-वंश, कृष्ण ने रक्षा-गर्भ भेज तत्काल
[illegible] वंश को लिया, अवतरित हुआ परीक्षित, मां का लाल
द्रोण-पुत्र के मस्तक पर मणि-मुक्ता शोभा पाता था
ले सम्भाल हे भीम, अश्वत्थामा यह कहता जाता था
मैं स्वीकार पराजय करता, लो मणिमुक्ता आज सम्भाल
भीम दौड़ कर पांचाली को अर्पित करते, विजय सम्भाल
मणिमुक्ता सम्भाल द्रौपदी, अन्त हुआ अत्याचारी का
कर ली जब स्वीकार पराजय, शेष बचा क्या महा नीच का
दुर्योधन मिट गया, दुःशासन का मैंने पी रक्त लिया
कौरव का विध्वंस पूर्ण प्रतिशोध समर भरपूर लिया

धर्मराज को पांचाली ने मणिमुक्ता अर्पित कर दी
मुकुट बीच शोभित तेरे, इतनी इंगित इसने कर दी
समर शान्त हो रहा शून्य सन्नाटा छाया रहता था
प्रतिशोधों का उत्पीड़ण दिल में लहराता रहता था




परिणाम

आलिंगन

समर शेष हो गया धरा पर रुदन, क्रन्दन गूँज रहा
आबाल वृद्ध नरनारी का अवसाद अनवरत फैल रहा
आज हस्तिनापुर की गाथा, व्यथा वियोग कष्ट परिपूर्ण
निर्जन धरती की उँची अट्टालिकाओं का गौरव चूर्ण

महिलाओं का क्रन्दन स्वर, आँखों से झरता नीर तरल
संग चले कुरु दल नायक, नेत्रों का काम न आज, सरल
धृतराष्ट्र कुरुक्षेत्र पहुँच कर समझ गये क्या हुआ यहाँ
जोर जोर से रोए, सुनता कौन मनाए कौन यहाँ ?

नृपति ! असंख्य शासकों का अवसान समर में तेरे हित
अन्त्येष्टि का कर प्रबन्ध, संजय कहते, यह सब के हित
कौन तुम्हारा रहा, अरे कैसा नाता मृतकों के साथ
सब कुटुम्बीपन मिटे छोड़ जाए तनधारी तेरा हाथ

कौन आज हैं पुत्र तुम्हारा, किसके कारण यह संताप
रे शरीर के साथ अन्त नाता का, वृथा करुण आलाप
महाशून्य से नश्वर तन धारण करने आता है जीव
भौतिक तन उपरान्त कभी देखा किसने फिर कैसा जीव

नीतिपूर्ण उपदेश विदुर का, सुनकर नृपति कांप रहे
रे धरती पर कैसी थी ज्वाला उसको वे भांप रहे
धधक रही फुफ़कार हृदय में, अपना सब का छोड़ गया
धरती पर आतंक व्यथा, चिंता करुणा बस छोड़ गया

व्यास देव आ पड़े, पुत्र क्या नहीं जानते तू इतना
जीवन जिसे मिला उसका आवश्यक है इक दिन मरना
स्वयं विष्णु ने कहा मुझे था जग का भार हटाने को
समय समय पर समर हुआ करता संताप मिटाने को
रोक सकेगा कौन समर को, निश्चित समय अवश्यमभावी
धर्मराज है आज पुत्र तेरा, न भूलना संशय कारी
धर्मराज ने नारी क्रन्दन का अति करुण दृश्य देखा
धृतराष्ट्र के चरणों में नतमस्तक, चिंता की रेखा
आलिंगन कर लिया नृपति ने बाहों में भरपूर मगर
प्यार न था दिल में, आलोड़ित किया, अति संकुल मन डर
भीमसेन भी आया है, जब कहा गया नृपति बोले
आओ पुत्र तुम्हारा आलिंगन कर, जन्म सफल कर लें
वाशुदेव संदेह दृष्टि से रहे देखते, बढ़ा दिया
लोहे का निर्मित भीम, बांहों में कस कर बांध लिया
सौ पुत्रों का नाश निशाचर तू ने किया अधर्मी बोल
पूर्ण वेग से कर के चकनाचूर न पाया किंचित डोल
धृतराष्ट्र ने कहा क्रोध ने धोखा दिया मुझे इस बार
प्रिय भीम की मैंने हत्या कर दी, ग्लानि अपरंपार
वाशुदेव अंतर्यामी विहंसे था, मेरा यह अनुमान
अत: लौह का भीम बढ़ाया, भीम जीवित है प्रतिभावान

चिरंजीवि हो भीम ! नृपति ने बारम्बार दुलार किया
अनुमति ले पांडव का दल गाँधारी हित प्रस्थान किया
व्यास देव ने कहा, महारानी न पांडवों पर कर क्रोध
तुमने ही था कहा, धर्म की विजय, वृथा सारा प्रतिशोध

बीत गया जो प्रहर न चिन्ता उस पर शोभा देती है
सुनती रही प्रवीण कुशल गांधारी सहमति देती है
पांडव जन की विजय न मेरी चिंता का कारण भगवान
सौ पुत्रों की आज निपूती माँ की बुद्धि का धर ध्यान

परम सत्य है पांडव मेरे पुत्र, हृदय पर भारी आज
दुःशासन, शकुनि ने जग में व्यथा शोक का लाया राज
पार्थ भीम निष्कलुष युद्ध में धर्म नीति से काम लिया
पर अनीति से दुर्योधन के जंघे पर था वार किया

वाशुदेव के सम्मुख बोलो इतना अनय धरा पर हो
क्षमा कहो कैसे कर दूँ मैं माँ हूँ, भगवन तू कह दो
भीम सामने आकर बोले माँ रक्षार्थ किया मैंने
था अजेय, अतएव युक्ति से किया प्रहार तीव्र मैंने

धोखा देकर द्यूत-दाव में धर्मराज को डूबो दिया
पांचाली के साथ अनीति, अधम, क्रूर व्यवहार किया
भरी सभा में भी हम ले सकते थे उसकी जान वहाँ
धर्मराज के आदेशों के कारण ही टल गया वहाँ

संयमपूर्वक धीरज धर कर बन बन रहे घूमते हम
क्षमा करो माँ हैं अधर्म के रक्षक नहीं बिदारक हम
सुनो भीम गोदी का मेरा एक लाल भी होता आज
क्षमा दान कर तेरे सर पर मैं देती निज हाथों ताज

कहाँ युधिष्ठिर बोल, भरे स्वर से गांधारी विलख पड़ी
नत मस्तक है धर्मराज, नारी की करुणा उमड़ पड़ी
सुनो महारानी, अति क्रूर, अधम, हत्यारा चरणों पर
लोट रहा है दे अभिशाप जला दे तपते शोलों पर

नहीं राज्य की हृदय रही लिप्सा होने दे ध्वस्त इसे
सिसक रहा था धर्मराज, गांधारी सुनती रही इसे
दीर्घ स्वांस गांधारी ने ली देख तुझे लूँ जल जायेगा
खुले नयन का पटल धरा पर जिन्दे जी तू सो जायेगा

धर्मराज का एक अंगुठा काला नमित दृष्टि का रथ
गांधारी की दृष्टि अनल फैला सकती थी प्रलयंकर
सारा क्रोध सम्भाल पांडवों को भेजा कुन्ती के पास
देख द्रौपदी को वोली गांधारी, क्या है तेरी आश

अपनी संतानों को खोकर जीना तेरा क्या होगा
दे सकता परितोष कौन, तुमको मुझको, न कभी होगा
मेरा ही अपराध, वंश का नाश हुआ क्या बचता है
जल जाए सुन्दर भविष्य, क्या वर्त्तमान में रहता है

राज्याभिषेक

समर काम आए सुभटों को, तिल जल अर्पित किया गया
पांडव जन ने गंगा तट पर शिविर बना जलवास किया
धर्मराज, अर्जुन का बल विक्रम, माधव की अनुकम्पा
धर्म मार्ग तेरा सब मिल कर सफल समर परिणाम हुआ

बता तुझे साम्राज्य मिला, क्या मन आनन्दित हुआ सखे
नारद ने आ प्रश्न एक पूछा ठिठके से रहे खड़े
भगवन राज मिला अपने सब छोड़ गये क्या बाकी है ?
पूर्ण पराजय मिली, लालसा लिप्सा क्या अब बाकी है

बन्धु शत्रु सम दीख पड़ा, कैसा दुर्भाग्य गिरा सर पर
कर्ण सरीखे भाई का वध किया, अधर्म खड़ा डट कर
अटल रहा पर कर्ण, निभाया बचन दिया जो कुन्ती को
पूरा समर समय पाकर भी, मारा कभी न बन्धु को

अधम, अकिंचन, भाई का वध करके घोर अनर्थ किया
द्रव्य सम्पदा की अभिलाषा ने प्रेरित इस ओर किया
सभा भवन में देखा मैंने चरण कर्ण का मातृ समान
पौरुष, साहस तेज ओज वीरत्वाभूषित श्रेष्ट महान

दृढ़ स्वांस ले कहा युधिष्टिर ने गुरुदेव व्यथा होती है
जो कुछ मिला नगण्य,नाश सब हुआ,धरा कातर रोती है
नारद कहते पूर्ण कथा अभिशाप कर्ण को मिला कभी
उसके ही अनुकूल समर की घटना घटी असह्य सभी

द्रोण निकट जा कभी कर्ण ने कहा धनुर्विद्या सिखला
ब्राह्मण नहीं, न शुद्ध क्षात्र, होगा अधर्म गुरु था बोला
हे ब्राह्मास्त्र ज्ञान अभिलाषी, मेरी यह लाचारी है
नीति, धर्म प्रतिकूल आचरण, निंद्य, त्याज्य भयकारी है
परशुराम के निकट कर्ण ने जाकर कहा, विप्र परिवार
जन्म लिया, भगवान धनुर्विद्या का है मन में अरमान
अस्त्र ज्ञान का तीव्र प्रशिक्षण, कर्ण धनुर्धारी बलवान
आश्रम निकट गुरु की गौ की धनु प्रहार से निकली जान
करता था अभ्यास निरन्तर कर्ण कुकर्म हुआ अनजान
मिला उसे अभिशाप समर में गड़ जायगा चक्का जान
रथ का पहिया निकल न पाएगा, प्राणान्त अवश्यमभावी
गो-हत्या अपराध निकल पाता फिर कैसे मेधावी
मन्द मन्द मधु बयार शिष्य के जंघे पर निज मस्तक डाल
परशुराम सो गया समुन्नत, परम तेजमय सुन्दर भाल
कीड़े का कटु दंश, जांघ से बहने लगा रुधिर, लेकिन
नींद न जाए टूट, रहा सहसा अविचल बालक लेकिन
बहता रक्त चला, स्पर्श हुआ गुरु के तन को अविरल
निद्रा भंग हुई देखा आश्चर्यचकित गुरु अति विह्वल
पापी तूने झूठ बोल कर शिक्षा पायी, पाप किया
क्षात्र रक्त बह रहा, छिपा कर रक्खा घोर अनर्थ किया

ब्राह्मण बालक सहन कर सके कष्ट असह्य न हो सकता
जो कुछ सीखा ठीक समय पर काम न तेरे आ सकता
ब्राह्मण का अभिशाप, क्षत्रिय बालक के सर मढ़ा गया
भरत भूमि की जटिल संस्कृति में कंटक मणि गढ़ा गया
ब्राह्मण वेष किए धारण भगवान इन्द्र आ प्रकट हुए
कवच और कुंडल दानी से माँग मुदित मन चले गये
शक्ति क्षीण हो गयी, दान देना न किया पर अस्वीकार
धन्य वीर हे दानवीर, हे कर्ण दान के सुचि अवतार
वचन दिया कुन्ती को तेरे एक पुत्र को छोड़ कभी
अन्य पुत्र की हत्या करने का कुकर्म नहीं करुँ कभी
जो कुछ हुआ समय के फेरे में अभिशाप प्रवल कारण
धर्मराज अपराध न तेरा बता दिया सब किस कारण
धर्मराज सन्तुष्ट नहीं, अपराध भयंकर किया गया
माँ कुन्ती कहती, दुर्योधन संग गया दुष्कर्म किया
मना किया पर था कितना उदंड, सुनना स्वीकार नहीं
अपना अन्त बुलाया जिसने उसकी चिंता श्लाध्य नहीं
माँ, तुमने धोखे में रक्खा, बता न पायी जन्म कथा
अपना था भाई अबतक अनजान रहा, हा हन्त, व्यथा
घृणित, क्रूर अपराध हुआ, माँ तेरे कारण निश्चय जान
गुप्त मर्म को छिपा न पायेगी, नारी यह निश्चित मान

धर्मराज का क्रोध, नारी जाति को देता है अभिशाप
विनय शील उत्तम चरित्र भी, बन जाता जलता संताप
मन: व्यथा मानव के मन की ग्रंथि को देता है तोड़
कौन जानता किस क्षण मन ले लेता एक भयंकर मोड़

बढ़ता गया विषाद हृदय का धर्मराज चिंतित दिन रात
स्वजनों का वियोग उत्पीड़क, मन: व्यथा, बढ़ता संताप
जन परिजन परलोक गये, साम्राज्य बचा क्या जो भोगूँ
पश्चाताप करुं बन जाकर, कटे पाप पुनि तन तज दूँ

बन्धु जन! साम्राज्य सम्भालो प्रबल वन गमनकी अभिलाषा
पांडवजन अति विकल,मिट रही स्वर्णिम किरण उदयकी आशा
भीमसेन ने कहा शास्त्र का मंथन अब तक व्यर्थ किया
उचित कर्म मुख मोड़, पलायन की छाया सर टेक दिया

क्षात्र धर्म सुचि धर्म हमारा, वृथा बनें हम सन्यासी
जंगल में संताप सहा अब तक, सदैव कानन वासी
छोड़ वन गमन की चर्चा, जन का कल्याण करो भ्राता
जन मानस संतप्त, बनों असहायों के जीवन दाता

नकुल और सहदेव बिलखते, पिता बन्धु अभिभावक तुम
छोड़ ध्यान हम लोगों का, क्या पा लोगे जंगल में तुम
पाँचाली आँखों में पानी लिए बोलती आर्य सुनो
दुर्योधन था अत्याचारी, अन्त हुआ कल्याण कहो

दण्ड मिले अपराधी को यह न्याय पुरातन भूल रहे
धरती रही पुकार, करो सेवा, जननायक भूल रहे
घर आंगन को छोड़ क्षत्रिय परिशानी से भाग चले
क्या भावी संतान कहेगी, धर्म कार्य मुंह मोड़ चले
कहा व्यास ने वत्स ! धरा पर धर्म नीति का शासन हो
तभी मनुष्य सम्भल कर चलता, जब सुदृढ़ संचालन हो
देख हस्तिनापुर, आँखों में है अवसाद भरा दिन रात
चाह रही है वसुन्धरा, जनहितकारी शासक, प्रताप
हुआ राज्य अभिषेक हस्तिनापुर में धर्मराज सर क्षत्र
आर्त जनों की अभिलाषा का उदित गगण सौभाग्य नक्षत्र
कार्यभार संभाल सके पहले इससे दर्शन उनका
समुचित बाण बिंधे अंगों में, निधन निकट आता जिनका
महा भीष्म से अभिवादन कर सादर मिले युधिष्ठिर थे
अंतिम सांस प्रतीक्षा में, श्री भीष्म समर तल स्थिर थे
पुण्य मन्त्र उपदेश दिया, यह शान्ति पर्व विख्यात धरा
जन सम्वाद समाप्त हुआ, तज देह प्राण तत्काल उड़ा
गंगा तट पर पूर्व रीति अनुसार पिंड देना अनिवार्य
चले युधिष्ठिर पुण्य कार्य हित छोड़ दिया जग का सब कार्य
तर्पण किया, जीव लाभान्वित हुआ, स्वर्ग तक फैला यश
सुरसरि तट पर धर्मराज का, मन विचलित सूना सब रस

धर्मराज गिर गये धरा पर, भीम सहारा देते हैं
धृतराष्ट्र आए अकुलाए, स्नेह मन्त्रणा देते हैं
वत्स ! तुम्हें शोभा न आज देता जीवन साहस दो त्याग
धर्म नीति अनुसार करो शासन जन मनका जागे भाग
चिन्ता मेरे साथ, साथ मेरे गांधारी रो लेगी
तुमने विजय समर में पायी, श्री स्मृध्रि घर आयेगी
विदुर सरीखे की मैंने मन्त्रणा सुनी, अनसुनी किया
सौ पुत्रों का जनक पाप के कारण निसंतान हुआ
कौन बचा बोलो, तू ही संतान हमारी बांहों में
करो त्याग मन व्यथा, समय मत बिता व्यर्थ की आहों में
सफल रहे जीवन, पूर्वज का यश फैले सौभाग्य खिले
बीत गया, जा भूल उसे, है कौन गया क्षण जिसे मिले



द्वेष

भीष्म श्राद्ध सम्पन्न रक्त रंजित साम्राज्य बिलखता है
व्यास सुनाते धर्मकथा, नीति रस सरस बरसता है
वृहस्पति देवों के पूज्य पुरोहित ज्ञान-पूँज साधक
सामवर्त्त भ्राता छोटा गुन ज्ञान विनय जन मन नायक

अनुज विद्वता बुद्धि तीक्षणता वृहस्पति को देती क्लेश
कितना दुषित मनुज का मानस, पलता कैसे अविरल द्वेष
मिला प्रतारण दिन प्रति दिन पा, वेष विलक्षण भाग गया
सामवर्त्त जैसे जैसे दिन, बिता रहा, सब छोड़ गया

इक्ष्वाकु सम्राट मरुत धन धान्य पूर्ण समृद्धशाली
उच्च हिमालय की चोटी, निधि स्वर्ण मणि मुक्ता पाली
यज्ञ चाहता करे, नृपति का धर्म, वृहस्पति से पूछा
चलें शीघ्र गुरुदेव यज्ञ हित उत्तर मिला निरस छूछा

सामवर्त्त से आग्रह करता नृपति स्वीकृति मिल जाती है
यज्ञ वेदी निर्माण हो रहा, सुकृति फैलती जाती है
एवमस्तु जब कहा पुरोहित ने, राजा अति मग्न हुए
अति उत्साह बन्धु बान्धव शुभ यज्ञ कार्य संलग्न हुए

वृहस्पति को पता चला, अति क्रोधित होकर काँप उठा
मरुत यज्ञ का बने पुरोहित, परम शत्रु ललकार उठा
द्वेष बन्धु के प्रति निरन्तर बढ़ता गया अमंगलकारी
क्षीण काय हो गया इन्द्र चिंतित अति दीन, क्लेष भारी

कहा इन्द्र ने, क्या न नींद आती, सेवा मिल रही नहीं
रक्त हीन यह गात, कान्ति का मुखड़े पर आभास नहीं
क्या न मिला सम्मान पुरोहित, कर्मचारी क्या नहीं विनम्र
नभ में चन्द्र विहंसता था, है पूर्ण कालिमा सींचित अभ्र

वृहस्पति ने कहा, देव मैं उचित समय सोने जाता
सबकी सेवा मिलती नित दिन सब कुछ सुलभ सहज पाता
फिर क्यों दुर्बल देव, इन्द्र ने बार बार पूछा उनसे
गला रुंधता गया गुरु का, ब्रार बार सम्भलें फिर से

साहस बांध कहा जन नायक देवों के सम्राट सुनो
सामवर्त्त कर रहा यज्ञ का आयोजन, उत्पात सुनो
मरुत यज्ञ करता बनता है उसका दुष्ट पुरोहित यह
भला बताओ सम्भव है, मेरे द्वारा सह लेना यह

क्या बिगड़ा आश्चर्य चकित हो देवराज बोले तनकर
अरे इन्द्र क्या सह लेते तुम औरों की प्रगति हँसकर ?
क्या न विदीर्ण हृदय होता है, अनभल सुन ऐसा सम्वाद
सामवर्त्त का करो नाश, हो यज्ञ भंग दिल में आह्लाद

पाते ही आदेश इन्द्र का अग्निदेव पहुँचे तत्काल
धरा कांपने लगी, झुरमुटों से अग्नि की ज्वाला लाल
नृपति उपस्थित हुए देव ! क्या है आदेश धन्य यह यज्ञ
मूर्त्त रूप आ हुए उपस्थित, परम धाम त्रिधा मर्मज्ञ

अग्निदेव ने कहा, नृपति इस सामवर्त्त का त्याग करो
वृहस्पति को महायज्ञ में गुरु स्वरूप स्वीकार करो
सामवर्त्त ने सुना, ब्रह्मचारी का क्रोध उबल आया
अग्निदेव दाहक दुनिया के, क्यों जलने सम्मुख आया ?
क्रोध देख कर अग्निदेव हो गये प्रकंपित लौट चले
इन्द्रदेव से कहा कार्य सिद्धि न हुई, मुख मोड़ चले
ब्रह्मचर्य का तेज अग्नि को जला सके आश्चर्य नहीं
अग्निदेव ने स्वयं कहा, अत्युक्ति का लवलेश नहीं
कहा इन्द्र ने देव ! पूज्य गंधर्व सम्भालो तू पतवार
मान न पाए मरुत्त कहो उस पर होना है भीषण वार
वेग पूर्ण गति से गंधर्व पहुंच सम्वाद सुनाता है
नृपति मरुत्त स्वीकार करो, सर महा नाश मंडराता है
इन्द्र क्रुद्ध हो जाएं जिससे उसका धरती पर जीना
कहो भला सम्भव हो सकता, महाकाल से लड़ लेना
नृपति अडिग था, उसे नहीं स्वीकार अमंगल होने दो
गर्जन तर्जन हुआ शीघ्र आरम्भ भस्म कर देने दो
भय आतंकित मरुत्त देख कर सामवर्त्त आगे बढ़ता
आया है जब इन्द्र शाप से देख अन्त उसका होता
तेज अलौकित प्रलयंकारी रूप पुरोहित का जब देखा
देव लोक सामन्त, हुआ विचलित, चिन्ता की भय रेखा

नहीं करु संघर्ष मैत्री का हाथ बढ़ाता इन्द्र महान
यज्ञवेदी का अर्घ्य प्राप्त कर धन्य हुआ है देव महान
वृहस्पति की कलुष भावना हुई पराजित धरती पर
ब्रह्मचर्य का तेज पुञ्ज फैला आल्हादित जगती पर
देवों को जो पाठ पढ़ाता द्वेष भाव में डूब गया
जन साधारण के जीवन में दूषित भाव है फैल गया
वाह्य रूप सुन्दर आकर्षक, विमल सदैव दीख पड़ता
अन्तःकरण मलीन, दोष-मज्जित, कलुषित पापी होता



सुधाकलश

महा समर पूर्णाहुति के उपरान्त द्वारका धाम चले
बाल सखा परिलक्षित मग में, रथ से आकर गले मिले
अभिवादन उपरान्त मित्र ने पूछा कुशल पांडवों का
कौरव दल का कुशल बताओ, जन परिजन सेवक जन का

प्रिय मित्र ! तुम नही जानते महा समर में लोग मरे
कौरव दल का अन्त हुआ, संकट में कितने लोग पड़े
कितना है आश्चर्य आज तक यह सम्वाद न सुना कभी ?
कितने भोले मित्र, जगत जा पहुँचा कैसे कहाँ अभी ?

केशव ! आँखें लाल किए उत्तंग बोलते, महा नाश
रे हुआ तुम्हारे सम्मुख, तू भी रोक न पाया सत्यानाश
तू ने अपना धर्म निभाया नहीं भान यह होता है
अभी जलाता तुझे शाप से, हृदय क्रोध अति होता है

विहंसे माधव सखा ! क्रोध अग्नि को अपनी शान्त करो
"विश्व रूप" देखो मेरा मन से संशय परित्याग करो
धर विभिन्न प्रति रूप सखे मैं ही अवतार लिया करता
देव यक्ष, दानव, मानव सब विधि जग में आया करता

जब जैसा अवतार लिया, तब तदनुकूल आचरण किया
त्याग पुंज ब्राह्मण अब तो समझे, तुम से क्या छिपा लिया
मनः स्थिति शान्त हुई जब सखा हुए सामान्य मना
मांगो कुछ वरदान कृष्ण मुखरित कोमल अति मुदित मना

माधव तेरा विश्व रुप जब देख लिया क्या चाह रही
रेत-भ्रमित ब्राह्मण के मन से लिप्सा शास्वत भाग रही
बहुत बार जब कहा कृष्ण ने, सखा मांगता यह वरदान
लगे प्यास तब जल दे देना, तृप्त रहें जिससे यह प्राण
अरे यही बस चाह, धन्य हे सखा, एवमस्तु बोले
देव योग से प्यासे होने पर ब्राह्मण जल ध्यान धरे
जल मिल जाता तृप्ति होती, मन में ध्यान हुआ जैसे
प्रकट हुआ चांडाल, वसन गंदे मैले जैसे तैसे
चमड़े के थैले में जल था, बांस पात्र में उसको डाल
आग्रह किया पिओ जल साधक, विप्र आँख में आँखें डाल
पंच कुक्करों का दल भों भों करता साथ मचलता था
घृणित हृदय परितप्त विप्र मन मचल मचल रह जाता था
जाओ, पीना नहीं तुम्हारा जल न पिपासा है जल की
माधव का धर ध्यान विप्र ने योग साधना की ठानी
तक्षण प्रकट हुए केशव, मुरली का स्वर गूँजा मीठा
धन्यवाद हे कृष्ण, मित्र हित यही स्वच्छ जल था मीठा
चला गया चांडाल, नेत्र से ओझल होते आया ध्यान
रे निषाद सामान्य नहीं, था वह अवश्य देवत्व समान
किया नहीं स्वीकार दिया जल, जीवन दर्शन भूल गया
समदर्शी बनने का अवसर आया तो मैं चूक गया

अहं भाव रह गया हृदय में, वेद पाठ बेकार रहा
रे निषाद को अपमानित कर मैंने अपना अहित किया
सुनो कृष्ण तू ने ली मेरी कठिन परीक्षा क्रूर सखे
ब्राह्मण पीता इस अछूत का जल, लगता यह प्रिय सखे
विहंसे कृपानिधान सखे ! था तेरे सम्मुख इन्द्र महान
मैंने भेज दिया था अमृत सहित, सफल जीवन कर पान
वसुधा पर अमृत का हो आवंटन, उसे न था स्वीकार
अंत समय सहमति दिखायी, आवंटक होगा चाँडाल
मैंने की स्वीकार शर्त्त, था मुझे पता तू ज्ञानी है
क्यों करता विश्वास हृदय से ढोंगी है अभिमानी हैं
स्वयं इन्द्र ने कहा, सुधा देने मैं जाउँ बन चांडाल
देख कर घृणा न हो, जिह्वा पर दूँगा अमृत डाल
अवसर का उपयोग न कर पाए संयोग हुआ उलटा
कौन जानता था मौके पर छुड़ा जायगा यों पलटा
शर्मिन्दा हो गया सखा, माधव का सुखकर था वरदान
बना न पाया अपने को उस योग्य हो रहा ऐसा भान



महायज्ञ

मिला वृहद साम्राज्य, यज्ञ की तैयारी की जाती है
अश्वमेध शुभ यज्ञ, अतिथि संख्या बढ़ती जाती है
सफल सम्मुनत यज्ञ युधिष्ठिर का यश फैल रहा कैसा ?
सूर्योदय उपरान्त, रवि किरणों का प्रसरण हो जैसा
राजकुमारों अतिथियों के बीच लोटता नेवल आता
करता है उपहास भयंकर अट्ठहास करता जाता
अर्द्ध अंग था स्वर्णिम सम्बोधित कर कहता सुनो कुमार
सोच रहे तुम वृथा सफल यह यज्ञ हुआ, है गलत विचार
कुरुक्षेत्र में एक रहा करता था ब्राह्मण किसी समय
मक्के के सत्तू का उसने किया दान था किसी समय
जो कुछ अश्व द्रव्य का तुम लोगों ने दान किया इस बार
दीन विप्र की तुलना में वह सब नगण्य कर यह स्वीकार
सफल पुरोहित ने अपना अपमान समझ पूछा नेवल
जो कुछ बोल रहा बढ़ चढ़कर, है उद्दण्डता ही केवल
सकल याचकों को भरपूर मिला उपहार प्रसन्न हुए
वैदिक विधि-विधान से पूजन अर्चण यज्ञ महान हुए
चतुर्वर्ण उत्फुल्लित धरा पर रे सम्राट सुशोभित है
करता तू बकवास वृथा यह वृहत् कार्य सुनियोजित है
हँसा पुनः नेवल ब्राह्मण ! तू अहंकार में डूबा है
सुनो सुनाता कथा पुरानी हृदय भाव में डूबा है

यह अतीत की कथा, खेत से बीन लिया करता था अन्न
सपरिवार पोषित था इससे, स्वस्थ चित था हृदय प्रसन्न
एक बार अपराह्न काल भोजन कर होते थे संतुष्ट
नहीं मिला पर्याप्त अन्न उपवास किया फिर भी संतुष्ट
अन्न काम से अधिक न संग्रह करते उनका था सिद्धान्त
सौम्य दीखता था मुख मंडल हृदय भाव प्रेरित अति शांत
दैव योग से धरती का भूखंड अनावृष्टि कारण
उपज न दे पाया व्याकुल जनमन अकाल पीड़ा कारण
अन्न खेत से चुनने वाले ब्राह्मण की क्या हुई दशा
वर्णन करने में साहित्य शिरोमणि असफल रहे सदा
परिशानी उपरान्त मिला मक्का इक दिन सौभाग्य खुला
सत्तू पीस स्नेह से बैठे सब लोगों को बुला बुला
पूजा की विधि कर समाप्त चारो बैठे भोजन करने
अकस्मात आ गया अतिथि मांग पेट अपना भरने
बढ़ा दिया ब्राह्मण ने अपना अंश न उसका मन हिचका
ग्रहण किया सम्पूर्ण नहीं पूरित हो पाया मन उसका
ब्राह्मण पत्नी अपना अंश बढ़ा कर कहती अतिथि से
इसे करो स्वीकार, प्राप्ति हो देव तृप्ति तुमको इससे
देह, सजाने में जिसको संसार लगा रहता दिनरात
उस तन से हो उदासीन श्रुति सम्मति हित सहती संताप

ब्राह्मण भरे हृदय से कहता, स्नेहमयी तू सुखी है
इस अकाल के क्षण में कितनी सन्ध्या से तू भूखी है
पशुपक्षी अपनी पत्नी हित दाना नित्य जुटाता है
भला कहो क्या यह अतिथि सत्कार, समझ में आता है

विप्र पत्नी आंखों में भरकर श्रद्धा पूछती आर्य सुनो
धर्म शास्त्र अध्ययन करने वाले महान विद्वान सुनो
क्या न पति संग पत्नी को हर कदम साथ हो चलना है
भूखा रहे पति जिसका, नारी को भोजन करना है ?

रहा व्योम में सूर्य चमकता, विप्र पत्नी का अंश लिए
लगा मिटाने भूख अतिथि, हृदय तृप्ति अभिलाष लिए
मिट न सकी पर भूख, विप्र का युवक पुत्र था देख रहा
करो इसे स्वीकार, अंश अपना ले सम्मुख खड़ा रहा

ब्राह्मण विह्वल हृदय देखता क्षुधापीड़ित नवयुवक बदन
बेटे तेरा प्राण पड़ा संकट में कैसा पीड़क क्षण
तुम्हें न शोभा देती मेरे तात इसे तुम ग्रहण करो
कर भविष्य की चिन्ता जीवन यापन का अभियान करो

पूज्य पिता जी पुत्र पिता का अंश तुल्य ही होता है
क्या हो सकता भिन्न पिता से कभी न ऐसा होता है
ग्रहण करो हे याचक देव हमारा यह सौभाग्य हुआ
था आकर इस निर्धन का आतिथ्य स्वयं स्वीकार किया

कुल की पुत्र वधु लज्जा से लदी क्षीण काया बोली
प्रियतम तेरे संग अंश मेरा जायगा, यों बोली
पीला पड़ता गया तुम्हारा गात, देव कन्या सी शुद्ध
मिला तुम्हें परिवार दीन कितना बलिष्ट मानस प्रबुद्ध
कितना स्नेहिल हृदय विप्र का अंश सबों का करता दान
ग्रहण किया याचक नें मुखड़े पर आयी मीठी मुस्कान
अब तक म्लान अतिथि का मुख मंडल होता गया प्रदीप्त
वातावरण प्रकाशित प्रतिपल करुणा भाव भरा उद्दीप्त
स्वर्ग लोक से लगे देवता पुष्प वृष्टि करने आह्लाद
फैल गया नभ मंडल में, वेदोच्चारण श्रुति विदित नाद
खड़ा अतिथि लगा प्रवोधन करने, भूख प्रताड़ण से
धर्म त्याग कर जन अधर्म रत होता, पीड़ा कारण से
दुष्ट विचारों से भर जाता मन कुकर्म रत होता है
असंतुष्ट मनुष्य धैर्य खो देता, संकुल होता है
धन्य किन्तु हे महामनीषि तेरा हृदय विशाल महान
स्वर्ग लोक से उतर देवता बढ़ा रहे अपना सम्मान
धूमधाम से यज्ञ करेगा राजसूय या अन्य प्रकार
अश्वमेध आदि यज्ञों में रुचि रक्खेगा राजकुमार
किन्तु तुम्हारे महायज्ञ के सम्मुख सब फीका होगा
स्वयं तड़प कर अतिथि सेवा इस सीमा तक कब होगा ?

परम धाम हित चला विप्र पुष्पक विमान नभ से आया
सबन्धु बान्धव श्रेष्ठ मनीषि ने जीवन धन सफल किया
धरो ध्यान सामन्त जनों, ब्राह्मण का मस्तक था कितना
ऊँचा, विशाल,गौरवशाली, जननायक जगत श्रेष्ठ कितना

फटका गया समय पर सत्तू अंश धरा पर बिखरा था
अवसर पा स्पर्श किया, मस्तक स्वर्णिम बन आया था
लोट गया फिर धरती पर कुछ अंश हुआ स्पर्श तभी
एक ओर सोने का बनकर चमक उठा था शीघ्र तभी

सुनो कुमारो आधी मेरी देह बची पहले जैसी
महायज्ञ सुन दौड़ पड़ा लोटा, अभिलाषा थी वैसी
व्यर्थ गया, पर नहीं अधूरा तन सोने का हो पाया
करता यह अभिव्यक्त नेवला दृष्टि बीच से चला गया।



स्वर्गारोहण

अमित लालसा जमती, बढ़ती प्रतिपल मन बढ़ता जाता है
कभी ठेस लगती, अभिलषित कभी सपना भी मिलजाता है
विफल कभी फिर सफल कभी होकर मानव जीता रहता है
कहीं न वैभव निधि जिसे पा मनुज लालसा तज देता है

क्षात्र धर्म का प्रबल प्रदर्शन, रणस्थली पर शव की ढेर
विजय मिली पांडव को, चिन्ता-नद में गिरते लगी न देर
अर्जुन ने भी ठीक कहा था केशव ! सब को मार कहो
क्या पाने की अभिलाषा रण करुं वृथा संसार अहो ?

था कर्त्तव्य पुनीत, नहीं कायरता शोभा देती थी
इसी भावना से संचालित रण विभीषिका जागी थी
सब का अन्त हुआ, निष्कंटक राज मिला सर पर है ताज
पाँडव जन मन व्यथित अभी भी, आकर्षक रह गया न राज

धर्मराज को जन्मेजय वैशम्पायण का अभियन्त्रण
धृतराष्ट्र की स्वीकारोक्ति से शासन का अभियन्त्रण
सभी पांडवों ने मन में संकल्प लिया अनभल न कभी
करने पाऊंगा चाचा का, मानो अर्पित उन्हें सभी

सौ संतान विहीना गांधारी की सेवा भी दिनरात
कुन्ती देवी सदा हृदय से करती श्रद्धासिक्त मृदु बात
सब प्रकार ऐश्वर्य साधनों से धृतराष्ट्र घिरे रहते
कृपाचार्य साहचर्य निभाते, व्यास कथा कहते रहते

नीति धर्म आचार संहिता का पालन बस करते थे
फिर भी भीम कठोर वचन अभिव्यक्त कभी कर देते थे
"अपनी ही करनी का फल दुर्योधन आदि ने भोगा"
ऐसा वचन कठोर सिर्फ उसके मुँह से निकला होगा
गांधारी या धृतराष्ट्र के कानों में यह स्वर आता
महाप्रलय भूडोल धरा पर अनायास ही आ जाता
गांधारी इस दुःसह स्थिति में कुन्ती से मिल लेती
धर्म सहिष्णु भावों की प्रतिमा नीचे छाया पाती
भरे हृदय को कौन सान्त्वना दे पाया है धरती पर
कटे वृक्ष में हरित लहलही कब पनपी इस वसुधा पर
एक एक कर बीत गये जीवन के पन्द्रह वर्ष मगर
महासमर की करुण कथा उपजाती मन में अब भी डर
समय समय पर भीमसेन ने जो कुछ कहा अशोभनीय
धृतराष्ट्र के मन दुःख भारी अंतः मन अति गोपनीय
बार बार इच्छा होती सत्कार पांडवों का अग्राह्य
करते थे उपवास कभी, जपतप जितना भी होता साध्य
गांधारी पति व्यथा देख कर स्वयं किया करती उपवास
राज्य भवन का जीवन बनता गया नित्य प्रति कारावास
धृतराष्ट्र अभिव्यक्त कर रहे, धर्मराज ! तेरा आतिथ्य
मिला मुझे सौभाग्य हमारा, अवसर परिव्राजक सानिध्य

दान किया भरपूर तुम्हारी छाया में शुचि पिंड दिया
कुल गुरु पूर्वज पूज्य जनों के हित समुचित सत्कार्य किया
राज्य तुम्हें मिलना था नीति के अनुसार विरोध किया
अज्ञानी मेरे पुत्रों ने दुर्दिन का आह्‌वान किया

प्रतिफल मिला उन्हें रण में सब एक एक कर विदा हुए
समर भूमि में काम आ गये, स्वर्ग धाम प्रस्थान किए
अवसर आया पुत्र मुझे भी गांधारी संग जंगल में
बाणप्रस्थ का धर्म निभाने उचित पहुँचना इस पन में

मूल्यबान वस्त्रों की शोभा देख चुका, इस तन पर आज
उचित मृगछाला, भस्मित अंगों पर चिथड़ा लिपटा राज
तेरी छाया में जीवन के बीत गये पन्द्रह शुभ वर्ष
कानन हित दे वत्स सहमति, मिले तुम्हें मंगलमय हर्ष

धर्मराज विह्‌वल हो बोले पता नहीं था सहते कष्ट
कर उपवास लोट धरती पर समय हुआ कुल भूषण नष्ट
विदित नहीं था मुझे, अन्य भाई भी जान न यह पाया
हुआ घोर अपराध देव ! कुल भूषण! उत्पीड़न पाया

पिता ! तुम्हें दे कौन सान्त्वना, अपराधी हूं होता भान
अभिलाषा, आकांक्षा के पीछे डूबा जीवन-दिनमान
अन्धकार अब दीख पड़े, निःस्तार चतुर्दिक परिलक्षित
राज्य कार्य में रुचि न मेरी, द्रव्य निरर्थक सब संचित

बने युयुत्सु तेरा सुत सम्राट राज्य दो उसके हाथ
करो अन्यथा स्वयं राज्य तुम, विपिन मुझे परिव्राजक साथ
नृपति ! तुम्हीं राजा मुझसे तुम माँग रहे अनुमति यह भूल
महानर्थ रण क्षेत्र हुआ, पीड़ित करता प्रतिपल यह शूल

दुर्योधन के प्रति हृदय में कोई है दुर्भाव नहीं
पुत्र समान सभी बन्धु स्नेहिल वात्सल्य अभाव नहीं
स्नेहमयी गांधारी कुन्ती दोनों मां का प्यार मिला
दुर्योधन के ही समान गांधारी का भी वात्सल्य मिला

वन गमन दीख पड़ता समुचित तो पिता साथ में चलने दो
आत्म समर्पित मुझे जान, फिर विलग न मुझको रहने दो
तुम्हें छोड़ कर पिता राज्य में क्या रक्खा क्या भोगूँगा
उत्पीड़ण जीवन का बाकी नहीं तड़प कर भोगूँगा

कुन्ती तनय अवस्था मेरी देख नहीं अब बाधा डाल
पुनः विदुर से कृपाचार्य ने कहा युधिष्ठिर को सम्भाल
निश्चित है संकल्प मुझे वन जाने से मत कोई रोक
बहुत बोलता रहा, मूक वाणी है, कुलपति डूबे शोक

गांधारी-ग्रीवा पर देकर हाथ दीर्घ उछ्वास ले रहा
एरावत सम बलशाली भी झुका जीर्ण तन कांप रहा
चूर्ण चूर्ण कर दिया कभी पत्थर का भीम नहीं डोला
हांफ रहा, बेजान हो रहा, नहीं चाह कर भी बोला

लगे छींटने जल शीतल थे धर्मराज मुखमंडल पर
कुल गुरु की आ रही चेतना स्वस्थ भाव था आनन पर
तू करते स्पर्श, प्रिय यह गात पुलक भर जाता है
अश्रु कणों के बीच, वृहद् करुणा नद फेनिल भाता है
व्यास देव आ गये, युधिष्ठिर धृतराष्ट्र का तन सम्भाल
ममता भरे हृदय से स्नेहिल भाव भर रहा बाहें डाल
सुनो युधिष्ठिर ! व्यास देव ने कहा, न इनको अब रोको
सौ पुत्रों को भेज स्वर्ग में, क्या रह लेगा, मत रोको
अब न अवस्था रही सहन कर सके वियोग सहा अब तक
भला बताओ ऐसे ही रह लेना सम्भव है कब तक
वन में मधु मंजरी सुलभ, सौरभ की सांस इसे लेना
वत्स तभी सम्भव है जग के उत्पीड़न को खो देना
नृपति समर में स्वर्ग सिधारे अथवा अन्त समय तन ओर
ममता-रहित चले, न उचित भर आए इन आँखों का कोर
धृतराष्ट्र ने राज्य किया, धनधान्य पूर्ण परिवार रहा
मिला विपुल वैभव मस्तक ऊँचा, न कभी अपमान सहा
व्यास देव का परम धर्म उपदेश युधिष्ठिर को स्वीकार
एवमस्तु कुल गुरु कुल भूषण धन्य युग पुरुष हे अवतार
पुनः व्यास निज कुटिया हित चल पड़े शान्त कितने सभ्रांत
युग के, अगनित युग के त्राता, हृदय भाव शाश्वत अति शांत

अंतिम निर्णय हुआ विजन वन धृतराष्ट्र को जाना है
निज निवास लौटे गांधारी सहित, विरत हो जाना है
धृतराष्ट्र ने गांधारी ने व्रत उपवास समाप्त किया
शुद्ध हृदय से धर्मराज आदि को आशीर्वाद किया

अंतिम था उपदेश भाव में डूबा धर्मराज भरपूर
पिता रहे संबल अबतक तुमसे रहना होगा अब दूर
धृतराष्ट्र का पराक्रमी भुजदंड खोजता आज सहारा
गांधारी कंधे पर धरता हाथ चला कुरुवंश-सितारा

अन्धा पति मिलने पर गांधारी आँखों में पट्टी बांध
आजीवन आँखों को मूंदे रही, हृदय में साहस साध
धरती जाती डोल कभी जिसके चलने से, आज चला
जो अवयव हिल रहा भाव अन्दर का रह रह कर डोला
गांधारी के कंधे पर कुरुराज हाथ दे चलता है
कुन्ती माँ के कंधे पर गांधारी का कर रहता है
तीनों का घरसे चलना रे करुण दृश्य बन जाता है
नगर निवासी स्वजन स्वतः दिल से कंपित हो जाता है
सुनो युधिष्ठिर कुन्ती माँ ने कहा क्रोध मत करो कभी
शुद्ध हृदय सहदेव सुकोमल कभी क्रूरता वरत नहीं
अन्य बन्धुओं पर भी स्वाभाविक समदर्शी हो रहना
कर्ण ध्यान में आ जाये, अति मृदुल भाव से सह लेना

स्नेहिल हृदय ध्यान धरना, था कर्ण वीरता का अवतार
पुत्र रत्न मेरा था रक्खा गुप्त यही मन पापाचार
पांचाली पर सतत प्रेममय भाव बरतना मत भूलो
वत्स पूर्ण परिवार तुम्हारी छाया इसको मत भूलो

अब तक धर्मराज ने समझा था कुन्ती माँ घर लौटेगी
कुरुक्षेत्र में भेजा जिसने वह आजीवन संग रहेगी
पुत्र नहीं यह शोभा देता घर में अब मेरा रहना
स्वर्गधाम वासी पति के संग उचित मुझे अब है रहना

अतः मार्ग गांधारी के जो लिया मार्ग मेरा अपना
करो शान्ति से जन-संचालन, उचित नहीं चिंतित रहना
सदा धर्म आचरण तुम्हारे जीवन का अटूट व्रत हो
मूक युधिष्ठिर सुनते जाते ध्यानावस्थित अविचल हो

तीन वर्ष वन में बीता, तीनों के संजय साथ रहे
धृतराष्ट्र स्नानादि उपरान्त झोपड़ी लौट रहे
अरे भाग्य यह भी होना था दावानल वन में आया
धृतराष्ट्र ने पूछा संजय देख, उधर से क्या आया

लपटें चली जोर की क्रम क्रम जंगल के झुरमुट जलने
लगे, मचा कोलाहल, गायें, हिरण, व्याघ्र तत्पर भगने
बचा स्वयं को संजय, नृपति कहते आग जला देगी
गांधारी, कुन्ती समेत ध्यानस्थ लपट कब आयेगी

पूर्व ओर मुँह तीन दिव्य भावों का भव्य प्रदर्शन था
योगासन आसीन, शान्त अति भाव मग्न अन्तरतम था
धरती का सौभाग्य अग्नि की ज्वाला में जलते तीनों
नैसर्गिक आभा मुख मंडल स्वर्गधाम पहुँचे तीनों
अब तक साथ रहा था संजय अपनी आँखों से यह देख
हिम गिरिके उतुंग शिखर पर पहुँचा, सहता अविरल क्लेष
शेष अंश जीवन का बीता परिव्राजक सन्यासी हो
धन्य नीति नायक संजय तू स्वर्ग धाम के वासी हो



यदु-कुल कलह

छत्तीस वर्ष राज्य केशव ने महासमर उपरान्त किया
नगर द्वारका सब प्रकार सम्पन्न, प्रशासन स्वच्छ दिया
था अनेक उपकुल बसुधा पर, वृष्णी, भोज सम यादव कुल का
गगन चुम्बी अट्टालिकाओं पर प्रेमालाप युवा पीढ़ी का
सुखद मनोरम सपनों का गार्हस्थ्य फूलता कृष्ण नगर
मोद, प्रमोद प्रसून परस्पर स्नेह, न होता किंचित डर
वैभव का वाहुल्य किन्तु नर को अपवित्र बना देता
रे अभाव तू धन्य, आचरण पर प्रतिबन्ध लगा देता

सन्यासी लख यदुकुल युवक मंडली ने उपहास किया
अट्टहास उपरान्त व्यंग बाणों से डंस कर ग्रसित किया
युवक षोड़सी कोमलांगी सा वस्त्र और आभूषण डाल
उदर वीच मिट्टी को बाँधे, बना नायिका सिन्दुर भाल
परिव्राजक इस गर्भवती के बेटा या वेटी जनमेगी
अनुकम्पा हो नाथ पुत्र की माँ बन हर्षित मन होगी
परिव्राजक के दिव्य चक्षु में कौन डाल सकता था धूल
पिंड जन्म लेगा कहता साधु हिलता कर में त्रिशूल
पिंड नाश कर देगा यादव कुल का ध्यान जरा देना
कहते आगे बढ़े वृद्ध परिव्राजक क्या लेना देना
सुमित्रा तेरा पेट फूलने लगा, अरे यह कल की बात
समय बीतने पर निकला था पिंड हृदय भारी व्याघात

नौजवान टोली ने चकनाचूर कर दिया, पिंड मिटा
जलधि तट पर फेंक दिया, अभिशाप सिन्धु से जा लिपटा।
ऋतुओं का परिवर्तन होता गया, हर्ष आप्लावित लोग
भूल गये ऋषि की वाणी आनन्द मोद आह्लादि भोग
वर्षा ऋतु में कुश का पौधा वारिधि तट पर झूम रहा
किसे पता था पिंड चूर्ण उदधि दुकूल को चूम रहा
पिड चूर्ण उत्पन्न जंगली पौधे की हरियाली देख
तीर्थ यात्रियों का मन भर आता शोभा संचालित देख
समुद्र तट स्नान भोज मधुपान नृत्य का आयोजन
मस्त हो गये यादव कुल के नौजवान अति हर्षित मन
मदिरा पान हृदय को जग में शान्त कभी रहने देता
मधुर भाषी मद होश हुआ वचन प्रदर्शन है करता।
कहा सात्यकि ने पापी ! सोते अबोध की हत्या कर
अरे कृतवर्मा तू ने दी स्वाभिमान की हत्या कर
सह न सका कटु वचन सात्यकि ! भूरिश्रवा तपस्वी सम
ध्यानावस्थित था, तू ने ली जान, नीच तू राक्षस सम
बातें बढ़ती गयी, हाथ भी उठने लगे, उठी तलवार
धराशायी कृतवर्मा तट पर गर्दन पर था तीखा वार
कर समाप्त उसको न सात्यकि शान्त हुआ, दंगल भारी
रे दुर्भाग्य हुआ ऐसा, सबकी बुद्धि ही गयी मारी

कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न बचाने लगा सात्यकि को तत्काल
कौन जानता था कुमार को बुला रहा है भीषण काल
पुत्र शोक भगवान कृष्ण के हृदय पटल पर जा बैठा
जान रहे थे विज्ञ पुरुष, ऋषि का अभिशाप तीक्ष्ण कैसा

कुश का डंठल बना शस्त्र, यादव कुल कलह झुलसता है
एक एक कर अगनित नर आक्रान्त, धरा तज देता है
महाप्रलय मच गया शोक में डूब गये बलराम सरिस
नारायण अवतार जलधि में अन्तर्धान तरंग सरिस

देख सबों का अन्त कृष्ण के मन आया संसार तजूँ
मानव लीलाको समाप्त कर निर्विकार अंगार भजूँ
जलधि तट पर घने वृक्ष सुन्दर लतिका की छाया में
निद्रित हुआ महान मनीषि, टिकता कैसे माया में

आखेटक की पड़ी दृष्टि, कैसा मन मोहक पक्षी-तन
चला वाण, केशव का चरण हुआ आक्रांत व्यवस्थित मन
धरा धाम पर नीति, धर्म, आचार, कला, सेवा अवतार
हुआ तुम्हारा स्वर्गारोहण तू करुणा निधि जग कर्त्तार

कुश का बाण चला था, यदुकुल भाग्य विधाता का अवसान
पराक्रमी, वैभव शाली, आजीवन परिज्वलित दिनमान
तेज पुँज ! तेरा अवतार धरा पर था अतुलित वरदान
हुआ अस्त जो सूर्य क्षितिज पर पुनरागमन न होता भान

समरसता

दु:खद मिला सम्वाद, कृष्ण का महाप्रयाण
यदु कुल का विध्वंस हृदय में चुभता बाण
बसुधा पर क्या बचा, लालसा लिप्सा दिल में क्या बाकी
पांडव लगे सोचने सन्यासी होना, गृह तन त्यागी
अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित का राज्याभिषेक होता
पांचाली संग पांचो पांडव का गृह त्याग, गमन होता
तीर्थ यात्री हो भ्रमण किया, मिल गया एक कुत्ता मग में
देश विदेश भ्रमण करते आ गये हिमगिरि गह्वर में
गगन-चुम्बी शृंगों पर चढ़ते जाना नित्य हुआ करता
एक एक कर कठिन तपस्या बीच संग तजता जाता
निधन हुआ पांचाली का, सहदेव नकुल जग छोड़ चले
अर्जुन त्याग चुके भौतिक संसार, भीम सुरधाम चले
धर्म रुप कुत्ता ही साथी धर्मराज का चलता संग
इन्द्र आगमन हुआ सुसज्जित पुष्पित रथ था उनके संग
धर्म पुत्र ! बन्धु बान्धव सब स्वर्ग निवास किया करते
रथ पर हो आरुढ़ स्वर्ग चलना मनुष्य तन के रहते
स्वान उछल पहले रथ पर आरुढ़ युधिष्ठिर बढ़ता है
नहीं स्वर्ग में कुत्ते को स्थान सुरपति कहता है
इन्द्र ! सम्भालो स्वर्ग अगर कुत्ते का जाना मान्य नहीं
मुझे न जाना स्वर्ग तुम्हारा क्रूर नियम है मान्य नहीं

पिता धर्म आस्वस्त हुए है पुत्र निभाता धर्म नियम
अन्तर्धान हुए कुत्ते को स्वर्ग युधिष्ठिर मन संयम
ऊँचे आसन पर दुर्योधन परियों का गायन नर्त्तन
नहीं बन्धुगण मेरे अपने बता देख हो प्रमुदित मन

सह न सके वह दृश्य हृदय भावों में डूबा जाता है
कैसा है यह न्याय दुष्ट ही ऊँचा आसन पाता है
पांचाली को भरी सभा में अपमानित करने वाला
स्वर्ग लोक में उँचे आसन पर अनर्थ करने वाला

आँखों को लूँ मूँद, देखना इसे मुझे स्वीकार नहीं
जहाँ बन्धुगण साथ न मेरे मिले वहाँ पर त्राण नहीं
नारद आए वत्स ! तुम्हारा भौतिक तन आया है साथ
इसीलिए साँसारिक माया ईर्ष्या आयी तेरे साथ

अरे स्वर्ग में घृणा नहीं, सद्भाव हृदय में होता है
रहो मैत्री परिपूर्ण सुयोधन संग उचित यह होता है
क्षात्र धर्म पालन करता संघर्ष समर में आया काम
तभी उच्च आसन का अधिकारी दुर्योधन अब निष्काम

पूज्य महर्षि ! धर्मराज ने कहा सुयोधन को यह स्वर्ग
बता बन्धुगण पांचाली हित तब कैसा होगा अपवर्ग
सब प्रकार निष्कलुष धर्म में जिनका मन था लगा हुआ
बता कहाँ वह लोक जहाँ उनके अनुकूल प्रबन्ध हुआ

करुँ बन्धुगण का अवलोकन, पांचाली का साथ मिले
द्रुपद विराट कर्ण अभिमन्यु जहाँ सुमन से मिले खिले
बन्धु बान्धवों का मुझको साहचर्य मिले बस स्वर्ग वही
जहाँ न यह उपलब्ध नरक मेरे हित घातक लोक वही
चलो स्वर्ग के द्वारपाल ने मार्ग बताया, साथ चला
अंधकार छा रहा मांस, शोणित, नर मुण्ड अपार मिला
आती थी दुर्गंध भयानक भरा हड्डियों का भण्डार
मार्ग कंटकाकीर्ण युधिष्ठिर लगे सोचने अपरम्पार
बता मित्र कितनी दूरी इस महानरक हो चलना है
द्वारपाल ने बतलाया, थक गये ? लौट क्या चलना है ?
दुविधा से भर गया, हृदय लग गये सोचने लौट चलूँ
अरे गूँजता स्वर जोरों का असमंजस क्या अभी करुँ
धर्मराज आगमन तुम्हारा नवजीवन ले आया है
मधु सौरभ सुरभित बयार स्नेहिल भावों से आया है
रुक जा दो क्षण महादेव ! हे महापुरुष संकट मोचन
लगे पूछने धर्मराज तू कौन ! बोलते भर लोचन
धर्मराज मैं कर्ण, और मैं भीम, पार्थ हूँ मैं भैया
कहा किसी ने पांचाली मैं हम सहदेव नकुल भैया
अरे स्वप्न क्या देख रहा मैं, महा अधर्मी को अपवर्ग
और नियम से रहने वालों का है यही मनोरम स्वर्ग ?

सुनो स्वर्ग के द्वारपाल दे यह संवाद प्रसासक को
मुझे चाहिये स्वर्ग नहीं, तज इन्हें नहीं जाना हमको
द्वारपाल संदेश सुनाता, इन्द्र ध्यान दे सुनता है
एक दिवस का अंश तीसवां तब समाप्त हो जाता है

यम समेत नृपेन्द्र युधिष्ठिर के स्थान चले आए
अन्धकार मिट गया प्रकाशित क्षेत्र दीप सब लहराए
मलय पवन मकरन्द स्नात नयनाभिराम सब वन उपवन
देख युधिष्ठिर को यम का भर गया हृदय पुलकित अति मन

नहीं नरक है पुत्र स्वर्ग यह धराधाम है देवों का
परम धाम नारद प्रमुदित, साहचर्य सुलभ है देवों का
भौतिक तन का तब विनाश हो गया युधिष्ठिर सूक्ष्म शरीर
पाकर लगे देखने जन परिजन आप्लावित सुरसरि नीर

तीन बार ली कठिन परीक्षा तू उतीर्ण हुए हे वत्स
कहा पिता ने नरक प्रशासक को कुछ क्षण अनिवार्य वीभत्स
छाया मात्र मिले तेरे बन्धु पाँचाली कर्ण नरक में
परम सत्य है सभी सभी स्वर्ग में रखता उनको कौन नरक में

कर्ण मिला बन्धुगण पांचाली दुर्योधन भाई सहित
परम एकता समरसता मन पुलक वासना द्वेष रहित
परम शान्ति उपलब्ध हुई रे परमानन्द मगन योगी
जीवन यात्रा सफल, समझ पाए इसको कैसे भोगी

समर नित्य चलता रहता, संघर्ष हृदय में होता है
महापुरुष उद्वेलित कब होता, कुण्ठित कब होता है ?
सम रसता का सुखद भाव जब छू जाता है दिल का कोर
मिटती जाती प्रतिपल कटुता, अभिप्रेरित मन प्रभु की ओर

समाप्त



रचनाकार एक परिचय

जन्म : १६ फरवरी, १९३० ।

शिक्षा : एम० ए०, बी० एल० ।

व्यवसाय : राजनीति एवं वकालत, १९५३ से...

अन्य रचनाएँ :—

१. चेतना (काव्य संकलन)

२. प्रवासी (खण्ड काव्य)

३. आधार (कहानी संकलन)

रचनाकार के ही शब्दों में :—

"बिल्कुल देहाती मध्यम परिवार से आने पर भी बचपन बड़ा ही लाड़-प्यार में बीता... ... छात्र जीवन मेरे लिए बड़ा ही संघर्ष का जीवन रहा... ... किन्तु आर्थिक कठिनाई मेरे सामने दीवार बनकर कभी नहीं आयी, कारण कि आरंभ से ही मैं कम खर्चालु रहा हूँ... ... महात्मा गाँधी और विवेकानन्द के जीवन मेरे लिए बड़े आकर्षण के विषय हैं, सादा जीवन उच्च विचार में मेरी गहरी आस्था है और कभी भी वह क्षण मेरे जीवन में नहीं आया—जब मैं चाहूँ कि मेरा जीवनस्तर बहुत ही ऊँचा हो... ... तड़क-भड़क की जिन्दगी मुझे तनिक भी पसन्द नहीं ... और मैं यह मानकर चलता हूँ कि वैवाहिक जीवन भी श्रेयस्कर है—लेकिन अपनी शादी की बात भी सोचूँ—कभी ऐसी आवश्यकता लगी ही नहीं कारण कि शुरू से ही मुझे अपना यही जीवन बड़ा अच्छा लगता रहा है... ..."

प्रकाशक :